ज्ञान पुष्प

वार्षिक पत्रिका 2012-13

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

(डा. भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा से सम्बद्ध)

(Accredited by NAAC with Grade A)

Scanned by CamScanner

माँ शारदे वन्दना

माँ शारदे कल्याण कर, जन–जन का माँ उत्थान कर।
तेरी करूँ माँ प्रार्थना, हो पूरी सबकी कामना।।
ऐसा हृद्‌य में भाव भर, माँ शारदे कल्याण कर।
तेरी पूजा ही तो मान हो, तेरी पूजा ही सम्मान हो।।
अच्छे बुरे का ज्ञान हो, निज कर्म का बस ध्यान हो।
ऐसा सभी को प्यार कर, माँ शारदे कल्याण कर।।
भारत रहे जगभाल पर, तेरा प्यार हो हर लाल पर।
शुभ पथ चलें एक ताल पर, सत्मार्ग दे हर कुचाल पर।।
जो फँस रहे माँ पार कर, माँ शारदे कल्याण कर।
क्यों मन मेरा कलुषित हुआ, मैंने अनछुआ काहे छुआ।।
कहीं खाई तो कहीं है कुआँ, सदमार्ग दे सँभाल कर।
माँ शारदे कल्याण कर, जन–जन का माँ उत्थान कर।।

Scanned by CamScanner

ज्ञान पुष्प

वार्षिक पत्रिका 2012–13

संरक्षक

डॉ. गणतन्त्र कुमार गुप्ता (प्राचार्य)

मुख्य सम्पादक

डॉ. हीरेश गोयल

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. वाई. के. गुप्ता

सह सम्पादक

प्रो. निशान्त अग्रवाल
डॉ. आर. के. पाराशर
प्रो. रेशु अरोरा
डॉ. रश्मि सक्सैना

विशेष सहयोगी सदस्य

डा. एस. एस. यादव
डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ
डॉ. जे. के. शर्मा
डॉ. ललित उपाध्याय
प्रो. रंजन सिंह

परामर्श दाता सदस्य

डा. रत्न प्रकाश
श्री मनोज यादव
डा. खजान सिंह
डा. बी. डी. उपाध्याय
डा. राजेश कुशवाहा

Scanned by CamScanner

"विश्व कल्याण"

ओउम् सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख भाग भवेत ।।
ओउम् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

"शान्ति-पाठ"

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिब्रह्मा शान्ति सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा
शान्तिरेधि ।। ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

भावार्थ : द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी सभी शान्ति एवं कल्याण देने वाले हों। सभी जल, औषधियाँ और वनस्पतियाँ हमें सुख-शान्ति प्रदान करें। सभी देवता, परब्रह्म परमेश्वर सभी सम्मिलित रूप में शान्ति देने वाले हों। आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक सभी प्रकार की शान्ति हो। वह शान्ति हममें सदैव वृद्धि को प्राप्त हो।

0571-2414980
094118-00928
Sanjay Jain
Proprietor
Shakti Scientific and Biolab
Wholesale Suppliers :
All types of Scientific Goods, Laboratory Equipments, Chemicals, Glassware, Sports, Stationery, Tie, Belt, Electronic, Surgical, Audio Visual Aids & General Orders Suppliers etc.
73, State Bank Colony, Premier Nagar, ALIGARH-202001 (U.P.)

Scanned by CamScanner

हमारे प्रेरणास्त्रोत

संस्थापक
स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र जी गोयल

समाज सेविका
स्व. श्रीमती स्वराज्य लता जी गोयल

श्रद्धासुमन

ज्ञान के जो इन्द्र थे, ज्ञानेन्द्र जिनका नाम था ।
समाज सेवा करना ही, उनका यह काम था ।।
स्वराज्यलता सरस्वती जी का जो प्रतीक बनीं।
आज उनके ज्ञान में देखो रामराज्य है ।
स्वर्ग से निहारें दोनों देखें अपने लाल को।
चाँद जैसे शीतल हैं चाँद जिनका नाम है ।।
रमेन जी रमण विहारी जैसे लगते हैं ।
दीपक प्रकाश देते ज्ञान परिवार को ।।

(डॉ० रोहिताश कुमार पाराशर)

Scanned by CamScanner

Prakash D.
I.P.S.

D.O. Letter No. CORH-CA-19/2013

Deputy Inspector General of Police,
Aligarh Range, Aligarh, U.P.
PIN - 202 001
Off. } Resi. } 0571 - 2400404
Fax : 0571 - 2400408
Date : 16.01.13

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि ज्ञान महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय, विज्ञान संकाय, कला संकाय, प्रबन्धन संकाय एवं शिक्षा संकाय (बी.एड. व बी.टी.सी.) के अन्तर्गत शिक्षा प्रदान की जाती है तथा महाविद्यालय के सभी संकायों के परीक्षाफल उत्तम रहे हैं।

आपके महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम के अवसर पर महाविद्यालय परिसर को भी देखने का अवसर मिला। परिसर को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। महाविद्यालय की वर्ष 2012-2013 की वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' के प्रकाशन के अवसर पर प्राध्यापक एवं छात्र-छात्रों को बधाई एवं शुभकामना देता हूँ। आशा करता हूँ कि भविष्य में महाविद्यालय शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी रहे।

भवदीय

(प्रकाश डी.)
I.P.S.

आलोक कुमार
आई.ए.एस.

कलेक्टर/जिला मजिस्ट्रेट
अलीगढ़
अ.शा. पत्र संख्या 1237 /एस.टी.
कार्यालय: 2400202, फैक्स: 2407555
आवास : 2400798, 2400799

दिनांक - 29-01-2013

शुभकामना संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि "ज्ञान महाविद्यालय" स्ववित्त पोषित शैक्षिक संस्थान होते हुए भी अलीगढ़ जनपद में शिक्षा के क्षेत्र में विशेष स्थान रखता है, इसकी विशिष्टता सभी संकायों के उत्तम परीक्षाफल व राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रदत्त "ए ग्रेड" से दर्शित है।

वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प" 2012-13 के प्रकाशन पर मुझे प्रसन्नता है । इस महाविद्यालय में विद्यार्थी अपने भविष्य निर्माण के साथ-साथ अच्छे रोजगार के अवसर भी पाते हैं। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकगण सभी छात्रों को उच्चकोटि की गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर उनके अन्दर देश प्रेम की भावना उत्पन्न करते रहेंगे।

मैं इस परिप्रेक्ष्य में महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक, शिक्षार्थियों व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे सभी शिक्षा के क्षेत्र में अपनी पूर्ण सहभागिता देकर महाविद्यालय में नये सोपान स्थापित करने में कामयाबी प्राप्त करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

(आलोक कुमार)

Scanned by CamScanner

PIYUSH MORDIA
I.P.S.
S.S.P. Aligarh

Off. : 0571-2401150
Res. : 0571-2700110
Fax : 0571-2700111
Mob. : 9454400247
e-mail: piyushmordia@gmail.com

दिनांक जनवरी 17, 2013

शुभकामना संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि "ज्ञान महाविद्यालय" के विभिन्न संकायों में युवाओं को शिक्षा प्रदान कर उन्हें राष्ट्र सेवा के लिये तैयार किया जा रहा है। प्राचार्य एवं प्रवक्ताओं द्वारा अथक परिश्रम एवं निष्ठा से दायित्वों का निर्वहन करने के फलस्वरूप ही सभी संकायों के परीक्षाफल भी उच्चकोटि के रहे हैं।

ज्ञान महाविद्यालय द्वारा वर्ष 2012-13 की वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प" के प्रकाशन पर भी मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। छात्र देश का भविष्य हैं और अच्छी शिक्षा से जहाँ युवाओं को अच्छे रोजगार के अवसर मिलेंगे, वहीं देश का भविष्य भी स्वर्णिम होगा। आशा है कि महाविद्यालय के प्रवक्तागण सभी छात्रों को उच्चकोटि की शिक्षा प्रदान कर उन्हें राष्ट्र सेवा के लिए तैयार करेंगे। मैं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन पर महाविद्यालय के प्राचार्य, प्रवक्तागण एवं छात्र-छात्राओं को बधाई तथा "ज्ञान पुष्प" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभ-कामनायें प्रेषित करता हूँ। आशा है कि ज्ञान महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में अग्रसर रहकर नया कीर्तिमान स्थापित करने में सफलता प्रात करेगा।

सादर सद्भाव।

भवदीय,

17/1/13

पीयूष मोर्डिया
आई.पी.एस.
एस.एस.पी. अलीगढ़

Scanned by CamScanner

Phones : 23794385
23019080
23012692
23019606
Extn. : 430
Website : www.aicc.org.in

ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE

24, Akbar Road, New Delhi-110011

Vivek Bansal, ***M.L.C.***
Secretary

"AYODHYA KUTI"
Marris Road, Aligarh - 202 001
Ph. : 0571-2403302, 2403476, 2400777

दिनांक 12-12-2012

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' सत्र 2012-13 का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है कि इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से विद्यार्थियों को मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धक रचनाएं पढ़ने को मिलेंगी। मेरी कामना है कि यह पत्रिका निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहे।

शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

V. Bansal

विवेक बंसल

Scanned by CamScanner

आशा देवी
अध्यक्षा, प्रबन्ध समिति

अध्यक्षा प्रणीत

यह जानकर मुझे अत्यधिक आनन्द की अनुभूति हो रही है कि ज्ञान महाविद्यालय की 'ज्ञान पुष्प' पत्रिका का प्रकाशन उसी तरह हो रहा है जैसा कि विगत वर्ष के संस्करण में हुआ था। तब से मेरा रोम-रोम रोमांचित है। यह पत्रिका सन् 2012-13 के पूरे वर्ष की प्रगति का एक पावन सन्देश प्रसारित करेगी, जिससे ज्ञान महाविद्यालय की आम्रमंजरी की सुरभि युक्त सुगन्ध उसी प्रकार प्रवाहित होगी जिस प्रकार मलयागिरि से आने वाली पवन सम्पूर्ण वसुन्धरा को आल्हादित कर देती है। इस पत्रिका में रचित और लिखित काव्य गीत, व्यंग्य लेख, एकांकी, झलकी, कहानी तथा गद्य-पद्य सभी की विविध विधाएँ तथा आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक लेख इत्यादि पाठकों को विविध प्रकार का बोध प्रदान करेंगे। साथ ही महाविद्यालय में अन्य जैसे सांस्कृतिक उत्सव, होली, दीवाली मेला तथा भारत के अनेकता में एकता लिए पर्व, त्यौहार इत्यादि का दर्शन इस पत्रिका में दर्शनीय होगा, ऐसा मेरा विगत अनुभव दर्शाता है।

मैं यथार्थतः कह सकती हूँ कि ज्ञान महाविद्यालय एक 'पुष्प वाटिका' है और इस सुन्दर पुष्प वाटिका के माली अर्थात् रखवाले हैं कर्मठ और ज्ञानवान शिक्षक समाज और इस पुष्प वाटिका में खिलते मुस्कुराते कुसुम हैं इसके विद्यार्थी, जिनसे सारी धरा पर फैलेगी समृद्धि और खुशहाली। इसी सन्देश के साथ मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए प्रकाशक महोदय सहित अपने महाविद्यालय परिवार को ढेर सारी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करती हूँ।

सधन्यवाद!

आशा देवी
अध्यक्षा

Scanned by CamScanner

दीपक गोयल
सचिव प्रबन्ध समिति

शुभकामना संदेश

जब मुझे यह ज्ञात हुआ कि विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़ की वार्षिक पत्रिका ''ज्ञान पुष्प'' 2012-13 का प्रकाशन होने जा रहा है, तो मेरा मन पुलकित हो उठा। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है। पत्रिका भी महाविद्यालय की साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक गतिविधियों का परिचय देती है। इसमें सुधी लेखकों जिसमें कि अध्यापक और छात्र दोनों आते हैं, का बौद्धिक और चारित्रिक मूल्यांकन दृष्टिगोचर होता है। पत्रिका ज्ञान का रंगमंच होती है, जिसमें अध्यापक और छात्र अभिनेता की भूमिका में मंचन करते हैं, और उनके संस्कार आलम्बन और विचार उद्दीपन का कार्य करते हैं, जिसकी सुगन्ध से ज्ञान का पुष्प प्रस्फुटित होता है। परिणामतः महाविद्यालय की इसी खुशबू से प्रभावित होकर मई, 2012 में 'नैक दल' (NAAC TEAM) ने महाविद्यालय निरीक्षण किया और इसकी अत्याधुनिक वैज्ञानिक, कम्प्यूटराइज्ड प्रयोगशालाओं तथा अन्य विविध प्रकार की प्रगतिशील गतिविधियों के आधार पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के स्ववित्त पोषित संस्थानों को ही नहीं, बल्कि अनेक वित्त पोषित महाविद्यालयों को पीछे छोड़कर शिक्षा संकाय में 3.16 अंक प्राप्त कर नम्बर एक ग्रेड 'ए' प्राप्त किया। इस कार्य के लिए मैं महाविद्यालय के चारों स्तम्भों - प्राचार्य, शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी इन सबको बधाई देता हूँ।

वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही निकट भविष्य में यह आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास करता हूँ, कि महाविद्यालय के सभी संकाय 'ए' ग्रेड से ही विभूषित होंगे।

दीपक गोयल
सचिव

Scanned by CamScanner

Dr. Gantantra K. Gupta
Net, Ph.D. (Commerce)
Principal

From the Principal's Pen

It gives me a great pleasure to relate with "Gyan Pushp'" the annual magazine for session 2012-13. College magzine is definitely a powerful medium to understand the thought process of youths & students who have the time and again brought vital changed in the system. Education has always been molding their thought oval action travels night purposes, there are a few things that all of us, who are in the field of education, need to understand for overall growth.

As we all are aware, information is just a click away. What then is the relevance of education, I feel, it is to help us understand the available information, to classify it into areas of constructive use and to make sure of that the use is optimized through available technology. It is education only that empowers and also channelize these powers for the benefit of world and humanity at large. Here, School and Colleges have important role to play. Only right balance between uptitude and information saves the heights purposes of development.

The college is now "A' accredited college by NAAC. This could happen only due to extra ordinary efforts of our devoted the heads & faculty members of all departments as well as the ministerial staff of the college who worked day night to achieve the goal.

I wish all success to "Gyan Pushp." and I take this opportunity to extend my best wishes and congratulations to the editorial boards and the whole "Gyan Parivar."

Thanking You.

Dr. Gantantra K. Gupta
Principal

Scanned by CamScanner

डॉ. हीरेश गोयल
मुख्य सम्पादक

सम्पादकीय

वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' 2012-13 का यह अंक, जो कि आपकी अभिव्यक्तियों के विभिन्न रंग-रूपों से गुंथे हुए सुरभित व सुगन्धित पुष्पों का यह गुच्छ आपके कर कमलों में सौंपते हुए मुझे अपार सन्तोष व आनन्द की अनुभूति हो रही है। वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' महाविद्यालय के अतीत, वर्तमान व भविष्य का गतिशील दर्पण है, जो इसके सजीव व्यक्तित्व की छवि को प्रतिबिम्बित कर, शैक्षिक गतिविधियों एवं अन्य क्रियाकलापों का ज्ञान कराती है। 'ज्ञान पुष्प' का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं को निखारना व उनकी साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिरुचियों को अभिप्रेरित करते हुये सर्वांगीण विकास की ओर ले जाना है। न कि अनावश्यक छिद्रान्वेषण कर नवोदित प्रतिभाओं को हतोत्साहित करना।

पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' के लेख, रचनायें व अभिव्यक्तियाँ विभिन्न रचनाकारों एवं छात्रों की भावनाओं का प्रतीक हैं। 'ज्ञान पुष्प' प्रकाशन के इस कठिन साधना रूपी मंगल कलश को जिन सुधी रचनाकारों व उदीयमान प्रतिभाओं ने अपने सृजन की एक-एक बूँद से भरा है, वे साधुवाद एवं भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

इन सभी ज्ञानवर्धक रचनाओं के पठन-पाठन से 'ज्ञान पिपासुओं' के मन को आनन्द की अनुभूति होगी, ऐसी मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि सुधी पाठक अच्छाइयों को स्वीकार कर त्रुटियों को नजर अन्दाज करेंगे।

'ज्ञान पुष्प' पत्रिका के चतुर्थ संस्करण को मूर्तरूप प्रदान करने का यह कठिन कार्य महाविद्यालय के कुशल प्रबन्धतन्त्र की अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी जी, सचिव श्री दीपक गोयल जी, संरक्षक डॉ. पी. के. गुप्ता जी (प्राचार्य) व डॉ. वाई. के. गुप्ता जी (उप प्राचार्य) की प्रेरणा, अनुभव व उचित मार्ग दर्शन से ही सम्भव हो सका।

सम्पादक मंडल के सभी सदस्य, जिनकी पूर्ण निष्ठा, मेहनत व अथक प्रयासों से 'ज्ञान पुष्प पत्रिका' पल्लवित हो सकी, मैं उन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ इसके अतिरिक्त पत्रिका से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय प्रदान कर इस महान कार्य में योगदान दिया। जिन उत्साही रचनाकारों की रचनाओं को इस पत्रिका में स्थान नहीं मिल सका है, वे निराश न हो सतत रूप से प्रयत्नशील बने रहे, एक न एक दिन अवश्य ही सफल होंगे।

इस पत्रिका के माध्यम से अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों को यह संदेश देना चाहूँगा कि यद्यपि उन्होंने गत वर्षों में शैक्षिक जगत में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये हैं, तथापि आज के प्रतियोगिता पूर्ण समाज में उत्तरोत्तर और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है, जिससे बुलन्दियों के उच्चतम शिखर तक पहुँचा जा सके। क्योंकि-

"जो ये कहते हैं मुझे, मुझ पर यकीन है।
उनके लिये जगत में, सब कुछ मुमकिन है"।

शुभकामनाओं सहित आपकी सकारात्मक प्रतिक्रिया एवं उपयोगी सुझावों की प्रतीक्षा में।

डॉ. हीरेश गोयल

Scanned by CamScanner

स्वर्णिम उपलब्धि

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ज्ञान महाविद्यालय को 'ए' ग्रेड का प्रमाण पत्र देते हुए

अलीगढ़ मण्डल तथा डा. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद से 'ए' ग्रेड का गौरव प्राप्त करने में ज्ञान महाविद्यालय का शिक्षक शिक्षा संकाय सर्वोच्च अंक 3.16 सी.जी.पी.ए. प्राप्त करने वाला प्रथम महाविद्यालय है।

इसका प्रमाण पत्र नैक के निदेशक, डॉ.एच.ए. रंगनाथन एवं यू. जी. सी. के चेयरमैन, डॉ. वेदप्रकाश द्वारा संयुक्त रूप से अपने बैंगलोर स्थित कार्यालय में उप प्राचार्य, डॉ. वाई. के. गुप्ता को 16 जुलाई, 2012 को प्रदान किया।

Scanned by CamScanner

शिक्षणेत्तर एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी प्राचार्य के साथ

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय के सभी संकायों के प्राध्यापक प्राचार्य के साथ

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
मेण्डलीफ आवर्त सारणी में विश्व..	01	प्रेरणात्मक	37
समय का पालन तथा व्यवस्थित दिनचर्या	04	व्यक्तित्व का विकास	38
शिक्षक दिवस	05	न पढ़ने के बहाने	38
आर्थिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संविधान	06	भारत एवं विश्व का भौगोलिक वर्णन	39
हाथरस का सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व	07	पहेलियाँ	39
नारी अबला नहीं, परम शक्तिशाली है	09	सच्ची पूजा	40
संपूर्ण क्षमता को सामने लाता है – योग विज्ञान	10	अनुशासन	40
फिर दस्तक दे रहा है "गाँधीवाद"	11	अच्छा लगता है	41
मानव जीवन में शिक्षा का महत्व	12	मन की भाषा	41
भारत में माध्यमिक शिक्षा	13	बेटियाँ	41
प्रकृति में व्याप्त प्रवृत्ति का भ्रष्टाचार	14	ज्ञान कॉलेज में	42
भारतीय मूल्य	15	जीवन	42
तीन चीजें	15	दोस्ती क्या है ?	42
दिन रात नहीं सुबह है	16	रोचक सत्य	43
अपना मूल्यांकन करें	16	क्या आप जानते हैं ?	43
आँसू	16	वर का इश्तिहार	44
नारी का सम्मान	17	दो रोटियाँ	45
इन्हें खरीदना नामुमकिन	17	युवाओं के प्रेरणा स्रोत– स्वामी विवेकानन्द	46
प्राणों का मूल्य	18	क्या आप जानते हैं?	46
भारत की दुर्दशा	18	दोहरा मापदण्ड	47
ग्लोबल कूलिंग व जलवायु परिवर्तन......	19	सहनशीलता	48
मनुष्य और अनुशासन	21	रविवार की छुट्टी	48
सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार.......	22	क्लोरीन की आत्मकथा	49
राष्ट्रभावना	23	खुल जा सिम-सिम	49
वैदिक साहित्य में मनोविज्ञान	27	घोटाला (भ्रष्टाचार)	49
ग्राम्य विकास के सम्बन्ध में सड़कों......	28	शिक्षा का अधिकार 'सब पढ़ें सब बढ़ें'	50
भारतीय समाज में नारी की स्थिति	32	माँ	51
अलीगढ़ के कुछ क्षेत्रों के नाम कैसे पड़े?	34	मेरा महाविद्यालय	52
गलत फहमी	34	हिन्दी की दुर्दशा	52
शोध पत्र	35	पैसा	52
एक वादा हिन्दुस्तान से	36	समय का महत्व	53
छात्रों के दिल से	36	जगमगाना है तो.....	53
अकेले बढ़ो तुम	37	रूप दिये से तुम ले लो,	53
हमारा प्रिय 'ज्ञान महाविद्यालय'	37	आगे की सोच	53

Scanned by CamScanner

शिक्षा और साक्षरता 54
गुरू प्रेरणा 54
गुरू ज्ञान देते हैं 54
मेरे देश की धरती 55
जब सत्य हमारे दिल में है 55
माँ 55
राष्ट्रभाषा हिन्दी 56
गुरू वंदना 56
मौन की भाषा 57
आधुनिक संस्कृति 'भौतिकवाद' 57
देशभक्त चोर 58
परीक्षा 58
जीवन की अवधारणा 58
सपना 59
विज्ञान के दोहे 59
बेटियाँ 59
'माँ' की अज़मत 60
अभ्यास की महिमा 60
लक्ष्य 61
जीवन या जिन्दगी 61
न्यूटन है, भौतिकी का जन्मदाता 62
आज का रहस्य 62
सच्चा हीरा 63
भ्रष्टाचारी नेता 63
सैनिक का सन्देश 64
चुटकुला 64
कलयुग का विद्यार्थी 64
पानी करे पुकार 65
इनका करो उपयोग 65
नेता बनाम डाक टिकट 65
चाय की चुस्की 65
कलयुगी दोहे 66
दहेज प्रथा 66
तीन चीजें 66
अपना शहर अलीगढ़ 67
शानदार उपहार गुटखा खाने वालों के लिए 68
ज्ञान की कीमत 69
नई बीवी और डॉक्टर 69
गुरू का आशीर्वाद 69
असाइनमेन्ट की मार 69
Do you know ? 31
Lesson Planning 70
Social Networks in Education System 71
Passion of life 72
Brainstorming 73
Role of ICT in Education Sector 75
True Friend's 76
Carrier and confidence 76
Group Discussion 77
Some Important Thoughts 78
All in Stars Unlucky Number-7 78
Luck 78
Swami Vivekanand 79
Do You Know ? 80
How much water is needed to be Drunk 81
ENGLISH IN INDIA- A HISTORICAL PERSPECTIVE 82
Winners v/s Loosers 82
What is life ? 83
50 Best Success Thoughts 84
Why a Student fails ? 86
Tartary - Walter de la More 86
God 86
Ragging - An Academic Evil 87
God Made Teacher 87
A Story of Soaps 88
Value of Flowers 88
What Mahatma Gandhi means to an Indian 88
What is life ? 89
Value of time 89
महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति 90
महाविद्यालय में विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्ट :
▼ वाणिज्य संकाय 92
▼ विज्ञान संकाय 93
▼ कला संकाय 94
▼ प्रबन्धन संकाय 95
▼ B.C.A. Dept. 95
▼ शिक्षक-शिक्षा संकाय 95
▼ शिक्षा संकाय (बी.टी.सी.) 97
▼ पुस्तकालय 97
▼ खेल विभाग 98
▼ राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ 99
▼ आगन्तुकों की कलम से 102
▼ खबरों में महाविद्यालय 105

Scanned by CamScanner

"मेण्डलीफ आवर्त सारणी में विश्व के वैज्ञानिकों व देशों की भूमिका"

डॉ. एस.एस यादव
प्रभारी, विज्ञान संकाय

आज तक मेण्डलीफ की आवर्त सारणी में 118 (एक सौ अट्ठारह) तत्वों की खोज लगभग पूरी हो चुकी है। विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों ने प्रकृति में उनकी खोज या उनके कृत्रिम संश्लेषण में बहुत समय लगाया और काफी मेहनत की। सारणी में प्राचीन काल के तत्वों तथा मध्य युग में खोजे गये तत्वों के अलावा बाकी सारे तत्वों की खोज की तिथियाँ तथा खोजकर्त्ताओं के नाम स्पष्टतः ज्ञात हैं। स्थायी प्राकृतिक तत्वों की खोजों में कुल 50 व्यक्तियों ने भाग लिया। नौ लोगों को प्राकृतिक विघटन नाभिक तत्वों की खोजों का श्रेय मिला। रेडियो एक्टिव तत्वों की खोज में लगभग 25 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। संश्लेषित तत्वों की खोजों में 30 से ज्यादा वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कुछ वैज्ञानिक रिकॉर्ड तोड़ने वाले कहे जा सकते हैं। जैसे– स्वीडन के रसायनज्ञ शीले ने छः तत्वों की खोज की। यह तत्व– F (फ्लोरीन), क्लोरीन (Cl), मैंग्नीज (Mn), मोलिब्डेनम (Mo), बेरियम (Ba) तथा टंगस्टन (W) हैं। शीले व प्रीस्टले ने मिलकर सातवाँ तत्व ऑक्सीजन खोजा।

नये तत्वों की खोज के लिए रजत पदक रैमजे को दिया जा सकता है जिन्होंने आर्गन (Ar), हीलियम (He), क्रिप्टान (Kr), निआन (Ne) तथा Xe (जीनॉन) की खोज की। रैमजे को निम्न वैज्ञानिकों क्रुक्स, रेले, ट्रेवर्स ने भी सहायोग किया। बर्जेलियस ने Ce (सीरियम), Se (सेलेनियम), Si (सिलिकॉन) व Th (थोरियम) की खोज की। डेवी ने K (पोटेशियम), Ca (कैल्सियम), Na (सोडियम) व Mg (मैग्नीशियम) की खोज की। डिबुआवोडरॉन ने Tl (थैलियम), Sm (समेरियम), Gd (गडोनिलियम) व Dy (डिस्प्रोसियम) की खोज की। क्लाप्रोत ने Ti (टाइटेनियम), Zr (जरकोनियम) व U (यूरेनियम) की खोज की। मोसांदर ने La (लैन्थेनम), Tb (टर्बियम) व Er (इरबियम) की खोज की। वोक्लेन ने Be (बेरीलियम) व Cr (क्रोमियम) की खोज की। वोल्लारस्टोन ने Ra (रेडियम) व Pd (पैलेडियम) की खोज की। बुन्सन और किरचौफ ने Rb (रुबीडियम) व Cs (सीजियम) की संयुक्त रूप से खोज की। वल्सबाख ने Pr (प्रेसोडिमियम) व Nd (निओडिमियम) की खोज की। क्लेव ने Ho (होलमियम) व Tm (थूलियम) की खोज की। टैनान्ट ने Os (ऑसमियम) व Ir (इरीडियम) की खोज की। उपरोक्त वैज्ञानिक वह थे, जिन्होंने एक से अधिक रासायनिक तत्व खोजे थे।

जहाँ तक रेडियोएक्टिव प्राकृतिक तत्वों की बात है तो प्रथम स्थान मारिया और पियरे क्यूरी को जाता है जिन्होंने यूरेनियम खनिजों से दो तत्व– Po (पोलोनियम) और Ra (रेडियम) प्राप्त किये। इसी प्रकार सीबर्ग ने आठ ट्रांसयूरेनियम तत्वों की खोज में भाग लिया। यह तत्व (Pu से Mv) तक के हैं। इसी तरह फ्लेरोव तथा उनके साथियों ने परमाणु क्रमांक 102 से 107 तक के तत्वों को संश्लेषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

यदि हम देशों के हिसाब से तत्वों की खोज के बारे में देखें तो स्वीडन के वैज्ञानिकों ने सबसे ज्यादा 23 तत्वों की खोज की है यह तत्व Co, Ni, F, Cl, Mn, Ba, Mo, W, Y, Ta, Ce, Li, Se, Si, Th V, La, Tb, Ge, Er, Sc, Ho और Tm है इन तत्वों में कई दुर्लभ मृदा तत्व शामिल हैं। 18 वीं शताब्दी में स्वीडन में धात्विकी बहुत विकसित थी। वैज्ञानिकों को इन तत्वों की खोज के दौरान नये खनिज मिले जो अज्ञात तत्वों के स्रोत सिद्ध हुए। इस प्रकार स्वीडन वह देश बन गया जिसके वैज्ञानिकों ने सबसे ज्यादा तत्व खोजे।

दूसरा नम्बर इंग्लैण्ड का था। वहाँ के वैज्ञानिकों ने कुल मिलाकर 20 तत्वों की खोज की। जोकि– H, N, O, Sr, Nb, Pd, Rh, Os, Ir, Na, K, Mg, Ca, Tl, Ar, He, Ne, Kr, Xe, तथा Rn थे। अंग्रेज वैज्ञानिकों का काम काफी कठिन था क्योंकि वायु की खोज उनसे सम्बंधित थी। 100 साल बाद अनुसंधान की अनुकूल परिस्थितियों के कारण अक्रिय गैसों की खोज इंग्लैण्ड में की गयी।

19वीं शताब्दी में विद्युत रसायन में इंग्लैण्ड ने काफी उन्नति की तथा डेवी ने स्वतंत्र अवस्था में चार धातुएं– Na, K, Mg व Ca प्राप्त की। इतना ही नहीं इंग्लैण्ड ने चार प्लेटिनम धातुएं भी खोजीं। तत्वों की खोज में तीसरा स्थान फ्रांस का है, जहाँ के वैज्ञानिकों ने 15 तत्व खोजे। यह तत्व– Cr, Be, B, I, Br, Ga, Sm, Gd, Dy, Ra, Po, Ac, Eu, Lu, Fr हैं। स्पेक्ट्रम विज्ञान के विशेषज्ञ बुआवोडरॉन ने स्पेक्ट्रम विश्लेषण से चार तत्व– Ga, Sm, Gd, Dy अकेले ही खोजे।

Scanned by CamScanner

तत्वों की खोज में जर्मनी का स्थान चौथा है, जहाँ के वैज्ञानिकों ने 10 तत्वों की खोज की यह तत्व– Zr, U, Ti, Cd, Cs, Rb, In, Ge, Pa, Re थे। तीन तत्व– Te, Pr तथा Nd की खोज आस्ट्रिया के वैज्ञानिकों द्वारा की गयी। दो तत्व Al, व Hf की खोज डेनमार्क के वैज्ञानिकों द्वारा की गयी। परन्तु सबसे रोचक बात यह है कि इस सारणी का जनक मेण्डलीफ को कहा जाता है जोकि रूस के निवासी थे तथा रूस के वैज्ञानिकों द्वारा केवल Hg (मरकरी) की खोज की गयी। रूसी वैज्ञानिक कई कारणों से नये तत्वों की खोज नहीं कर सके परंतु जितने तत्व अन्य देशों के वैज्ञानिकों द्वारा खोजे गये, उनके भौतिक तथा रासायनिक गुणों का अध्ययन रूसी वैज्ञानिकों ने करके इस कार्य को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, क्योंकि यह कार्य खोज से ज्यादा कठिन था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि प्रकृति में मिले तत्वों में से अधिकतर चार देशों के वैज्ञानिकों ने ढूंढे। यह देश इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस व स्वीडन थे। उस समय इन देशों में रसायन के क्षेत्र में अनुसंधान बहुत विकसित था।

संश्लेषण द्वारा प्राप्त तत्व परमाणु क्रमांक 102 से 107 तक थे। जोकि No, Lr, Rf, Db, Sg, Bh थे। यह तत्व सबसे पहले सोवियत संघ (USA) द्वारा संश्लेषित किये गये। जिनका संश्लेषण भी बहुत मुश्किल सिद्ध हुआ। तत्वों की खोज बहुत पहले हो चुकी थी, जिनके बारे में प्रमाण स्पष्ट रूप से नहीं है। उन्हें प्राचीन काल में खोजे गये तत्व कह सकते हैं। इन तत्वों का काल 1750 ई० तक माना जाता हैं। यह तत्व लगभग 16 थे। जैसे– C, P, S, Fe, Co, Cu, Zn, As, Ag, Sn, Sb, Pt, Au, Hg, Pb व Bi को माना जाता है। अन्य तत्व सन 1751 से लेकर 1976 तक खोजे गये हैं।

जहाँ तक बीसवीं शताब्दी की बात करें तो केवल 5 तत्व खोजे गये हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि तब विज्ञान की क्षमता सीमित थी या कमजोर हो गयी थी। यह तथ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि प्रकृति में तत्वों का भंडार खाली हो चुका था।

हैलोजन तत्वों में फ्लोरीन की खोज भी रोमांच भरी थी, क्योंकि शीले को खुद पता नहीं था कि जो वह खोज रहे हैं, वह क्या है। सन् 1771 को F की खोज का वर्ष माना जाता है परन्तु यह सन् ठीक नहीं हैं। क्योंकि शीले ने जो यौगिक अनजाने में प्राप्त किया वह HF था, परंतु वह ऑक्सीजन खोज रहे थे। इस तरह शीले को Cl तत्व भी म्यूरिक अम्ल में मिला।

इस बात में कोई शक नहीं कि किसी भी तत्व के गुणों की पर्याप्त जानकारी तभी होगी, जब उसे स्वतंत्र अवस्था में प्राप्त कर लिया जाय। वैज्ञानिक तभी उसके रासायनिक गुण जैसे, विभिन्न अभिकर्मकों के साथ क्रिया और अधिकांश भौतिक गुणों को जान सकते हैं। अतः तत्व का प्राप्त होना खोज का निम्न चरण माना जाता है। खोजों की विधियों के आधार पर तत्वों के दो ग्रुप माने जा सकते हैं। प्रथम प्रकृति में ढूंढे गये तत्व तथा द्वितीय संश्लेषित तत्व। प्रथम ग्रुप में से वे तत्व निकल जाते हैं जिनको प्राचीन काल के तथा मध्य युग के तत्व कहते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि रासायनिक तत्वों के इतिहास का समापन अभी दूर हैं। इसे नये अध्ययन व पुनः मूल्यांकन की जरूरत हैं। विश्व साहित्य में अभी तक एक भी मौलिक कार्य नहीं छपा है। जिसमें तत्वों की खोजों के इतिहास का सविस्तार तथा व्यापक विवरण दिया गया हो।

तत्वों की खोज के इतिहास में झूठी खोजों का भी साथ रहा जैसे:– आस्ट्रियम, बर्जेलियम, कैरोलिनियम, कौलंबियम, डमेरियम, डिमोनियम, डोनेरियम, यूरोसमेरियम, आयोनियम, जूनोनियम, कास्मियम, मेस्तरियम, विक्टोरियम, ल्यूसियम फिलीपियम, रोजरियम, रूसियम, बेल्सियम, मजरियम, निपोनियम, ओजोनियम, वर्जीनियम, कैनेडियम, नीजरियम, इलमेनियम, नोरियम, पेलोपियम, ट्रीनियम, एफिरॉन आदि बहुत सारे नाम और भी हैं, जो झूठे साबित हुये। क्योंकि उस समय तत्वों की खोजों का काम चल रहा था, तो बहुत से वैज्ञानिक सस्ती लोकप्रियता बटोरना चाहते थे। परन्तु विज्ञान सबूतों व साक्ष्य के आधार पर चलता हैं। अतः यह सभी फेल हो गये या कहें कि केवल अखबारों की हेडलाइन बनकर रह गये। अर्थात् यह अमान्य तत्व कहलाये।

कुछ तत्व ऐसे भी हैं जो किसी भी वैज्ञानिक द्वारा नहीं खोजे गये। यह एक प्रकार से परिकल्पित तत्व है, जिनका अस्तित्व किसी प्रक्रम की व्याख्या देने के लिये किया गया जैसे– कोरोनियम, नेबूलियम, ऐस्टेरियम, आर्कोनियम तथा प्रोटोफ्लोरिन हैं जोकि विभिन्न अंतरिक्ष पिंडों में उपस्थित हो सकते हैं। परन्तु तत्वों के इतिहास में इनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

Scanned by CamScanner

रासायनिक तत्वों की खोज से सम्बन्धित सारणी

तत्वों के नाम	तिथि	खोजकर्त्ता का नाम
हाईड्रोजन	1766	केवेन्डिस
हीलियम	1868	लोक्येर व झान्सेन
लीथियम	1817	अर्फवेडसन
बेरीलियम	1798	वोक्लेन
बोरान	1808	गेलुसाक, टेनर
नाइट्रोजन	1772	रदरफाई
आक्सीजन	1774	प्रीस्टले, शीले
फ्लोरीन	1771	शीले
निआन	1898	रैमजे, ट्रेवर्स
सोडियम	1807	डेवी
मैग्नीशियम	1808	डेवी
एल्यूमिनियम	1825	एस्टर्ड
सिलिकॉन	1823	बर्जेलियस
फॉस्फोरस	1669	ब्रांड
क्लोरीन	1774	शीले
आर्गन	1894	रैमजुरेले
पोटैशियम	1807	डेवी
कैल्शियल	1807	डेवी
स्कैन्डियम	1879	निल्सन
टाइटेनियम	1795	क्लाप्रोत
वैनेडियम	1830	सेफस्ट्रैम
क्रोनियम	1797	शीले
मैंग्नीज	1779	शीले
कोबाल्ट	1735	ब्रांड
निकिल	1751	क्रोन्श्तेड
क्रिप्टान	1898	रैमजे, ट्रेवर्स
गैलियम	1875	बुआवोडरान
जर्मेनियम	1886	विन्कलेर
सेलेनियम	1817	बर्जेलियस
ब्रोमीन	1826	बल्यार
रबीडियम	1861	बुन्सेन, किर्गोफ
स्ट्रान्सियम	1790	क्राउफार्ड
इट्रियम	1794	गैडोलीन
जर्कोनियम	1789	क्लाप्रोत
नियोबियम	1801	हेटचेट
मालिब्डेनम	1778	शीले
टैक्नीशियम	1937	पेयर्टे, सेर्गे
रूथीनियम	1844	क्लाउस
रोडियम	1804	वोल्लास्टैन
पैलेडियम	1803	" "
कैडमियम	1817	स्ट्रोमेयर
इंडियम	1863	रेख
टैलुरियम	1782	मुलेरवान
आयोडीन	1811	कुरटुआ
जीनॉन	1898	रैमजे, ट्रावर्स
सीजियम	1861	बुन्सन, किर्गोफ
बेरियम	1774	शीले, गाहन
लैन्थम	1839	मोसान्डर, क्लाप्रोत
रेनियम	1925	नोडाक, ताक्के
आस्मियम	1804	टेन्नान्ट
इरीडियम	1804	"
थैलियम	1861	क्रुक्स
पोलोनियम	1898	पियरे, मारिया क्यूरी
एक्टिटीनियम	1940	कर्सन, सेर्गे
सोडान	1899	रदरफोर्ड, औंस
फ्रान्सियम	1939	पेरे
रेडियम	1598	पियरे, मारिया क्यूरी
एक्टिटीनियम	1899	डेब्रे
थोरियम	1828	बर्जेलियस
प्रोटाक्टीनियम	1918	गाहन, सोडी, क्रेस्टन
यूरेनियम	1789	क्लाप्रोत
नेप्चूनियम	1940	मैकमिलन, अबेल्सन
प्लूटोनियम	1940	सीबर्ग & etal
अमेरीयिम	1945	"
क्यूरीयम	1944	"
बर्केलियम	1950	"
कैलिफोर्नियम	1950	"
आइंसटीनियम	1952	"
फर्मियम	1952	"
मेडलेवियम	1955	"
नावेलियम	1963	फ्लेरोव व सहयोगी
लूटशियम	1966	"
रदरफोर्डियम	"	"
डबनियम	"	"
सीवोरजियम	1974	ओगानेस्यान, सहयोगी
बोहरियम	1976	" "
लारन्सियम	1961	गिओर्सो व सहयोगी
नील्सबारियम	1970	फ्लराव व सहयोगी

जिंक, आर्सेनिक (सेरिका), एन्टिमन एवं विस्मथ मध्य युग से ज्ञात है।

सीसा (लैड), मरकरी (पारा), स्वर्ण (सोना), इंडियम, रजत (चांदी), ताम्र (कापर), लोहा (आयरन), सल्फर (गंधक) एवं कार्बन प्राचीन काल से ज्ञात है।

आवर्त सारणी में उपरोक्त के अलावा परमाणु क्रमांक 111 से 118 तक जो खोजे की गई हैं वह सभी यूरेनियम से सम्बन्धित हैं, तथा उनके गुणों के बारे में खोज जारी है।

Scanned by CamScanner

समय का पालन तथा व्यवस्थित दिनचर्या

डॉ. राजेश कुमार कुशवाहा
प्रवक्ता, वाणिज्य संकाय

इस पृथ्वी पर सर्वशक्तिमान ईश्वर तथा समय है। हम सब एक निश्चित समय के लिए पृथ्वी पर आए हैं। यह तो सर्वविदित ही है कि पृथ्वी पर न कुछ पैदा होता है और न ही कुछ मरता है, सिर्फ उसका रूप परिवर्तित होता रहता है। समस्त प्राणियों में मनुष्य योनि ही श्रेष्ठ योनि है क्योंकि मनुष्य योनि ही कर्म योनि है तथा शेष योनियाँ भोग योनि है। मनुष्य को अपने कर्मों (अच्छे एवं बुरे) के आधार पर ही फल मिलते हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं को इस प्रकार से व्यवस्थित करे कि वह अधिकाधिक सत्कर्म कर सके। अच्छे कर्म करने के लिए उसे व्यवस्थित जीवन शैली को अपनाना ही होगा।

मेरा पत्रिका के माध्यम से सभी से, विशेषकर विद्यार्थियों से विनम्र निवेदन है कि वे निम्नांकित बातों को विशेष रूप से अमल में लाएं तथा जीवन को व्यवस्थित करने का प्रयास करें :

1. प्रात: काल सूर्योदय से पूर्व उठें तथा नित्यकर्म के उपरांत स्नानादि से निवृत होकर प्रतिदिन सूर्य को अर्द्ध दें। यह क्रिया सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करने की वैज्ञानिक पद्धति है, क्योंकि समस्त ऊर्जा का स्त्रोत सूर्य ही है।
2. पाश्चात्य व्यायाम (जिम), देसी व्यायाम (दंगल, अखाड़ा) व योग अथवा किसी भी एक खेल को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। क्योंकि योग से रोग कोसों दूर रहते हैं। धैर्य प्राप्ति हेतु अधिकाधिक मौन धारण करें। प्रभु का स्मरण करें। मैडीटेशन/ध्यान सर्वोत्तम उपाय है जिससे हम आत्मकेन्द्रित होकर धैर्यवान बन सकते हैं।
3. अपनी समस्त गतिविधियों की एक समय सारिणी बनाएं, जिसमें अध्ययन हेतु समय को वरीयता दें। याद रखें किताब बंद करते ही खेलना शुरू हो गया होता है फिर चाहें आप खाली बैठे हों अथवा सो रहे हों या अन्य कोई कार्य ही क्यों न कर रहे हों।
4. तामसिक प्रकार का भोजन (तला-भुना, अधिक मिर्च-मसालेदार, माँस-मदिरा) का प्रयोग न करें क्योंकि भोजन का प्रभाव हमारे तन, मन व मस्तिष्क पर पड़ता है। काहवत भी है कि 'जैसा खावेंगे अन्न, वैसा होगा मन' के आधार पर शुद्ध, सुपाच्य व सात्विक भोजन को ही प्राथमिकता दें, जिससे चित्त एकाग्र रह सके व अध्ययन में रुचि जाग्रत हो सके।
5. दोपहर भोजन के बाद, कुछ समय के लिए आंखें बंदकर लगभग दस से पंद्रह मिनट के लिए सो जाएं। इस प्रक्रिया को अंग्रेजी में Ciesta (सियस्टा) कहते हैं जिसका अर्थ है दोपहर के खाने के बाद अल्प निद्रा या चिड़िया वाली नींद। एक अमेरिकन शोध में इस तथ्य से यह उजागर हुआ है जो लोग दोपहर के भोजन के पश्चात अल्पावधि के लिए सोते हैं, उनका दिमाग उन लोगों से अधिक क्रियाशील रहता है जो लोग ऐसा नहीं करते हैं।
6. यदि आपमें आत्म विश्वास की कमी है अथवा महसूस होती है तो अपने कपड़े स्वयं ही धोकर अच्छे प्रेस करके पहनें। आप में पुन: आत्म विश्वास जाग्रत हो जाएगा। इस बात को स्वयं चाणक्य ने अपनी पुस्तक चाणक्य नीति में कही है। उन्होंने कहा कि यदि आप में हीन भावना घर कर गई है तथा आप पुन: विजेता बनना चाहते हैं तो सर्वप्रथम अपने कपड़ों से इसकी शुरूआत कीजिए।
7. पूजा तथा प्रार्थना मनुष्य को नियम व संयम से चलने को प्रेरित करने का साधन मात्र है। जिसमें हाथ जोड़कर हृदय के सम्मुख रखकर प्रभु का स्मरण किया जता है, जिसे हम घर पर व महाविद्यालय में कर सकते हैं। शरीर के कमजोर अंग अर्थात उंगलियों के वातावरण में उपलब्ध तरंगे हमारे शरीर आत्मा हृदय व मस्तिष्क में प्रवेश करके हमें ऊर्जा प्रदान करती है। अत: हमको मनोयोग से पूजा व प्रार्थना करनी चाहिए।
8. पेप्सी, बीयर व कोका कोला, सोडा इत्यादि छोड़कर दूध, दही, मटठा, शर्बत, लस्सी व सत्तू इत्यादि को अपनाएं। ये देशी पदार्थ कई विटामिन्स व मिनरल्स से परिपूर्ण हैं तथा आपकी खोई हुई शक्ति को लौटाने में पूर्णत: सक्षम है। इनको

Scanned by CamScanner

व्यवहार में अवश्य लायें।

9. इलेक्ट्रोनिक्स वस्तुओं जैसे टेलीविजन, मोबाइल इत्यादि कम से कम प्रयोग करें क्योंकि इनसे निकलने वाली तरंगे हमारी कार्यक्षमता पर विपरीत प्रभाव डालती हैं। सिरदर्द, वात रोग, जी मचलाना, सीने में जलन इत्यादि हो सकती है।

10. वस्त्रों का चुनाव भी बड़ी सावधानी से करना चाहिए। अधिक तंग वस्त्र जैसे– जींस टी–शर्ट, कार्गो इत्यादि पहनने से मांसपेशियों में रक्त संचार ठीक प्रकार से नहीं हो पाता है तथा एक समय पश्चात् शरीर कई व्याधियों से घिर जाता है विदेशों में उपयुक्त परिधान मेहनतकश लोगों विशेषकर किसानों के लिए तैयार किए गए हैं जो घास मिट्टी में कार्य करते हैं तथा जिनको सांप, कीड़े इत्यादि के काटे जाने का भय होता है।

11. कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधनों का कम से कम प्रयोग करें क्योंकि ये कभी कभी बड़ी बीमारियों को निमंत्रण देने का कार्य भी करते हैं। जहां तक संभव हो सके, स्वयं को इन कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधनों से दूर ही रखें।

12. भरपूर नींद लीजिए तथा यथाशक्ति शारीरिक व मानसिक श्रम कीजिए। याद रखिए अच्छी नींद के उपरान्त कार्य न करना व अधिक कार्य के उपरान्त कम नींद लेना सर्वदा अहितकर है। स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से दोनों ही स्थितियां उचित नहीं है।

13. चिंता चिता के समान होती है। किसी भी विषय को लेकर विचार अवश्य करें किंतु चिंता कदापि न करें। इससे व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रोग से क्षीण हो जाता है। स्वयं को चिंता से व चिंता वाले वातावरण से मुक्त रखना मनुष्य का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए क्योंकि जो होना है वह होकर ही रहता है, उसे कोई भी किंचित मात्र के लिए कम नहीं कर सकता। ऐसे में चिंता करना व्यर्थ है, चिंतन करें। याद रखें मनुष्य जीवन एक सीमित समय के लिए ही है जिसमें कुछ वर्ष सीखने के लिए तथा शेष आधे वर्ष सिखाने के लिए होते हैं जो व्यक्ति जीवन की प्रथम पारी में ठीक से सीख नहीं पाता है वह व्यक्ति जीवन की दूसरी पारी में किसी को कुछ सिखा भी नहीं पाता। ऐसा व्यक्ति व्यवहारिकता की गेंद पर क्लीन बोल्ड हो जाता है। मनुष्य होकर भी उसकी कोई उपयोगिता नहीं रह पाती है। वंश वृद्धि, भोजन, निद्रा इत्यादि तो पशु भी किया करते हैं। मनुष्य जीवन तो इस क्रियाओं से ऊपर है, अतः हमें स्वयं को इन बहुमूल्य क्रियाओं से युक्त करके आगे बढ़ना होगा तभी हम स्वयं का, परिवार, समाज एवं देश का नाम रोशन कर पायेंगे। ❖

शिक्षक दिवस

शालू वार्ष्णेय
एम. कॉम. फाइनल

अंधकार अज्ञान मिटाता, नई ज्योति जो लाता है
भली–भॉति पुस्तक की विद्या, हमको जो समझाता है,
अनपढ़ को विद्वान बनाता, वह टीचर कहलाता है
उसका हम सम्मान करें, यह शिक्षक दिवस बताता है।

नाम कई टीचर के, हाथों में रखता वह एक किताब
कोई उसको गुरूजी कहता, कोई कहता मास्टर साहब,
मैडम होतो मिस, दीदी जी, कोई उसको बोले मैम
काम एक है शिक्षा देना, अलग–अलग हैं उसके नाम।

कोई कहता सर जी, कोई अध्यापक बतलाता है,
अनपढ़ को विद्वान बनाता, वह टीचर कहलाता है।

शिक्षक की पहचान यही है, सादा जीवन–उच्च विचार,
सबको अनुशासन में रखता, शिष्यों को देता है प्यार,
डॉ. राधाकृष्णन ऐसे ही थे अध्यापक बहुत विद्वान
बने राष्ट्रपति भारत के वह, दुनिया में पाया सम्मान।

पाँच सितम्बर जन्म दिवस जो, शिक्षक दिवस कहलाता है,
अनपढ़ को विद्वान बनाता, वह टीचर कहलाता है। ❖

Scanned by CamScanner

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संविधान की प्रस्तावना

डॉ. वाई. के. गुप्ता, प्रभारी, वाणिज्य संकाय

किसी भी देश का संविधान उसकी समृद्धि एवं संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। यह एक ऐसा एवं महत्वपूर्ण प्रलेख होता है जिसमें राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं न्यायिक पहलुओं का समावेश होता है। हमारे देश के संविधान निर्माताओं ने देश की तत्कालीन एवं भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये एक श्रेष्ठतम संविधान का सृजन किया था। यह उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है कि आज भारत का संविधान, विश्व के महान संविधानों में गिना जाता है।

15 अगस्त, 1947 को प्राप्त देश की स्वतन्त्रता के पश्चात् प्रशासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिये 26 जनवरी, 1950 से भारतीय संविधान को प्रभावी किया गया। इसकी प्रस्तावना में चार बिन्दुओं का उल्लेख किया गया है जो प्रत्येक नागरिक को गौरव एवं प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं। ये चार बिन्दु निम्नांकित हैं –

1. **न्याय** : भारत के प्रत्येक नागरिक को आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक न्याय प्रदान करने की घोषणा की गयी।
2. **समानता** : प्रत्येक नागरिक को समान दर्जा व कार्य करने का समान अवसर प्रदान करने की घोषणा की गयी।
3. **स्वतन्त्रता** : भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, निष्ठा तथा धर्म की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी।
4. **बन्धुत्व** : भारतीय संविधान में प्रत्येक नागरिक को समान भाईचारा प्रदान करने एवं राष्ट्र की एकता को बनाये रखने का संकल्प किया गया।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य : आर्थिक परिप्रेक्ष्य के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि किसी भी देश की राजनैतिक, सामाजिक एवं न्यायिक व्यवस्था की रक्षा, वहाँ की आर्थिक समृद्धि पर ही निर्भर करती है। संविधान को भी लोग तभी मानते हैं तथा उसका आदर करते हैं जब वे आर्थिक रूप से बेहतर स्थति में हों। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. **राधाकृष्णन** जी ने अपने एक भाषण में इस तथ्य को स्पष्ट किया था कि **"गरीब लोग जो इधर–उधर विचरण करते हैं, जिनके पास काम करने के लिये कोई काम नहीं है, जिनको कोई मजदूरी नहीं मिलती और भूखे मरते हैं, तथा जिनकी जिन्दगी बहुत गरीबी में जकड़ी हुयी है, वह किसी कानून या संविधान के प्रति गौरवान्वित नहीं हो सकते।"** अत: देश में संवैधानिक प्रजातन्त्र को बनाये रखने के लिये संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित बिन्दुओं का आर्थिक परिप्रेक्ष्य में सभी का सम्पन्न होना परम आवश्यक है।

आर्थिक न्याय : आर्थिक न्याय के बिना सामाजिक एवं राजनैतिक न्याय प्राय: सम्भव नहीं होता। धन के अभाव में न्यायालयों द्वारा न्याय प्राप्त करना एक निर्धन व्यक्ति के लिये कल्पना मात्र है। आर्थिक न्याय दो तत्वों से विशेष रूप से सम्बन्धित है। रोजगार एवं वेतन, प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यतानुसार रोजगार प्राप्त होना चाहिये व कार्य के अनुसार वेतन दिया जाना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के कार्य को घटिया नहीं समझना ही न्यायोचित है। सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये वेतन का पर्याप्त होना आवश्यक है। आय व धन के समान वितरण की दशा में भी उचित वेतन का महत्व है। आर्थिक विषमताओं को समाप्त करके ही नागरिकों को आर्थिक न्याय प्रदान किया जा सकता है।

आर्थिक स्वतन्त्रता : स्वतन्त्रता का सही मूल्य आर्थिक रूप से स्वतन्त्र होने में निहित है, जब तक नागरिक आर्थिक दृष्टि से आत्म–निर्भर नहीं हो जाते, उनके लिये राजनैतिक स्वतन्त्रता मात्र एक मधुर कल्पना है। इसके लिये रोजगार सृजन करके आर्थिक दासता से मुक्ति आवश्यक है।

आर्थिक समानता : आर्थिक विषमताओं को समाप्त किये बिना नागरिकों के लिये समानता का कोई महत्व नहीं है। आर्थिक असमानता गरीब एवं अमीर की खाई उत्पन्न करके शोषण को बढ़ाती है। आर्थिक सत्ता के केन्द्रीयकरण व एकाधिकारी प्रवृत्तियों पर रोक लगाकर आर्थिक समानता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। उत्पादन के साधनों का समान वितरण, प्रादेशिक सन्तुलित विकास व आरक्षण के स्थान पर संरक्षण द्वारा ही आर्थिक समानता को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

आर्थिक बन्धुत्व : देश में आर्थिक बन्धुत्व एवं राष्ट्रीय एकता की भावना को तभी पूर्णरूपेण स्थापित किया जा सकता है, जबकि समाज से छुआछूत, भेदभाव, ऊँच–नीच के दोषों को समाप्त कर दिया जाये। किन्तु यह तभी सम्भव है, जबकि व्यक्ति को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व स्वावलम्बी बनाया जाये। अमीरी व गरीबी की खाई राष्ट्रीय एकता में बाधक है।

इस प्रकार भारतीय संविधान में जिन श्रेष्ठ सिद्धान्तों को मान्यता प्रदान की गयी है, उसके मूल में आर्थिक पक्ष ही महत्वपूर्ण है। व्यक्तियों के आदर्श व सिद्धान्त अर्थ के बिना केवल स्वप्नवत हैं। आर्थिक न्याय, आर्थिक स्वतन्त्रता, आर्थिक समानता व आर्थिक बन्धुत्व के बिना एकता, न्याय व समाजवाद की आकांक्षायें कोरी कल्पना मात्र है।

Scanned by CamScanner

लेख

"हाथरस का सांस्कृतिक एवं सामाजिक महत्व"

डॉ. बी.डी. उपाध्याय
मुख्य अनुशासन अधिकारी

संस्कृति शब्द 'सम' उपसर्ग'+कृ धातु+क्तिन प्रत्यय के योग से बना है। जिसका अर्थ है। परिष्कृत करना। इस प्रकार संस्कृति का अर्थ मानव जीवन को समृद्धि एवं पूर्ण करने वाली चिन्तन एवं सृजन की क्रियायें एवं विचारधाराएं हैं। भारतीय पंडितों (विचारकों) के अनुसार एक ऐसी मानव जीवन पद्धति जो संस्कार मनसा वाचा कर्मणा अर्थात् मन, वचन और कर्म के द्वारा उत्पन्न की जाती है और मानव अपने मन से, कर्म से जो कुछ रच सका है, वह सब कुछ उसकी संस्कृति है। संस्कृति किसी देश अथवा समाज की आत्मा होती है। संस्कृति वास्तव में किसी समाज के विवेक की संचालिका शक्ति होती है। अच्छाई-बुराई, उचित-अनुचित का निर्देश कराके समाज के जीवन को अनुशासन करती है। यदि समाज की भौतिक प्रगति शरीर है तो संस्कृति इसकी आत्मा है। संस्कृति किसी समाज का आन्तरिक पक्ष है। वह मानसिक और बौद्धिक विकास का प्रतिनिधित्व करती है। इन सब विशिष्टताओं के कारण ही संस्कृति के सृजन में हजारों वर्ष लग जाते हैं।

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय आचार-विचारच साथ-साथ भिन्न-भिन्न नगरों में एवं गाँवों में, भिन्न-भिन्न रूपों में फल-फूल रहे हैं।

भारत का एक प्रमुख शहर हाथरस भी अपनी एक अलग संस्कृति और सामाजिक संरचना की पहिचान बनाये हुए है। हाथरस में प्रवसन करने के कारण तथा कर्मभूमि होने के कारण मुझे भी इसकी सांस्कृतिक छटा ने अपनी ओर आकर्षित किया है। हाथरस में प्रवसन करने वाले एक युवा कवि डॉ. रोहिताश कुमार पाराशर की यह कविता-

संस्कृति पली यहाँ, पुण्य भू जो प्यारी है। देती जन्म प्रतिभा को भू हाथरस हमारी है।।

दाऊजी का मेला भी प्रतीक संस्कृति का है। दिल से दिल मिला के जीना, समाज इस प्रकृति का है।।

बागला कॉलेज यहाँ की संस्कृति का केन्द्र है। रोहिताश पाराशर जैसा कवि इस संस्था की देन है।।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में भाई-भाई। धर्मवाद, सम्प्रदायवाद की हुई न यहाँ पर कभी लड़ाई।।

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में इस नगर की सांस्कृतिक और सामाजिक छटा का सुन्दर दृश्य उपस्थित किया गया है। हाथरस की संस्कृति का मूलाधार यहाँ के निवासियों में पायी जाने वाली संयम, नियन्त्रण एवं सहन-शक्ति की भावना है। यहाँ के निवासियों में एक विशिष्ट प्रवृत्ति देखने को मिलती है, जो उन्हें अन्य क्षेत्रों के व्यक्तियों से अलग विशिष्टता प्रदान करती है। यद्यपि उनके आचार विचारों पर ब्रज की सांस्कृतिक छाप स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ के व्यक्ति मौज की छानते हैं। वह चाहे जिन्दगी हो या भांग हो।

हाथरसवासी इस सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं कि-

"रूखा सूखा खाय के ठण्डा पानी पी। देख पराई चूपड़ी तू मति ललचावे जी।।

यहाँ पर सात महाविद्यालय कई छोटे-बड़े आंग्ल भाषाई स्कूल (महाविद्यालय) तथा इण्टर कॉलेज होने पर भी बोल-चाल की ब्रजभाषा पर कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता। अब जबकि हम इक्कीसवीं सदी में पदार्पण करने जा रहे हैं और जबकि टेलीविजन जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। हाथरस के स्वांग, रसिया, कविता, खयाल और रास अपना प्राचीन महत्व बनाये हुए हैं। हाथरसवासी धार्मिक भावनाओं से निमग्न (ओत-प्रोत) होते हुए भी यहाँ सभी सम्प्रदाय के व्यक्ति भाईचारे के साथ रहते हैं। जबकि अलीगढ़, आगरा, फिरोजाबाद तथा लखनऊ आदि में कभी-कभी साम्प्रदायिक तनाव की खबरें सुनने को मिल जाती हैं, परन्तु हाथरस जैसे इन सबसे अछूता ही रहता है। ब्रज संस्कृति, भाषा, आचार व्यवहार और पूजा-पद्धति तथा धार्मिक विश्वासों के आधार पर हाथरस का मथुरा से पूर्ण सामंजस्य है। यहाँ पर जहाँ एक ओर राधा-कृष्ण, सीताराम, गांगाजी, गणेशजी, हनुमानजी तथा भैरवजी के मन्दिरों का बाहुल्य है। वहीं मस्जिद, जैन मन्दिर, गुरूद्वारा तथा गिरिजाघर आदि भी पर्याप्त हैं स्पष्ट है कि अनेकता में एकता का साकार रूप यहाँ विद्यमान है। संस्कार, ज्ञान और भक्ति की अजस्र धारा प्रवाहित करने वाली यह नगरी विश्व प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य के महाकवि पदम् श्री काका हाथरसी, आध्यात्मिक, साहित्यिक काव्य का सृजन करने वाले जनकवि बाबा निर्भय हाथरसी, महान रसियाबाज लाला खिच्चोमल आटे वाले, स्वांग

Scanned by CamScanner

के जनक पं. नथाराम गौड़, महान राष्ट्रीय भागवताचार्य पं. जनार्दन चतुर्वेदी, डॉ. रामवशिष्ठ, श्री मानसजी शास्त्री तथा उनके पिता पूज्यवर पं. गया प्रसाद शर्मा, अन्तर्राष्ट्रीय ज्योतिर्विद डॉ. अशोक शर्मा एवं उनके पिता भारतीय ज्योतिर्विद पं. वैजनाथ शर्मा जी तथा अनेक शिक्षाविदों आदि में से किसी की कर्मस्थली है तो किसी की जन्मस्थली है। भगवान श्रीकृष्ण के अग्रज बलराम जी का दाऊजी मेला यहां का विश्व प्रसिद्ध मेला है, इसे लक्खी मेला कहा जाता है। यही दाऊजी मेला यहाँ की संस्कृति की ओर इंगित करता है, मेले ख्याल रसिया, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन के दंगल लगाये जाते हैं। हाथरस की जलवायु कवि प्रधान है। यहाँ की मिट्टी में कवि होते हैं। यहां का एक भांग पीने वाला व्यक्ति की भांग मीठी-मीठी तरंगों के साथ मधुर-मधुर कविता या रसिया गुन-गुनाने लग जाय तो नशा उतरते वक्त स्वर थमे।

विजिया (भांग) पीले बावरे अँखियां कर ले लाल। भजन करे गोपाल का तो झक मारेगा काल।।

भांग पीने के बारे में एक उक्ति तो अत्यन्त ही प्रचलित है-

"छान-छान तू किसी की मत मान, निकल जायेगी जान। निकल जायेगी जान तो कौन कहेगा पहलवान।।

जो करे भांग की बुराई उसे खाये कालिका माई। जो करे भांग की बड़ाई वह खाये दूध-मलाई।।"

खान-पान की दृष्टि से भी हाथरस की रबड़ी, सोनपपड़ी तथा अन्य मिठाईयाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। प्रातः काल से ही मिठाइयों की दुकानों पर नाश्ता हेतु बच्चे, युवक, बुजुर्ग सभी घी से निर्मित प्रसिद्ध बेड़ई व जलेबियों पर टूट पड़ते हैं।

धार्मिक दृष्टि से मंदिर तो हाथरस में वृन्दावन की भाँति घर-घर में बने हुए हैं। वैसे यहाँ प्रसिद्ध मन्दिर बोहरे वाली देवी जहाँ भक्तों का प्रत्येक सोमवार को तांता लगा रहता है, नवग्रह, किला स्थित दाऊजी बाबा का मन्दिर प्रसिद्ध है। इसकी सांस्कृतिकता से प्रसन्न होकर पं. रामकृष्ण परमहंस के प्रिय शिष्य वैदिक सनातन हिन्दू संस्कृति के प्रणेता युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द ने हाथरस सिटी रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर सदानन्द को अपना प्रिय व प्रथम शिष्य बनाकर भारतीय संस्कृति का पाठ पढ़ाया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति को प्राप्त ब्रजक्षेत्र के आगरा, मथुरा, अलीगढ़ शहरों के अति निकट होते हुए भी हाथरस की अपनी अलग पहिचान है। स्वांगबाजी, रसियाबाजी, बगीचीबाजी के प्रधान केन्द्र यहाँ की विरासत कहे गये हैं। बूरा, हींग, चाकू यहाँ का प्रमुख व्यवसाय है। दाऊजी का विश्व प्रसिद्ध मेला सभी धर्म, सम्प्रदाय के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह नगर समाज सेवा का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहां सात महाविद्यालय तथा अनेक इण्टरमीडिएट कॉलेज एवं पॉलिटेक्निक कॉलेज शिक्षण संस्थान के रूप में निरन्तर शिक्षा ग्रहण करा रहे हैं। यहाँ चिकित्सा की समुचित व्यवस्था है। नेत्र, टी.बी. तथा अन्यान्य प्रकार के राजकीय चिकित्सालय दान के रूप में सरकार को भेंट किए गये हैं।

हाथरस का प्रबुद्ध समाज ललितकला एवं संगीत कला में बड़ा प्रवीण माना जाता है। घर-घर में संगीत की शिक्षा दी जाती है। हाथरस के प्रमुख बाजार घण्टाघर, हलवाई खाना तथा नजिहाई में साँड़ लड़ाने की परम्परा पीढ़ियों से चली आ रही है। हाथरस हास्य की नगरी है। यहाँ हास्य व्यंग्य के महाकवि काका हाथरसी की मृत्यु पर ऊँट गाड़ी पर निकाली गई शवयात्रा के पथ संचलन में करुण-क्रंदन के स्थान पर हास के ठहाके लगाकर तथा शमशान घाट पर हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन करके विश्व का एक और आश्चर्य कीर्तिमान स्थापित किया। दूरदर्शन के माध्यम से इस महान आश्चर्य को भारत ने ही नहीं सारे विश्व ने देखा। यहाँ के निवासियों में आओ गुरू, चलो गुरू, क्या हाल है गुरू? जैसे शब्दों का तथा प्रेम भरी गालियों का बड़ा प्रचलन है। हाथरस की भूमि कवि प्रधान है। एक उक्ति कही जाती है-

भैया सड़क पै देखि भारि कैं थूकियो। ऐसो न होय काऊ कवि के ऊपर गिर जाय।।

अतः निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि हाथरस की अपनी एक अलग सांस्कृतिक पहिचान है। ज्ञान, विज्ञान विश्वास, कला, आचार-विचार तथा अन्य क्षमताएं एवं आदतें भी देशकाल वातावरण के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। उसी प्रकार हाथरसकी भी अपनी एक पहिचान बनी हुई है। धर्म-दर्शन, भक्ति-भाषा, व्यवहार, खान-पान सभ्यता आदि संस्कृति के अंग अपना एक अलग अस्तित्व बनाये हुए हैं। वैसे तो संस्कृति का रचनाभूत भविष्य और वर्तमान जारी रहने वाला एक निरन्तर सूत्र है। सब कुछ उसकी संस्कार सम्पन्नता का एक-दूसरे से अविच्छिन्न सम्बन्ध है न तो हम सामाजविहीन संस्कृति की कल्पना कर सकते हैं और न ही संस्कृतिविहीन समाज की। संस्कृति हमारे समाज का वह साधन है जो अच्छाई-बुराई, उचित अनुचित का नेतृत्व करती और कराती है। वाह्य पक्ष और आन्तरिक पक्ष संस्कृति के दो प्रमुख पक्ष हैं। आन्तरिक हृदय से सम्बन्धित होता है, अर्थात् चिन्तन और मनन से सम्बन्धित है। वाह्यपक्ष समाज के भौतिक वातावरण से सम्बन्धित होता है। इन्हीं दो पक्षों को लेकर हाथरस की संस्कृति और समाज को प्रस्तुत किया गया है।

Scanned by CamScanner

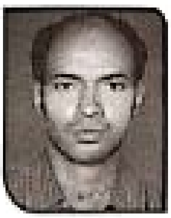

<u>लेख</u>

नारी अबला नहीं परम शक्तिशाली है

डॉ. विवेक मिश्रा प्रवक्ता-समाजशास्त्र

सामाजिक नवनिर्माण के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका के प्रश्न को विवादास्पद माना जाता रहा है। अभी स्थिति अनिर्णीत ही है। लोगों का मत है कि फ्लोरेंस नाइटेंगल, जॉन ऑफ आर्क का सामाजिक क्षेत्र में नेतृत्व सिर्फ इस कारण सफल रहा क्योंकि उनके देश की सामाजिक संरचना इसके अनुकूल थी, जबकि भारत की स्थित भिन्न है। कुछ अंशों में बात सही है प्रत्येक देश की अपनी सामाजिक स्थिति होती है। अनेक बातों में स्वाभाविक भिन्नता भी। ऐसी दशा में जो प्रक्रिया एक स्थान पर सम्भव है दूसरे स्थान पर असम्भव भी हो सकती है किन्तु अपने देश में सामाजिक नवगठन के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान मात्र पश्चिम का अंधानुकरण भर नहीं है अपितु सुदूर अतीत से इसकी अपनी गौरवमयी परम्परा रही है।

यह मान्यता पूर्णतया भ्रमात्मक है कि स्त्रियां सामाजिक जीवन में पुरुषों के बराबर सफलता प्राप्त करने में अक्षम है। पुरुषों एवं महिलाओं में शारीरिक संरचना एवं क्रियाविधी सम्बन्धी कुछ अन्तर हो सकता है। पर मानसिक प्रखरता और बौद्धिक तेजस्विता के क्षेत्र में वे न केवल समान हैं, अपितु एक कदम आगे भी हैं। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जबकि ज्ञान, विद्वता, शौर्य और सेवा के क्षेत्र में से कई में जिन्हें केवल पुरुषों के बश में समझा जाता रहा है, उनमें महिलाओं ने पुरुषों से भी अधिक सफलता प्राप्त की। प्राचीन काल में घोषा गोधा, अदिति, जुहू सरमा, रोमशा, लोपामुद्रा, यमी, शाश्वती, सूर्या, सावित्री, अनुसूइया आदि कई विदूषियां थीं जो ज्ञान, विद्या, बल और शौर्य में पुरुषों से सानी रखती थीं। दशरथ की पत्नी कैकई ने तो एक बार हारते हुए दशरथ का युद्ध क्षेत्र में अपने रण कौशल से विजय दिलाई थी। यही कारण है कि प्राचीन नीतिकारों ने राज सिंहासन का आधा भाग महारानी के लिये अनिवार्य घोषित किया था। उसे राजा के बराबर न्याय और प्रशासन का अधिकार भी मिला हुआ था।

न केवल प्राचीन काल में बल्कि मध्ययुग में भी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, अहिल्याबाई, आदि महिलाएं हुई हैं जिन्होंने पुरुषों के कार्य क्षेत्र में घुसकर उन्हें पीछे छोड़ दिया था, कहा जा सकता है कि तब परिस्थितियां कुछ और थीं। अब विगत दिनों की अंधकार बेला ने महिलाओं की शक्ति को कुंठित कर दिया है। उनकी क्षमता एवं शक्ति को जंग लग गई हो, यह भी निराधार ही सिद्ध होता है। स्वतन्त्रता संग्राम के समय जन चेतना जाग्रत करने में कस्तूरबा गांधी, सरोजनी नायडू, कमला नेहरु, विजय लक्ष्मी पण्डित, कमला देवी आदि अनेक महिलाओं ने जो कार्य किए, उसे किसी भी रूप में पुरुषों द्वारा चलाए गये अभियानों से कम नहीं कहा जा सकता। ये तो हुई विशिष्ट महिलाओं की बात, साधारण स्त्रियों ने भी स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन के दौरान उन मोर्चों को फतह कर लिया, जिन्हें पुरुषों ने अपने वश से बाहर का जानकर छोड़ दिया था। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का जब आव्हान किया गया, तो सत्याग्रह का एक बड़ा रूप सामने आया पिकेटिंग। पिकेटिंग में उन दुकानों पर जिन पर कि विदेशी वस्तुएं बेची जाती थी, वहां धरना दिया जाता था। पुरुषों को प्रारम्भ में इस कार्य में सफलता नहीं मिली तब महिलाएं आगे आयीं और उन्होंने तब तक धरना देने की दृढ़ता दिखाई, जब तक कि दुकानें बंद न हो गईं।

भारत की विभूतियों में अग्रगण्य सरोजनी नायडू ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद समाज एवं संस्कृति के प्रति अपने दायित्व को निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। न केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता के लिये, वरन् मनुष्य द्वारा दास बनाने एवं उसे अपने अधिकारों से वंचित करने के प्रत्येक कारण के विरुद्ध लड़े गये धर्म युद्ध में योद्धा की भूमिका निभाई। अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों के हितों की रक्षा, असहयोग आन्दोलन, नारी उत्कर्ष, समाज सुधार, बाल सुधार, साक्षरता, शिक्षा प्रसार आदि कई क्षेत्र उनकी समाज सेवा साधना के अंग रहे। भारत की राष्ट्रीयता स्वीकार करने वाली एनीबेसेन्ट भारतीय कांग्रेस की अध्यक्षा बनीं, यही पद बाद में सरोजनी नायडू ने सुशोभित किया। श्रीमती सरोजनी नायडू एवं श्रीमती हीरा टाटा ने महिलाओं के मताधिकार का प्रश्न लेकर आन्दोलन भी चलाये। कमला देवी चट्टोपाध्याय पहली महिला थी जो चुनाव में खड़ी हुई।

Scanned by CamScanner

स्वतन्त्रता आन्दोलन का संचालन करने वाली वीरांगनाओं में श्रीमती भीकाजी, विजय लक्ष्मी पण्डित, मृदुला साराभाई, लक्ष्मी मेनन, दुर्गाबाई देशमुख, कमला नेहरू, मणिबेन पटेल, सुशीला नैयर, पदमजा नायडू, अनुसुइया बाई आदि नामों की एक लम्बी सूची है जो भारतीय समाज में महिलाओं के गौरव को प्रकट करती है। अत: यह आरोप स्वत: ही आधारहीन सिद्ध हो जाता है कि महिलाएं पुरुषों से उन्नीस हैं। जबकि सच्चाई यह है कि कई मामलों में महिलाएं पुरुषों से इक्कीस हैं। अत: महिलाएं अबला नहीं है। आचार्य विनोबा भावे ने तो महिलाओं की एक नई एवं सटीक व्याख्या कर डाली कि अबला शब्द बहुत बाद का है, उससे पूर्व हमारे यहां महिला शब्द व्यवहृत होता रहा है जिसका अर्थ है महान शक्तिशाली। वस्तुत: नारी अबला नहीं महान शक्तिशाली है और समाज के विकास हेतु नेतृत्व कर अपनी प्रखर बुद्धि के सहारे संभाल सकती है। माताजी एवं श्री अरविन्द जी ने इक्कीसवीं सदी को स्पष्ट शब्दों में मदर्स सैन्चुरी अथवा मातृशती कहा है। आपका कहना था कि इस शताब्दी में शासन व्यवस्था की जिम्मेदारी नारी के हाथ में होगी। पुरुष उसका सहायक भर होगा। एक प्राचीन कहावत का जिक्र करते हुए वह कहते थे कि जिस देश एवं समाज की सम्पत्ति पर नारी का शासन होता है, वह देश समृद्ध रहता है।

आज हम पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरागांधी, प्रतिभा पाटिल, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, पी.टी. ऊषा, किरन बेदी आदि के योगदान को नहीं भूल सकते।

❖

संपूर्ण क्षमता को सामने लाता है - योग विज्ञान

डॉ. रेखा शर्मा बी.एड. प्रवक्ता

योग इंसान की आंतरिक ऊर्जा को सक्रिय करने का एक ऐसा विज्ञान है जिसमें उसका शरीर, मन और भावनाएं अपनी चरम क्षमता के साथ काम कर सके। अपने शरीर व दिमाग से बीमारियों को दूर भगाने का नाम ही योग है।

जिस मिट्टी से पहले हमने झोपड़ियां, ईंट और बर्तन बनाए, क्या उसी मिट्टी से हमने कम्प्यूटर, कार और अंतरिक्ष यान नहीं बनाया है? ठीक ऐसे ही अपनी भीतरी ऊर्जा को बड़ी संभावनाओं के लिए कैसे इस्तेमाल किया जाए, इसकी एक पूरी तकनीक ही योग है। हर व्यक्ति को योग जरूर करना चाहिए।

आपका दिमाग इस तरफ है जबकि दिल उस तरफ। आपका शरीर कहीं है और ऊर्जा कहीं दूसरी ओर। ऐसे में आप कैसे यह अपेक्षा करते हैं कि आप आनंद में यात्रा करेंगे और किसी गंतव्य तक पहुँच जाएंगे? योग के माध्यम से व्यक्ति अपनी मनोदशा पर काबू पा सकता है।

योग में व्यायाम करने के लिए शरीर के वजन का ही इस्तेमाल किया जाता है आप जहां भी हैं वहीं व्यायाम कर सकते हैं। आपका शरीर तो आपके साथ है ही। योग एक विज्ञान है कोई चमत्कार नहीं। इसके करने से उच्च रक्त चाप (हाइपरटेंशन), मधुमेह (डाइबिटीज) व गठिया (ऑर्थराइटिस) का इलाज हो सकता है।

इस शरीर का निर्माता आपके भीतर ही है और आपको जब इलाज व मरम्मत की जरूरत पड़ती है, तो आप किसके पास जाना पसंद करते हैं, निर्माता के पास या किसी स्थानीय मैकनिक या कारीगर के पास, निश्चित तौर पर निर्माता के पास ही जाएंगे। अगर आपको उसके पास जाने का रास्ता पता हो, इसलिए योग एक तकनीक है, इस यौगिक पद्धति को अपनाकर आप अपना हर दिन हंसता खेलता बना सकते हैं, एवं बढ़ती उम्र को रोक सकते हैं। इतना चमत्कारी प्रभाव योग से ही सम्भव है।

❖

Scanned by CamScanner

लेख

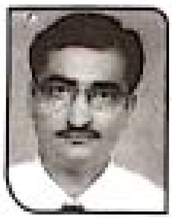

फिर दस्तक दे रहा है "गांधीवाद"

प्राचीन ज्ञान को समकालीन वस्तुस्थिति से जोड़ता है 'गांधीवाद'

डॉ. ललित उपाध्याय (प्रवक्ता)

2 अक्टूबर 143 वर्ष की यात्रा पूर्णकर एक बार फिर दस्तक दे रहा है- हिंसा के विरुद्ध अहिंसात्मक उत्सर्ग करने की भावना की, समाज में समानता व संस्कार की, कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था की, देश में स्वदेशी की, शिक्षा व रोजगार के समाधान की, नशाबंदी को स्वीकारने की तथा समस्त गाँधीवादी सिद्धांतों को जीवन के हर क्षण में उतारने की लेकिन अफसोस, 125 वर्ष कर्म के लिए जीवित रहने की चाह रखने वाले महात्मा गाँधी व उनके सिद्धांत देश की आजादी के बाद भी गुमनाम गलियारों में न जाने क्यों हमसे दूर भाग रहे हैं ?

आज हम महात्मा गाँधी के 150 वें जयंती वर्ष की ओर कदम बढ़ा चुके हैं लेकिन फिर भी "गाँधीवाद" को अपनाने की आवश्यकता को समझने के बावजूद उससे मुंह मोड़ते जा रहे हैं। हम इतने लाचार हो गए हैं कि बात-बात पर कह देते हैं, "मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी" लेकिन कभी यह सोचने की हिम्मत नहीं कर पाये हैं कि महात्मा गाँधी को मजबूरी के साथ जोड़ स्वयं मजबूरी की मानसिकता के गुलाम क्यों हो गए हैं? अगर हम महात्मा गाँधी की विवशता पर फब्तियाँ कसने का हक जता सकते हैं तो हमें उनके सत्याग्रह, कर्म, अहिंसा, त्याग और बलिदान को जीवन से पृथक करने का क्या अधिकार बनता है किन्तु हम फिर वही 'मैं', 'स्व', 'अहम' सरीखे शब्दों से हार मान गए हैं, फलत: गांधीवाद हमें याद जरूर आता है किन्तु उस पर अमल हममें से शायद ही कोई करता हो। 'गांधीवाद' आधुनिक रूप लेकर 'गांधीगिरी' तक पहुँच चुका है।

स्वतंत्र भारत की कल्पना को साकार करने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'नाम' से अलग रह सदा प्रार्थना के साथ कर्म में विश्वास किया। इसके बाद उनके कर्म को जीवन्त करने के लिए आध्यात्मिक राजनीति में प्रवेश के बारे में कहे गए वे उद्गार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थे। गांधी जी ने कहा था कि- "मैं मोक्ष प्राप्ति के लिए राजनीति कार्य करता हूँ। प्रत्येक युग में अधर्म अपना अड्डा जमाने के लिए कोई खास जगह पसंद कर लेता है और उसमें पूर्णत: व्याप्त भी हो जाता है। आज के जमाने में वह राजनीतिक क्षेत्र में पूर्णतया प्रवेश कर गया है। वहाँ से उसे (अधर्म) हटाकर धर्म को प्रतिस्थापित करना है। यदि मैं इस कार्य को न कर सका तो मुझे मोक्ष नहीं मिल सकता।" क्या महात्मा गांधी को उनकी इच्छानुसार मोक्ष मिल पाया होगा? राजनीति में अधर्म तथा धर्म की राजनीति से जुड़ा यह प्रश्न आज विचारणीय है।

भारत के सन्दर्भ में मोहनदास करमचन्द गांधी द्वारा सुझाए गए समग्र क्षेत्रीय विकास, संतुलित ग्रामीण विकास, स्थानीय स्वायत्त शासन, पर्यावरणीय संतुलन, कृषि कार्य में नैसर्गिक साधनों से उच्चतर उत्पादन, रोजगारोन्मुखी उद्योग, स्वदेशी, आत्मनिर्भरता, नैतिक शिक्षा तथा शिक्षा से बालक और मनुष्य के शरीर का सर्वांगीण विकास आदि विषयों पर गौर करने के लिए गंभीर होने की आवश्यकता है।

गाँधीजी का गांधीवाद सिद्धांत व्यक्ति को 'हरफनमौला' (All rounder) बनाने पर बल देता है। 'गांधीवाद' ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के संश्लेषण करने की दृष्टि से अन्तर्विषयी अनुसंधानों को प्रोत्साहन देने के साथ भारत के प्राचीन ज्ञान को समकालीन वस्तुस्थिति से जोड़ने का प्रयास करता है। इस बारे में गाँधीजी ने कहा था कि "शिक्षा से मेरा तात्पर्य है कि बालक अथवा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क व आत्मा का उत्कृष्ट विकास।" (By education I mean an all rounder drawing out of the best in child and man- body, mind and spirit- *Mahatma Gandhi)* यही नहीं गांधीवादी सिद्धान्त शिक्षा को आत्मनिर्भरता से जोड़ने पर बल देता रहा है। उन्होंने कहा था कि "शिक्षा को बालक के लिए बेरोजगारी के विरुद्ध एक बीमे के रूप में होना चाहिए कि अर्थात् व्यक्ति को इतना समर्थ अवश्य होना चाहिए वह अपना जीविकोपर्जान स्वयं कर सके और आत्मनिर्भर बन सके। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने मानसिक प्रशिक्षण व उत्पादकता में सम्बन्ध स्थापित किए जाने पर सदा बल दिया करते रहे जो आज के परिप्रेक्ष्य में पूर्णत: सारगर्भित है। गांधीजी ने शिक्षा के शैक्षिक समाजशास्त्र के उद्देश्यों, वैयक्तिक

Scanned by CamScanner

एवं सामाजिक आधारों के समन्वय पर चर्चा करते हुए कहा था कि "मैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देता हूँ परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य आवश्यक रूप से एक सामाजिक प्राणी है।" (I value individual freedom but we must not forget that man is essentially social being- Gandhi)

महात्मा गांधी ने हर क्षण स्वयं पर प्रयोग किए, चाहे 1933 में सवर्ण एवं अवर्ण के मध्य मतभेदों को दूर कराने का प्रयास हो अथवा 1946 में नोआखाली नर संहार में अपनी जान जोखिम में डालकर हिंसा को रोकने का साहसिक कदम हो। उन्होंने जीवनपर्यन्त दलित-उत्थान, सत्य, ग्रामीण जीवन, अहिंसा, खादी, नशाबंदी व शिक्षा के विकास के साथ साम्प्रदायिक सौहार्द का पक्ष लिया।

गांधीजी के विचारों को जिसने समझा, उसने तन-मन से माना। अपने देश में बचपन गांधीजी के तीन बंदर 'बुरा मत कहो, बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, से सीख लेकर जवानी की करवट लेता है जो वृद्धावस्था में अपने बचपन के दूसरे रूप को इसी सीख पर चलने को प्रेरित करता है। यह नहीं है कि आज महात्मा गांधीजी के आदर्श कहीं खो गए हैं बल्कि हमें उन आदर्शों पर चलने की मानसिकता को वापस ले जाना होगा जहां जाकर फिर से 'गांधीवाद' की कदमपोशी संभव हो सके।

लेख

मानव जीवन में शिक्षा का महत्व

गिर्राज किशोर प्रवक्ता शिक्षा विभाग

आधुनिक युग में किसी भी राष्ट्र के भौतिक एवं मानव संसाधनों का बहुत अधिक महत्व है। भौतिक एवं मानव संसाधन ही किसी भी राष्ट्र को अंग्रेजी राष्ट्रों की कतार में खड़ा करने में सक्षम बना सकते हैं। भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृतिजन्य होती है इसीलिए आज मानव संसाधनों के विकास पर अधिक बल दिया जाने लगा है। किसी भी राष्ट्र में समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। अतः कोई राष्ट्र तब ही प्रगति कर सकता है, जब उस राष्ट्र के सभी नागरिकों को विकास हो, जो शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियाँ निहित होती हैं तथा इन शक्तियों के विकास (उदय) से ही व्यक्ति का विकास होता है। शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, कौशल और बोध में वृद्धि करती है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को सभ्य और सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा की यह प्रक्रिया जन्म से प्रारम्भ होकर मृत्युपर्यन्त लगातार किसी न किसी रूप में एक सतत् प्रक्रिया के रूप में सदैव चलती रहती है। बालक की शिक्षा माँ की गोद से प्रारम्भ होती है और घर उसकी प्रथम पाठशाला होती है। शिक्षा नवजात, असहाय शिशु का सर्वांगीण विकास करके उसे अपने जीवन के विभिन्न उत्तरदायित्वों को उचित ढंग से निर्वाह करने के योग्य बनाती है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करती है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का पुष्प खिल जाता है, ठीक उसी प्रकार शिक्षा रूपी प्रकाश को पाकर मानव जीवन कमल के पुष्प समान खिल उठता है।

कडुवाहट भरे शब्द लाइलाज नुकसान पहुँचा सकते हैं, जबकि विनम्रता पूर्ण शब्द बड़े से बड़े झगड़े को मिटा सकते हैं।

Scanned by CamScanner

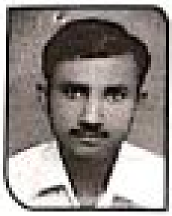

लेख

भारत में माध्यमिक शिक्षा

नीरेश कुमार बी.एड. प्रवक्ता

भारत एक विकासशील देश है और किसी भी देश को, समाज को या फिर एक व्यक्ति को आगे बढ़ाने में शिक्षा का ही योगदान होता है। क्योंकि शिक्षा ही एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से तथा एक समाज को दूसरे समाज से तथा एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से जोड़ती है। एक व्यक्ति की शिक्षा में प्राथमिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा का योगदान रहा है। क्योंकि प्राथमिक शिक्षा नींव होती है और माध्यमिक शिक्षा उस नींव को मजबूत बनाती है तथा बच्चे को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करती हैं शैशवावस्था में दी जाने वाली पहली से पांचवीं तक की शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के अन्तर्गत आती है तथा किशोरावस्था में दी जाने वाली छठी से बारहवीं तक की शिक्षा माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत आती है।

माध्यमिक शिक्षा को रीढ़ की हड्डी के समान माना है, जिस प्रकार शरीर के लिए रीढ की हड्डी जरूरी होती है उसी प्रकार शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा महत्वपूर्ण होती है क्योंकि यह शिक्षा बच्चे को मजबूती प्रदान करती है।

भारत में माध्यमिक शिक्षा के विकास का श्रेय ब्रिटिश सरकार को जाता है लार्ड मैक्याले ने इस शिक्षा में पहला कदम उठाया तथा बाद में कमेटियों तथा आयोगों ने भारत में शिक्षा के विकास के लिए प्रयास किए। 1835 में लार्ड मैक्याले तथा 1844 में लार्ड हार्डिंग की भारतीय सरकारी नौकरियां देने की घोषणा के बाद भारत में 1852 तक 32 मान्यता प्राप्त स्कूल बन चुके थे तथा उसके बाद माध्यमिक शिक्षा का काफी प्रचार होने लगा 1854 के वुड डिस्पैच, 1882 हण्टर आयोग, 1917–19 सैडलर आयोग, 1929 हर्टांग कमेटी आई तथा इन सभी आयोगों एवं कमेटियों ने माध्यमिक शिक्षा अध्यापक प्रशिक्षण पर जोर दिया। 1882 में भारत में 3916 माध्यमिक स्कूल तथा 2,14,477 विद्यार्थियों का दाखिला हो चुका था और 1947 तक 12,693 स्कूल तथा 29,53,996 छात्रों का दाखिला हो गया था 1950–51 की गणनानुसार 7,416 स्कूल, 1990 में 79,796 स्कूल 2000 में 1,16,820 तथा 2007–08 (अनुमानित) 1,36,000 स्कूल स्थापित हो चुके हैं। लेकिन उस समय शिक्षा में गुणवत्ता नाम की कोई चीज नहीं थी और माध्यमिक शिक्षा में काफी कमियां आ गई थीं जैसे नीरस पाठ्यक्रम, बच्चों पर पढ़ाई का जोर, अध्यापन पद्धति में कमी तथा मूल्यांकन में कमियां। इन सब कमियों के द्वारा माध्यमिक शिक्षा ढीली पड़ती जा रही थी, इसलिए 1948 में डा. राधाकृष्णन ने भी अपने विचारों में कहा कि "माध्यमिक शिक्षा हमारी शिक्षा के ढांचे में सबसे कमजोर कड़ी है, इसमें सुधार की आवश्यकता है" और तब स्वतंत्रता के बाद भारत में अनेक कमेटियों एवं आयोगों ने माध्यमिक शिक्षा के लिए अपने सुझाव दिए। 1952–53 में मुदालियर आयोग, 1964–66 में कोठारी आयोग, 1986 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1990 में आचार्य राममूर्ति कमेटी तथा 1992 में 1986 का कार्यान्वयन कार्यक्रम बना। इन सब आयोगों ने माध्यमिक शिक्षा में सुधार के लिए अनेक सुझाव दिए, उसके बाद भारत में शिक्षा में सुधार हुआ।

उत्तर प्रदेश में 18805 माध्यमिक विद्यालय स्थापित हो चुके हैं। इससे आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि कितने विद्यालयों की उन्नति हुई है। फिर भी अगर हम शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान दें तो आज भी शिक्षा में हमें खोखलापन नजर आता है। आजादी के 60 वर्ष बाद भी 3500 से ज्यादा स्कूल, खुले आसमान के नीचे बिना छत के चल रहे हैं। बच्चों के बैठने के लिए उपयुक्त स्थान की कमी तथा पढ़ाने के लिए अध्यापकों की कमी, अध्यापक प्रशिक्षण में कमी, मूल्यांकन प्रणाली में दोष, इन दोषों को हम अनदेखा कैसे कर सकते हैं? अगर हमें अपने देश को समृद्धिशाली बनाना है शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना ही होगा क्योंकि गुणवत्ता किसी भी चीज को आगे बढ़ाने में अहम हिस्सा होती है इस गुणवत्ता को लाने तथा कायम रखने में तकनीकी एवं कम्प्यूटर शिक्षा का काफी योगदान है साथ ही शिक्षा की गुणवत्ता, हम शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित, पाठ्यक्रम में सुधार, कर सकते हैं। आओ हम सब मिलकर इस शिक्षा के महत्वपूर्ण भाग को सुधारें और इन आने वाली बाधाओं को दूर करें। वह दिन अब दूर नहीं, जब भारत एक विकासशील देश से समृद्धिशाली देश बन जायेगा।

Scanned by CamScanner

लेख

प्रकृति में व्याप्त प्रवृत्ति का भ्रष्टाचार

डॉ. रोहिताश कुमार 'पाराशर'
व्याख्याता-हिन्दी

आदमी की प्रवृत्ति सुधर जायेगी तो प्रकृति सुन्दरतम बन जायेगी।

'स्वायंभुव मनु और सतरूपा। जिन्ह तें भई नर सृष्टि अनूपा।।

सृष्टि रचयिता ब्रह्माजी ने सृष्टि की स्थापना हेतु 'मनु' और 'सतरूपा' को प्रकट किया। जिनके माध्यम से मानव संसार का सृजन हुआ। उस समय प्रकृति अपने सौन्दर्योपमरूप में थी। थलचर, जलचर और नभचर क्रमशः पृथ्वीलोक, नागलोक (पाताल लोक), स्वर्ग लोक (अन्तरिक्ष) के जीवन जगत में प्राणिमात्र का संसार सुखी था। क्योंकि प्रकृति के प्राणी की प्रवृत्ति निश्छल और निर्विकार थी। ब्रह्माजी ने समयचक्र को चार कालखण्डों में विभक्त किया जिनको 'युग' का नाम दिया गया सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग। इन युगों के साथ सृष्टि में आया त्रिगुण योग, जिसका निरन्तर करता चला आ रहा है प्राणिमात्र भोग। इस कारण कलियुग में बन गया है यह त्रिगुण भयंकर रोग। 'त्रिगुण' मनुष्य में प्रदत्त तीन गुण– सत, रज, तम।

सत्– सात्विक गुण– संत स्वभाव के स्वामी जो परमार्थ के लिए जीते हैं और परोपकार हेतु मरते हैं।

रज– राजसीगुण– सत्ता, ऐश्वर्य, जनबल, धनबल आदि का प्रतीक।

तम– तमोगुण– सत्ता, ऐश्वर्य, बल आदि की प्राप्ति के बाद अहम् की उत्पत्ति से उपजे अनेक विकार जो मानव जाति को पतन एवं विनाश की ओर ले जाते हैं जैसे– मद, मत्सर, काम, क्रोध, लोभ, द्रोह।

विज्ञान भी मानता है धर्म की बात– किसी प्राणी की वे सभी विभिन्नतायें जो उसे विशेष वातावरण में रहने योग्य बना देता है। वह प्राणी उन्हीं के अनुकूल बन जाता है। डार्विन मेण्डल आदि वैज्ञानिकों ने अपने परीक्षणों एवं आविष्कारों से यह सिद्ध भी किया है।

अत: मद, मत्सर, काम, क्रोध, मोह, लोभ और द्रोह से विभूषित शासकों से शासित प्रजा रामराज्य अर्थात निर्विकार एवं भ्रष्टाचार रहित शासन (राज्य) की कल्पना कैसे कर सकती है। शास्त्र यह भी तो कहता है कि यथा राजा तथा प्रजा यानि जैसा राजा वैसी प्रजा। तात्पर्य यह है कि राजा ही भ्रष्ट नहीं है अपवाद छोड़कर प्रजा भी भ्रष्ट है। क्योंकि प्रजा ने अपने-अपने धर्म और जातिओं के राजाओं द्वारा भ्रमित होकर मानवता को भूलकर दुष्टों का साथ देकर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारकर अपना ही बंटाधार कर लिया है जिसका फायदा नेता और खामियाजा जनता भुगत रही है। क्योंकि भ्रष्टाचार मनुष्य मात्र की प्रवृत्ति बन गया है जिसका फल प्रकृति से अभिप्राय: नदी, बन, पर्वत (ग्लेसियर), पशु, पक्षी आदि से है, जिनका लगातार दोहन हो रहा है। जल को ही ले लीजिये, भूगर्भ जल से लेकर नदियों तक का पानी दूषित हो गया है, जिससे जल के प्राणियों का जीवन संकट में आ गया है।

सरिता सकल बहहिं बर बारी। शीतल अमल स्वाद सुखकारी।।

रामराज्य में सभी नदियों में स्वच्छ जल बहता था जो कि शीतल (ठण्डा), स्वच्छ, स्वादिष्ट, मीठा सुख प्रदान करने वाला था, किन्तु गंगा और यमुना को स्वच्छ कराने हेतु भारत सरकार कितना बड़ा बजट प्रस्तुत करती है। बजट फाइलों में दम तोड़ देता है। नेता और अधिकारी लोग धन का बन्दर बांट कर लेते हैं। पानी कैसे स्वच्छ पीओगे। गरीबों को तो पानी गन्दा ही पीना पड़ेगा। धनवान आर. ओ. लगवा लेगा। नल का पानी भी कैमिकल फैक्ट्री के कैमिकल्स से दूषित हो गया है। वन सम्पदा नष्ट हो रही है। सेब सौ रुपये किलो है। गरीब फल देखना तो दूर 'फल' शब्द ही नहीं जानेगा। पर्वतों के बर्फीले ग्लैसियर रासायनिक कारखानों एवं परमाणुविक केन्द्रों की गर्मी से पिघल रहे हैं। खेतों की फसलों में जहरयुक्त बीज बोये जा रहे हैं। दुधारू पशुओं को जहरीले इंजेक्शन लगाये जा रहे हैं। जिससे पशु-पक्षी मर रहे हैं। अत: जल, थल एवं नभ तीनों संकट में फंसे

Scanned by CamScanner

हैं। जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है। इतने रावण इकट्ठे हो गये हैं कि गाँधी के रामराज्य की कल्पना केवल कल्पनामात्र रह गई है। बापू को भी नोटों पर बैठाकर (छापकर) बेचा जा रहा है। बापू के तीन बन्दरों की याद करके कि बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो तथा बापू के नोटों पर छपे चित्र को देखकर मैं भी मौन साधकर लिख ही डालता हूँ-

बापू तेरे देश में, बढ़ता अविरल भ्रष्टाचार।
भारत में बढ़ गये दरिन्दे, रहा न अब आचार-विचार॥
रक्षक ही अब भक्षक हो गये, शासक भी हो गये शैतान।
सोचो और विचारों वाली, बुद्धि भी हो गयी हैवान॥
बापू तेरे देश में, बढ़ता अविरल भ्रष्टाचार।
मन्दिर में मदिरा बिकतीं, मस्जिद में होते व्यभिचार॥

दया, अहिंसा, सत्य की हत्या, हो रही तेरे देश में ।
आदर्शवाद का उग्र रूप है, आतंकी के वेश में॥
भ्रष्टाचार की फसलें उगतीं, नेताओं की जेबें भरतीं।
सामन्तों की कोठी सजती, बंजर होती जाती धरती॥
देवालय वैश्यालय बन गये, नारी नंगी नाच रही।
अग्नि परीक्षा देने वाली, कौन सी पुस्तक बाँच रही॥
बापू तेरे देश में, बढ़ता अविरल भ्रष्टाचार।
भारत में बढ़ गये दरिन्दे, रहा न अब आचार-विचार॥ ❖

तीन चीजें

विवेक कुमार गुप्ता बी. कॉम III

तीन चीजों पर मत हंसों	– आँसू, भिखारी, विधवा।
तीन चीजों को उठाने से पहले सोचो	– कलम, कदम, कसम।
तीन चीजों से डरना चाहिए	– आग, पानी, बदनामी।
तीन चीजें पर्दे में रखनी चाहिए	– औरत, भोजन, दौलत।
तीन चीजें अपमानित करती हैं	– चोरी, चुगली, झूठ।
तीन चीजें याद रखें	– सच्चाई, कर्तव्य, मृत्यु।

❖

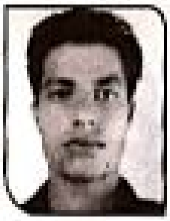

लेख

भारतीय मूल्य

ललित सारस्वत
बी. एड.

आज के युग का मानव एवं समाज उत्तरोत्तर दिग्मूढ़ होकर मूल्यहीनता के गम्भीर गर्त में गिरता जा रहा है। 'स्वार्थ का दानव अपना विकराल मुँह फैलाए मनुष्य की सुख-शांति को निगलता जा रहा है। हम पाश्चात्य देशों की भौतिक उन्नति, समृद्धि की चकाचौंध से प्रभावित होकर भोगवादी संस्कृति में अपनी अनुरक्ति बढ़ा रहे हैं। भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के इस दौर में मनुष्य स्वयं एक वस्तु बन गया है। त्याग, समर्पण, पर हित, प्रेम, आदर्श एवं नैतिकता जैसे शब्द आज शब्दकोश तथा भाषणों तक ही सीमित होते रहे हैं, और सत्य यह है कि मानवीय मूल्य ही आदर्श मानव समाज के विकास और प्रगति के मूल आधार हैं।

भारतीय संस्कृति और समाज के विकास में गीता, रामायण, वेद, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथ भारतीय मूल्यों का अक्षय कोष हैं, जो हमें सुदृढ़ एवं सुसंस्कृत बनाते हैं। भारतीय संस्कृति एवं समाज के विकास में इनका अप्रतिम योगदान रहा है। भारत ही नहीं, विश्व के सभी देशों में शताब्दियों से भारतीय धार्मिक ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार होता रहा है। परन्तु आज हम भौतिकवाद और पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे हैं और अपने मूल्यों को तिरस्कृत करते जा रहे हैं जिससे स्वार्थ, अनैतिकता, अहिंसा और भ्रष्टाचार आदि पनप रहे हैं जिसने देश में अशांति का माहौल पैदा कर रखा है जिससे राष्ट्र की उन्नति में बहुत बड़ी बाधा आ रही है। हमें अपने मूल्यों का संरक्षण करना है और इसके मार्ग में आ रही बाधाओं को भी दूर करना है। इसके लिए माता-पिता तथा अध्यापक द्वारा इन मूल्यों का सही चित्रण किया जा सकता है जिसके मूल्यों की व्यावहारिकता को मनुष्य समझ सके और हमारे देश का अभ्युदय हो सके। ❖

Scanned by CamScanner

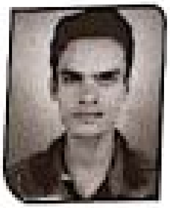

दिन रात नहीं सुबह है

सन्नी शर्मा
बी. कॉम. I

इस समंदर में इतना पानी नहीं है,
जितनी कि हमारे दिल में प्यास है।
इस सूरज में इतनी गर्मी नहीं है,
जितना हमारे भीतर जोश भरा है।
अपने को टटोलो।
भीतर किसी कोने में कोई सोया है,
वह कोई और नहीं तुम्हारा वजूद है,
उसे जगाओ क्योंकि..
जिन्दगी रात नहीं सुबह है।

अपना मूल्यांकन करें

कोई दूसरा हमारी खामियों के बारे में कहे।
हम खुद ही अपनी कमियों को समझें,
हमें इस बात का अहसास होना चाहिए
कि हम क्या गलत और क्या सही कर रहे हैं?
हर गलती से कुछ सीखना चाहिए
और हर सफलता पर आगे बढ़ने की
प्रेरणा लेनी चाहिए।

आँसू

चित्रा कुमारी
बी.कॉम. II

किसी के प्रेम का एहसास है आँसू।
किसी की खुशियों का अरमान है आँसू।
किसी की जिन्दगी का फरमान है आँसू।
किसी की यादों का अंजाम है आँसू।
किसी की बेजुबाँ आँखों का अल्फाज है आँसू।
किसी की जुदाई का दर्द जान है आँसू।
किसी की बेवफाई का इल्जाम है आँसू।
किसी की बुझे दिल की जुबान है आँसू।
किसी की मौत का पैगाम है आँसू।
किसी की विदाई की रस्मों रिवाज है आँसू।
किसी से मिले प्यार का जबाब है आँसू।
किसी की जिन्दगी का हिसाब है आँसू।

विचार ही सभी कर्मों के बीज हैं, इसलिए सिर्फ अच्छे, शुद्ध बीज ही बोने चाहिए, जिनसे श्रेष्ठ फल प्राप्त होंगे

Scanned by CamScanner

स्वर्णिम पल

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा महाविद्यालय में सर्वेक्षण के दृश्य

दीप प्रज्जवलन करते नैक दल के प्रो. पी. एस. जकारिया

नैक सर्वेक्षण दल के प्रो.पी.एस. जकारिया का स्वागत करते प्राचार्य

नैक सर्वेक्षण दल के प्रो.पी.देवनाथ का स्वागत करते उप प्राचार्य

म्यूजिकल रिसोर्स सेन्टर का अवलोकन करती नैक टीम

विज्ञान रिसोर्स सेन्टर का अवलोकन करती नैक टीम

आई.सी.टी. रिसोर्स सेन्टर का अवलोकन करती नैक टीम

रिकॉर्ड रूम का अवलोकन करते नैक टीम के सदस्य

पुस्तकालय का अवलोकन करते नैक टीम के सदस्य

Scanned by CamScanner

स्वर्णिम पल

महाविद्यालय प्राध्यापकों से वार्तालाप करती नैक टीम

महाविद्यालय का अवलोकन करती नैक टीम

लैंग्वेज रिसोर्स सेन्टर में नैक टीम के सदस्य

दस्तावेजों का निरीक्षण करती नैक टीम

सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुति देते छात्र व छात्राएं

सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण

नैक टीम की एक्जिट मीटिंग के अवसर पर उपस्थित अतिथिगण

Scanned by CamScanner

ज्ञान महोत्सव 2012

ज्ञान महोत्सव पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

सांस्कृतिक कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन करतीं श्रीमती व श्री चन्दन चतुर्वेदी जी

महाविद्यालय छात्राओं द्वारा मनमोहक प्रस्तुति

प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुये अतिथिगण

प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुये अतिथिगण

डायट प्राचार्या डा. अंजना गोयल को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए प्राचार्य

शिक्षक दिवस पर छात्राओं द्वारा मनमोहक प्रस्तुति

लोकनृत्य का मनमोहक दृश्य

हास्य व्यंग के कार्यक्रम में प्रस्तुति देते हास्य कवि [illegible] मुस्कानी

ज्ञान महोत्सव पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

ज्ञान महोत्सव में मनमोहक प्रस्तुति देती छात्राएं

हास्य एवं व्यंग कार्यक्रम में नाटक प्रस्तुत करती छात्र व छात्राएं

लोकगीत व लोकनृत्य कार्यक्रम में मनमोहक प्रस्तुति देती छात्राएं

सांस्कृतिक कार्यक्रम में मनमोहक प्रस्तुति देती छात्राएं

लोकगीत व लोकनृत्य कार्यक्रम में मनमोहक प्रस्तुति देती छात्राएं

उद्बोधन देते डा. सेवक राम शर्मा प्रधानाचार्य एल. एम.वी इण्टर कालिज

काव्यपाठ करते कवि श्री उमाशंकर राही

काव्य गोष्ठी में हास्य रचनाएं सुनाते कवि श्री अशोक अंजुम

Scanned by CamScanner

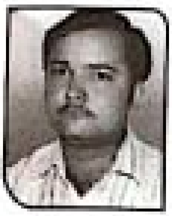

लेख

नारी का सम्मान

सत्यवान उपाध्याय
उप प्रबन्धक

नारी और पुरुष समाजरूपी रथ के दो पहिये हैं। दोनों के सामंजस्य से ही संसार में जीवंतता का संगीत सुनाई देता है। उसका यशगान भारतीय संस्कृति में सदा से होता आ रहा है। नारी महिमा का गान मनु, वेदव्यास, याज्ञवल्क्य, पाराशर आदि ऋषियों ने अपने ग्रन्थों में भी किया है, परन्तु इसका मूलस्रोत वेद संहिता है। वेद की नारी अति विशिष्ट, साध्वी, विनम्र, शीलवती, प्रकाशवती, मेधामयी, प्रकाशमयी, श्रद्धामयी, तपोमयी, व्रतनिष्ठा, धर्मनिष्ठा है। ऋग्वेद में कहा गया है कि

''अखंडिता, अर्चना, अक्षतरूप से भरणपोषण करने वाली हो।
अतिशय प्यारी दिव्यगुणी माँ तुम विदुषी, सुखदाता व जनकल्याणी हो''।।

तुम दिव्यगुणों से युक्त पुत्रों के साथ आयो अर्थात् उत्तम गुणों से युक्त संतान पैदा करो। मनुस्मृति में कहा गया है कि जिस समाज में नारी का उचित सत्कार, मान और प्रतिष्ठा की जाती है, वहां दिव्य उत्तम गुणों वाली सन्तान होती है। वेद आदि शास्त्रों में नारी के सम्मान में अनेक गाथाएं भरी पड़ी हैं, परन्तु भौतिकता की चकाचौंध में विशेषकर विदेशी शासन काल के बाद नारी की दशा में गिरावट आयी। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महर्षि दयानंद सरस्वती और ज्योतिबाफुले आदि समाज सेवियों ने स्त्री शिक्षा, बाल-विवाह का विरोध, सती-प्रथा के अंत और विधवा पुनर्विवाह के लिये आन्दोलन चलाकर अथक प्रयास किए, जिसके फलस्वरूप नारी अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करने में काफी हद तक आज सफल हुई है। आज की परिस्थितियों को देखते हुए नारी को और अधिक शक्तिशाली बनाना होगा। इसके लिए समाज को भी जागरूक करना होगा। नारी उत्पीड़न के ऐसे मामलों में त्वरित और कठोरतम दंड दिया जाना चाहिए। माता-पिता, आचार्य और परिवार के लोग बच्चों को नैतिक शिक्षा दें, जिससे उनमें सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, प्रेम, दुर्गुणों से विरोध और सदगुण उत्पन्न हों, वे बड़ों का सम्मान करना सीखें। समाज में चारित्रिक पवित्रता और समरसता लाकर नारी के प्राचीन गौरव को हम पुनर्स्थापित कर सकते हैं।

एक-दूसरे के पूरक हैं स्त्री-पुरुष : हाल ही में दिल्ली में घटी सामूहिक दुष्कर्म की वीभत्स और घिनौनी घटना ने न केवल पूरे भारत को झकझोर के रख दिया है, बल्कि हमारे समाज में अपने बने स्त्री-पुरुष के आपसी समीकरणों पर हमें पुनर्विचार करने के लिए मजबूर भी कर दिया है। एक वर्ग सामंतवादी विचार धारा और ओछी मानसिकता से ग्रसित लग रहा है, जो पुरुष व महिलाओं के लिए अलग-अलग मापदंड चाहता है। इस मत के लोग यह नहीं समझ पा रहे हैं कि इस दोहरी मानसिकता की उपज उस समय की है जब हमारी आधी आबादी अर्थात् अधिकांशतः महिलाएं अशिक्षित थीं। आज जमाना बदल चुका है। हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं, और समानता की ओर अग्रसर हैं। इन दोहरे मापदण्डों के लिए इस आधुनिक समाज में कोई स्थान नहीं है, बल्कि अपने बच्चों के लिए एक अच्छा उदाहरण बनें और लड़का-लड़की दोनों को बिना भेदभाव के सामाजिक रूप से मानवीय गुणों से पोषित करें।

इन्हें खरीदना नामुमकिन

विवेक कुमार गुप्ता बी.कॉम. II

भोजन और व्यंजन खरीदे जा सकते हैं, भूख नहीं।
किताबें खरीदी जा सकती हैं, परन्तु बुद्धि नहीं।
मूर्तियाँ खरीदी जा सकती हैं, भगवान नहीं।
मकान खरीदा जा सकता है, परिवार नहीं।
लोग खरीदे जा सकते हैं, मित्र नहीं।
दवा खरीदी जा सकती है, जीवन नहीं।
शास्त्र-वेद खरीदे जा सकते हैं, ज्ञान नहीं।
शरीर के अंग खरीदे जा सकते हैं, आत्मा नहीं।
मनोरंजन के साधन खरीदे जा सकते हैं, आनन्द और खुशी नहीं।

Scanned by CamScanner

प्राणों का मूल्य

आरती गौतम बी.एस-सी.।

एक राजा था। वह छोटी-छोटी बात पर लोगों को फांसी की सजा सुना देता था। दो लोगों में विवाद हो जाए, तो दोनों को ही फांसी की सजा दे देता था। इस बात से लोगों ने न्याय की गुहार लगाना बंद कर दिया। प्रजा परेशान हो गई, लेकिन राजा को कौन समझाता?

एक बार राजा शिकार खेलने गया। जंगल में रास्ता भटक गया। प्यास से राजा का बुरा हाल होने लगा। दूर-दूर तक राजा को पानी नहीं मिला। कुछ देर बाद उसे एक संत की कुटिया दिखाई दी। उसने संत से कहा- ''पानी पिला दो!''

संत बोला- ''मेरे पास गंदा पानी है'' जिससे आप बीमार पड़ सकते हैं। राजा ने कहा- गंदा पानी ही पिला दो, कम से कम प्राण तो बच जायेंगे। संत ने कहा- लेकिन आधा राज्य आपको मुझे देना होगा। राजा ने शर्त मान ली। पानी पीते ही राजा की तबियत खराब होने लगी। संत ने कहा- औषधि भी मेरे पास है, लेकिन इसके लिये बाकी का राज्य भी मुझे देना होगा। राजा ने कहा- मंजूर है, प्राण तो बच जायेंगे। राजा कुछ देर बाद ठीक हुआ, तो संत ने कहा- मैं जंगल में घुमने के अपराध में आपको फांसी देता हूँ। राजा बोला- मैंने जिन प्राणों की रक्षा के लिये आपको सारा राज्य सौंप दिया, वे प्राण आप कैसे ले सकते हैं? संत ने कहा- जिनके प्राण आप लेते रहे, क्या उनके प्राणों का कोई मूल्य नहीं? राजा निरूत्तर था, उसने तत्काल माफी मांगी। संत ने राजा का राज्य वापस कर दिया।

कथा मर्म: जिसे आप खुद के लिए उचित नहीं समझते, उसकी अपेक्षा दूसरों के लिए भी नहीं करनी चाहिये। ❖

भारत की दुर्दशा

डॉ. हीरेश गोयल
प्रवक्ता, वाणिज्य संकाय

जन्तर-मन्तर से हुई मुनादी, अन्ना ने आवाज़ लगा दी।
आजादी से पहले लूटा, अंग्रेजों, बटमारों ने।
और बाद में मिलकर लूटा, हमको सिर्फ हमारों ने॥
नहीं शिकायत-शिकवा कोई, परदेशी तूफानों से।
डरती शमा देश की अब तो, अपने ही परवानों से॥
लोकतंत्र की चिता सजा दी, संविधान को धता बता दी
हिला दिया विश्वास न्याय से, सत्ता के गलियारों ने॥
आजादी से पहले लूटा, अंग्रेजों बटमारों ने।
और बाद में मिलकर लूटा, हमको सिर्फ हमारों ने॥
कुर्सी की आँखों में पुतली, दीखे आदमखोर की।
राजपथों से ज्यादा बेहतर, गली किसी भी चोर की॥
घोटालों की लाईन लगा दी, बलिदानों की कथा सुना दी।
भुला दिया इतिहास शहीदों का, इन खूनी मक्कारों ने॥
आजादी से पहले लूटा अंग्रेजों बटमारों ने।
और बाद में मिलकर लूटा हमको सिर्फ हमारों ने॥
मानवता के प्राणों की प्यासी, है रिश्वत इस दौर की।
जनता को है अभी प्रतीक्षा, लोकपाल सिरमौर की॥
भ्रष्टाचार की नींव जमा दी, आतंकवाद को राह दिखा दी।
लूटा अपनी भारत माँ को, नेताओं, गद्दारों ने॥
मुस्टंडे मक्कारों ने, भ्रष्ट सरकारों ने। ❖

Scanned by CamScanner

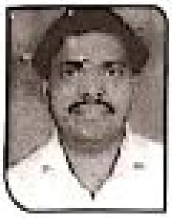

ग्लोबल कूलिंग व जलवायु परिवर्तन पर ग्लोबल वार्मिंग का प्रभाव

Impact of Global warming on Global Cooling and Climate Changes

Dr. Somvir Singh (Asstt. Professor) Dept. of Geography

विश्व में बिगड़ते हुये पर्यावरण सन्तुलन एवं प्रदूषण के कारण पृथ्वी के तापमान में जो निरन्तर वृद्धि हो रही है, उसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं। ग्लोबल वार्मिंग की लम्बी चर्चा के बीच एक चौंकाती सच्चाई ग्लोबल कूलिंग की आई है। जब ताप तेजी के साथ बढ़ता है, बहुत खूब बढ़ता है तो उसके प्रभाव से बर्फ तेजी से पिघलती है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि जब बर्फ पड़ती है या जमी रहती है तो ठण्ड नहीं पड़ती मगर जब वह पिघलती है तो गलन वाली ठण्ड पैदा होती है। यह स्थिति अब आगे नजर आ रही है ग्लोबल वार्मिंग पृथ्वी पर गरमाहट लायेगी, बर्फ पिघलेगी और तब ग्लोबल कूलिंग की स्थिति आ जायेगी। अब प्रश्न उठता है कि क्या है ग्लोबल कूलिंग? कड़कड़ाती ठण्ड की सुबह नलों में पानी नहीं आया तो किसी ने अनुभव आधारित सलाह दी कि नल के पाइप पर मिट्टी के तेल में भीगा कपड़ा लपेटिये और उसमें आग लगा दीजिए। ऐसा ही किया गया, नल के पाइप में जमा पानी पिघला और पहले टप-टप-टप फिर पतली धार लिये बेहद ठण्डा पानी बाहर आने लगा, यह अनुभव छोटा और सहज जरूर है मगर आज की परिस्थिति से जुड़े एक बड़े खतरे की ओर ईशारा भी कर रहा है। वह है ग्लोब कूलिंग।

पृथ्वी पर जल और हिम की स्थिति समय-समय पर बदलती रहती है। इसके पीछे एक महत्वपूर्ण कारण जलवायु में परिवर्तन की स्थिति है। हजारों साल पहले यह धरती अधिकांश स्थानों पर बर्फ की सफेद चादर ओढ़े हुये थी। आज से कोई दस पन्द्रह हजार वर्ष पूर्व यूरोप, उत्तरी अमेरिका तथा उसके नजदीक के क्षेत्र व कुछ अन्य स्थान पूरी तरह से भारी बर्फ की चपेट में थे। शोधकर्ताओं को कुछ ऐसे पत्थर प्राप्त हुए हैं जो इस बात की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं कि यहां कभी हिमनदियां हिलोरें लिया करती थीं। उत्तरी गोलार्द्ध का एक बड़ा हिस्सा बर्फ से ढंका हुआ था। मौसम विदों ने इसको अब तक का बर्फ का सबसे बड़ा साम्राज्य कहा है। इसके बाद इससे पूर्व की धरती पर कितने हिम युगों का आगमन हुआ, इन हिम युगों ने धरती की जलवायु में गंभीर परिवर्तन पैदा किया और उसी परिवर्तन के कारण ठंडक की स्थिति घटी बढ़ी है।

आगे बढ़ने से पहले ठण्ड से जुड़ी कुछ रोचक घटनाओं को याद कीजिये :

- वर्ष 2008 के जाड़ों में खबर आयी थी पूसा संस्थान के खेत में बर्फ के कण देखे गये।
- वर्ष 2009 में दिल्ली के इण्डिया गेट पर बर्फ के क्रिस्टल मिले।
- वर्ष 2005 में मुम्बई में अचानक बर्फबारी हुई तो लोग सकते में आ गये।
- दिसम्बर 2004 की शुरूआत में हिमाचल प्रदेश की निचली पर्वत श्रृंखलाओं का सफेद बर्फ से ढक जाना चौंकाने वाली घटना थी।

जलवायु परिवर्तन से एक-दो देश या स्थान विशेष नहीं बल्कि विश्व स्तर पर मौसम में गड़बड़ी जारी है जो ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव के अतिरिक्त प्रभाव के रूप में ग्लोबल कूलिंग की दस्तक दे रही है। हमारी धरती का लगभग दो तिहाई भाग पानी से घिरा हुआ है जो कभी भी ठण्डा होकर बर्फ बन जाने की आशंका प्रकट करता है। कुल बर्फ का दसवां भाग केवल दक्षिणी ध्रुव प्रदेश में ही है। यहां सबसे ऊंची सतह पर बर्फ की मोटाई लगभग 14 हजार फुट आंकी गयी है। यह मोटाई एक तरह से खतरे की घंटी है और पृथ्वी वासियों को सुनामी के कहर से भी कई गुना अधिक खतरे की सम्भावना जताते जलमग्न करने की चेतावनी है। बर्फ की औसत ऊँचाई 75 सौ फुट और मोटाई 66 फुट आंकी गयी है। यही नहीं एक चेतावनी यह भी है कि दक्षिणी ध्रुव की बर्फ ग्रीन हाउस गैसों की गरमाहट महसूस कर रही है अगर कभी ये बर्फ पिघल गई तो हिंद महासागर में दो सौ मीटर तक पानी बढ़ जायेगा जो एक तरह से प्रलय और भीषण ठण्ड की स्थिति यानि 'ग्लोबल कूलिंग' होगी।

Scanned by CamScanner

ग्लोबल वार्मिंग से पिघलते हिमालय से निकलेगी ठण्डक

गरमाती धरती का कहर, बढ़ती कार्बन डाईऑक्साइड के बढ़ते प्रदूषण के कारण बिखरा कचरा हिमालय को तबाह करने की कोशिश में है। भारतीय अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने बताया है कि हिमालय पर बिछे ग्लेशियर तेजी से सिकुड़ रहे हैं और लुप्त होने के कगार पर हैं। भारतीय क्षेत्र के ग्लेशियरों पर निगरानी रखने के लिए अहमदाबाद में स्थित स्पेस एप्लीकेशंस सेंटर में एक ग्लेशियोलॉजी परियोजना चलाई जा रही है। पहली बार ठोस सबूतों के साथ भारत के स्पेस एप्लीकेशंस सेंटर द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार हिमाचल प्रदेश के क्षेत्र में बसपा बेसिन में चार ग्लेशियर लगभग लुप्त प्राय होने की स्थिति में है। चार ग्लेशियर तो तबाही के कगार पर जा पहुँचे हैं। बाकी पन्द्रह अन्य ग्लेशियर लगभग खस्ता हालत में हैं। ये सभी ग्लेशियर छितरा रहे हैं। यह चौंकाने वाला तथ्य है कि इन ग्लेशियरों पर जहां एक ओर जाड़ों में बर्फ जम रही है वहीं दूसरी ओर यह गर्मी में बढ़ते ताप से ज्यादा पिघल रहे हैं। हालत यह है कि अभी तापमान में आया थोड़ा सा बदलाव भी इन्हें विचलित कर रहा है।

आँकड़ों पर आधारित हकीकत यह है कि वर्ष 2000 से 2002 के दौरान ग्लेशियरों की काया से 0.2347 क्यूबिक वर्फ लुप्त हो गयी थी। अधिकांश ग्लेशियरों की उपरी परत पिघल कर बह गयी। जाड़ों में ठंडक कम हो रही है और गरमाहट पनप रही है। इस कारण जाड़ों में भी धीरे-धीरे बर्फ पिघल रही है। रिपोर्ट के अनुसार चार ग्लेशियरों की बर्फ निर्धारित आवश्यकतानुसार नहीं पिघलती है। असल में उनके ऊपर प्रदूषण के कारण मलवा पड़ा है। जो नई बर्फ को नहीं जमने देता। इस तरह से इन चार ग्लेशियरों पर बर्फ की मात्रा बहुत कम हो गयी है। जिससे जल्दी ही इनका अस्तित्व मिट सकता है और हिमालय बर्फहीन हो जायेगा। अगर इस क्षेत्र की जलवायु दशाएं ठीक वर्ष 2000 जैसी बनी हैं तो वर्ष 2040 तक ये चारों ग्लेशियर पूरी तरह से लुप्त हो जायेंगे। बल्कि खतरा यह भी है कि जिस तरह से तापमान हर वर्ष तेजी से बढ़ रहा है, ये ग्लेशियर और भी पहले समाप्त हो सकता है। अभी तक ग्लेशियरों के लुप्त होने की जांच उतने ठोस सबूतों के साथ नहीं हो पाती थी मगर अब स्पेस एप्लीकेशंस के सेन्टर ने इंडियन रिमोट सेंसिग सेटेलाइट की मदद ली है और हिमालय पर तिल-तिल मरते ग्लेशियरों की कराह सुनी है।

मानव द्वारा प्रदूषणकारी तत्व के लिए 'एयरसोल' वातावरण में गंभीर स्थिति पैदा कर रहे हैं। इन कणों का इस हद तक जमावड़ा हो गया है कि वह सूरज से आती गर्म किरणों को वापिस अंतरिक्ष में धकेल रहे हैं। इस तरह से गरमाहट में कटौती होती चली जा रही है, फलस्वरूप धरती पर ग्लोबल कूलिंग की स्थिति पैदा हो रही है। यह एयरसोल दो प्रकार के असर दिखाती है। एक पॉजीटिव फोर्सिंग गर्मी हटा ठंडक का स्वागत करती है। बदलती जलवायु नेगेटिव फोर्सिंग पैदा कर रही है जो ग्लोबल कूलिंग का प्रभाव ला रही है। एयरसोल की स्थिति अभी आंशिक रूप से नेगेटिव है तो यह भी तय है कि कुछ हद तक एक तो सूर्य किरणों को लौटा ही रही है। इस तरह से धरती की बदलती जलवायु, मुम्बई जैसी जगह पर सालों साल बाद तेज ठण्ड पड़ना, दिल्ली में ठण्ड में उतार-चढ़ाव आना सभी कुछ इस बात के संकेत हैं कि मौसमीय फेरबदल कुछ न कुछ ऐसा कर रही है जो पहले कभी न था। जिस प्रकार से ग्रीन हाउस गैस पृथ्वी के वायुमण्डल पर मंडरा रही है। उसी तरह एयरोसोल भी अपना जमावड़ा लेकर वापसी का टिकट कटाते रहेंगे।

नये भूगर्भीय युग की ओर कदम

जो धरती से सचमुच करते प्यार, वही कर रहे इससे खिलवाड़, जी हां, इस प्रकार के तथ्य स्पष्ट हो रहे हैं कि स्वयं मानव के खिलवाड़ धरती का भूगोल बिगाड़ रहे हैं और जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं जिसमें हिमयुग का पदार्पण भी एक है। हकीकत तो यह है कि धरती इस समय भीषण बदलाव के दौर में है। यह बदलाव प्राकृतिक रूप लिये हुये है। मगर इसके पीछे हाथ हमारा ही है। धरती पर मानव गतिविधियों ने ही नये भूगर्भीय युग को जन्म दिया है। धरती पर 11500 वर्ष पूर्व होलोसीन युग की शुरूआत हुई थी। कुछ भूगर्भशास्त्रियों का मानना है कि धरती पर मनुष्य की छेड़छाड़ और अपना कुनबा बढ़ाए जाने से नया एन्थ्रोपोसीन युग आ चुका है। मनुष्य इस धरती पर जो कुछ कर चुका है इसकी भूगर्भीय परीक्षा होनी बाकी है। कहना न होगा कि हमारी अपनी करतूतों ने ही ग्लोबल वार्मिंग की स्थिति पैदा की है। यही स्थिति वह बीच का दौर लायेगी जो भीषण ग्लोबल कूलिंग लायेगी। इस स्थिति को हर कोई झेल ले कतई मुमकिन नहीं ''इससे बचे सो जावे काशी'' वाली बात है वरना ठण्ड की भोर कितनों का दिल जमा दे, कहा नहीं जा सकता।

Scanned by CamScanner

फिर मिलेगा हिमयुग का तोहफा

हिमयुग के आगमन को लेकर एक बड़ा ही रोचक चुटकुला यों है कि ''जब हिम युग की गम्भीर दशा आ जायेगी तो मुँह से निकले शब्द भी जम जाया करेंगे, तो पहले का जवाब था कि बड़ा आसान होगा, कान के पास लाइटर जलायेंगे शब्द पिघलेंगे और सुन लिया जायेगा।''

बात हंसी में ही न उड़ा दी जाये और सोचा जाये तो एक बात तो तय है कि ठण्ड की यह स्थिति गर्माहट से कहीं ज्यादा भयंकर होगी। ऐसे में फिर सूरज की चाह जागेगी। विश्व स्तर पर इस बात को लेकर कई महत्वपूर्ण शोधकार्य हुये हैं कि धरती की जलवायु में परिवर्तन के पीछे सूरज का ही हाथ है।

इस बात की पुष्टि की गई है कि सूर्य का ताप ही धरती की गर्माहट और हिमयुग के आगमन की स्थिति लाता है। इस बात की भी पुष्टि की गयी है कि धरती पर आने वाले हिमयुग सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की परिक्रमा के पथ में होने वाले परिवर्तन के कारण ही जन्म लेते हैं और धरती की सम्पूर्ण व्यवस्था को प्रभावित करते हैं। अब तक हमारी पृथ्वी 8 हिमयुगों को झेल चुकी है। अब हिम युग की कल्पना फिर हकीकत में बदलती नजर आ रही है।

अधिक जनसंख्या वाले देशों से निकली कार्बन डाई ऑक्साइड की बड़ी मात्रा अण्टार्कटिका के ऊपर जा पहुँची है जो इस बर्फ के पिघलाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। तब पिघलती बर्फ धरती पर न केवल ठण्डा जल बहाकर सागर के जलस्तर को बढ़ायेगी बल्कि ग्लोबल कूलिंग भी लायेगी। इन परिस्थितियों को देखते हुये अब फिर से इस बात का शक होने लगा है कि हिमयुग अवश्य और जल्दी आयेगा। ❖

मनुष्य और अनुशासन

डॉ. बी. डी. उपाध्याय
मुख्य अनुशासन अधिकारी

अनु+शासन = अनुशासन- शासन में अनु उपसर्ग लगा हुआ है, जिसका अर्थ है अपना अथवा स्वयं का शासन। अत: मनुष्य जब स्वयं ही शासन में रहेगा तो अव्यवस्थाएं स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। प्रकृति स्वशासित है। क्योंकि प्राय: देखा जाता है कि समय पर लताओं में पुष्प प्रस्फुटित होते हैं। समय पर फसलें उगती हैं। समय पर ऋतु परिवर्तन होता है। समय पर सूर्य और चन्द्र प्रकाशित होते हैं। समय-समय पर ग्रह-नक्षत्र रूप परिवर्तित करते हैं। अत: मनुष्य को भी प्रकृति के नियमों का पालन करना चाहिए। समय व्यतीत होने पर केवल पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं होता। कहा भी है कि-

''समय जात नहीं लागत बारा।''

विद्यार्थी जीवन में समय बहुत शीघ्रता से पलायन करता है, जो विद्यार्थी समय चक्र के साथ-साथ समय की धुरी पर घूमते रहते हैं, वे जीवन को सार्थक बना लेते हैं, तथा उन्हीं के द्वारा देश, समाज और संस्कृति का विकास होता है। जबकि ऐसे छात्र जो समय और संस्कारों की अवहेलना करते हैं, वे देश, समाज और संस्कृति के लिए अभिशाप होते हैं। मनुष्य से अधिक अनुशासनबद्ध जग-जीवन में ऐसे भी जीव हैं जो मानव के सहचर हैं। जैसे-पालतू जानवर गाय, भैंस, बकरी, ऊँट, हाथी, कुत्ता इत्यादि। ये जीव अपने सारे कार्य बड़ी ही पाबंदी के साथ सम्पन्न करते हैं। गाय, भैंस आदि समय से दूध दुहाती है। बैल और ऊँट अपनी गाड़ी को सड़क पर नियमानुसार खींचते हैं तथा हाँकने वाले के इशारे मात्र से चलते हैं। कुत्ता घर की रखवाली पूरी पाबंदी के साथ करता है। स्वच्छता का ध्यान भी जानवर रखते हैं। कुत्ता जिस स्थान पर बैठता है, पहले वहाँ अपनी पूँछ (Tail) से उस स्थान को झाड़ लेता है। अत: मनुष्य को भी प्राकृतिक जीवों से स्वच्छता, समयबद्धता, सामूहिकता, एकजुटता तथा प्रेम का भाव अपने मन में अवश्य धारण करना चाहिये। ''धारयति सो धर्म:'' यही धर्म और कर्त्तव्य कहता है कि जो धारण करने योग्य है उसे ग्रहण करते हुए अयोग्य को त्यागना चाहिये। अत: अनुशासन जीवन में बहुत आवश्यक है। अनुशासन से ही हम पूरे विश्व को भाईचारे की डोर में बाँध सकते हैं तथा विश्व को विनाश के पथ से बचा सकते हैं। ❖

Scanned by CamScanner

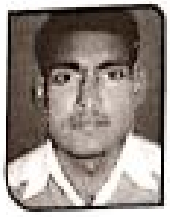

लेख

सामाजिक परिवर्तन में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

लखमी चन्द्र बी.एड. प्रवक्ता

भारत देश एक ऐसा देश है यहाँ अनेक जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं तथा विभिन्न यात्री हमारे देश में आये और चले गये लेकिन सभी हमारी सभ्यता, संस्कृति, धर्म निरपेक्षता, नैतिकता, सामाजिक व आर्थिक सम्पन्नता के कायल रहे हैं क्योंकि महान विभूतियों ने इस भारत की पावन भूमि पर जन्म लिया है। जो हमारी धरा को सुशोभित करते रहे हैं। लेकिन इसके साथ-साथ इसमें सबसे बड़ी भूमिका हमारी एकता, अखण्डता व आपसी सहयोग की रही है तथा इसके लिए हमारे सूचना भेजने के माध्यमों की भूमिका मुख्य रही है। जनसंचार माध्यमों का बोलवाला रहा है। भारत में जनसंचार माध्यमों को चौथा स्तम्भ कहा जाता है क्योंकि सूचना भेजने की आवश्यकता आदिकाल से ही मानव के सामने रही है, वह कबूतर की मदद से अपने संवादों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता था। इस कार्य में दूतों की भी मदद ली जाती थी फिर डाकघर ने इस कार्य को सफल बनाया। सूचना सम्प्रेषण के क्षेत्र को बढ़ाने का प्रारम्भिक साधन समाचार पत्र थे। बाद में दूरभाष (टेलीफोन) तार तथा बेतार के तार नामक साधनों के रूप में विकसित हुए।

मीडिया वर्तमान समय में मानव की बहुत बड़ी आवश्यकता बन गई है,जिस तरह से मानव के जीवन में रोटी, कपड़ा व मकान की आवश्यकता है। उसी तरह संचार मानव की चौथी आवश्यकता के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। क्योंकि वर्तमान आधुनिकता में अगर मानव को अपने आपको जीवित रखना है तो उसको दूरसंचार का सहारा लेना ही पड़ेगा।

वर्तमान समाज में दूरसंचार की ही महत्वपूर्ण भूमिका है। ज्ञान के क्षेत्र का विकास विश्वव्यापी स्तर पर कर दिया है। और मनोरंजन के संसार में क्रांतिकारी वातावरण की सृष्टि हो रही है। वर्तमान में मीडिया एक बच्चे के लिए बेबी मीटर, एक बुजुर्ग के लिए बुढ़ापे का सहारा, एक दोषी को सुधारने का मौका (सीमा पर एक आर्मीमैन का मनोरंजन का सहारा तथा आम आदमी के जीवन में मनोरंजन का महात्वपूर्ण साधन है)।

एक समय था जब हमें यह नहीं पता होता था कि देश में किस पार्टी की सरकार बनी है, किसे वोट देना है, पौष्टिक आहार क्या होता है, एक गर्भवती महिला को क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए, शिक्षा के क्षेत्र में क्या-क्या परिवर्तन हो रहे हैं, लेकिन वर्तमान समय में संचार के माध्यमों ने यह सब इतना आसान कर दिया है कि देश-विदेश की घटनायें भी कुछ ही सेकेण्डों में हमारे सामने होती हैं।

विश्व के किसी भी भाग में पल-प्रतिपल घटित होने वाले राजनीतिक घटनाक्रम से, सामाजिक घटनाक्रम से जुड़ी खबरें या फिर प्रथम दुनिया की खबरें-सभी के विषय में जानने की उत्कंठा एक प्रबुद्ध नागरिक को रहती है, आज प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि देश में नया क्या हो रहा है, किस-किस देश में कौन-कौन सी घटना घटित हो रही है। उसकी जानकारी स्वयं को सबसे पहले होनी चाहिए और ये सब जानकारियाँ उसे दूरसंचार (मीडिया) से ही मिलती है 1990 के पश्चात् या यों कहें कि आजादी के बाद से मीडिया सम्प्रेषण के माध्यमों ने समाज के स्वरूप में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिया है तथा इस उन्नति के शिखर को छूने के लिए मीडिया का सबसे अधिक योगदान रहा है।

आधुनिकता की दुनिया में, दृढ़ संकल्प दिखाना है। संचार क्रान्ति के द्वारा, जीवन सफल बनाना है।।
उत्तम सम्प्रेषण के द्वारा भारत को श्रेष्ठ बनाना है। उच्चकोटि की शिक्षा देकर, सामाजिक चेतना लाना है।। ❖

अगर हम सामने आहूत समस्या के समाधान का हिस्सा नहीं हैं तो हम ही समस्या हैं।

Scanned by CamScanner

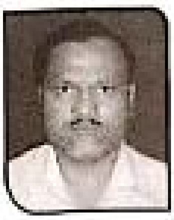

राष्ट्रभावना

'एक मनोवैज्ञानिक एतिहासिक रेडियो एकांकी'

डॉ. रोहिताश कुमार 'पाराशर'
प्राध्यापक हिन्दी विभाग

पात्र– **पात्रों का परिचय**

जीजाबाई : छत्रपति शिवाजी की माता

राष्ट्रभावना : जीजाबाई के अन्तर्मन से प्रकट देश प्रेम

रामदास : शिवाजी के गुरू

लखूजी जाधवराव: जीजाबाई के पिता

स्थान व समय : (सायंकाल 7 बजे देवगिरी राज्य के भारत माता के मन्दिर में सायंकालीन बेला का घण्टा बज रहा है। जीजाबाई महल के अहाते में चलती–फिरती घूम–घूमकर ''अपने आप स्वयं से बातें कर रही हैं।'')

जीजाबाई : (स्वयं से बातें करते हुए) अब तो भारत माता के मन्दिर में भक्तों की संख्या भी दिन–प्रतिदिन घटती जा रही है। ऐसा लगता है मानो निशा ने इन्दु को परास्त करके अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया हो। इस म्लेच्छ औरंगजेब की पैशाचिक सेना ने राष्ट्र में आतंक मचा रखा है। आज सद्वृत्तियां मुंह छिपाये खड़ी हैं और कुवृत्तियां विजय गर्व से इठलाती फिरती हैं। गांव में, नगर में, औरंगजेब की सेना के नर–पिशाच मँडराते फिरते हैं।''

(पिता जाधवराव का प्रवेश)

जाधवराव : पुत्री! तुम यह एकान्त में अकेली स्वयं से क्या बोलती रहती हो।

जीजाबाई : सब कुछ जानते हुए भी आपकी आँखों पर परदा पड़ा हुआ है पिताश्री।

जाधवराव : क्या अनहोनी बातें किये जा रही हो, पर्दा हमारी नहीं तुम्हारी आँखों पर पड़ा हुआ है, बड़ों से कैसे बातें की जाती हैं। इसका सलीका भी तुम्हें नहीं आता।

जीजाबाई : उस लुटेरे म्लेच्छ यवन के आगे सिर झुकाकर मातृभूमि को अपमानित करने वालों को तो सलीका आता है।

जाधवराव : पहेलियां न बुझाकर सीधे–सीधे बताओ, तुम चाहती क्या हो?

जीजाबाई : मेरी चाहना पर पानी फेरने वालो, भारतीय नारी की मर्यादा की जब अपने ही रक्षा नहीं कर पाते हैं तो नारी स्वयं कुछ कर गुजरने के लिए विवश हो उठती है।

जाधवराव : क्या विवशता है पुत्री, पिता होने के नाते मुझे तो बताओ।

जीजाबाई : भारत माता यानि भारतीय नारी की विवशता पिता श्री, जिसके लिए मेरे भाई और मेरे पति शाहजी भौंसले ने घुटने टेक दिये हैं।

जाधवराव : पुत्री हम विवश हैं, औरंगजेब की विशाल सेना का मुकाबला हम नहीं कर सकते।

जीजाबाई : सेना का सामना नहीं कर सकते हैं, तो राष्ट्र के लिए वीरगति तो प्राप्त कर सकते हैं। मेरे अपमान का बदला तो ले सकते हो। (खड़ाऊँ की खटखट आवाज के साथ बिना उत्तर दिये प्रस्थान)

जीजाबाई : चले गये मेरे प्रश्न का कोई उत्तर दिये बिना। मैं भी अपने कक्ष में जाती हूँ (ध्वनि, जाने की खट–खट खट खड़ाऊँ की आवाज)

(कक्ष में प्रवेश करते ही रामायण पर दृष्टि पड़ती है जो खुली हुई है) अरे! कल मैं रामचरित मानस को पूजा कक्ष से ले आई थी वह यहीं ज्यों की त्यों खुली रखी है। कितनी सुन्दर चौपाई है। यह नन्हा सा बालक लक्ष्मण भी बड़ा वीर बालक है। देखो! कैसा? निडरता से कह रहा है–

बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं। कबहु न असि रिस कीन्ह गोसाईं।।
इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं।।

Scanned by CamScanner

हे भवानी माँ क्या मेरे गर्भ में पल रहा यह बालक भी ऐसा वीर होगा क्या? हँसती है धीरे-धीरे (ह ह ह..) मैं भी कैसी पगली हूँ। क्या? क्या? सोचती रहती हूँ। अरे! घड़ी बारह बजा रही है अब मुझे सोना चाहिये। (कुछ ही क्षणों में बाई को नींद आ जाती है और बाई स्वप्न लोक में चली जाती है स्वप्न में राष्ट्रभावना उदित होती है क्योंकि जीजाबाई राष्ट्रीय चिन्तन करते हुए सोती है।")

राष्ट्रभावना : बाई किस चिन्तन में खोई हुई हो, आज आप कैसी विकट परिस्थिति में हो और आप क्या सोच रही हो?

जीजाबाई : हे बाले! तुम कौन हो? मेरी निद्रा में खलल क्यों डाल रही हो ?

राष्ट्रभावना : पहले तुम यह बताओ कि तुम इतनी व्याकुल क्यों हो?

जीजाबाई : क्या बताऊँ बाले! आज राष्ट्र की चिन्ता किसी को नहीं है, मेरे पिता, भाई और पति औरंगजेब के सरदार, सूबेदार, सिपहसालार हैं। पद के मद में अपनी राष्ट्रीयता को ही भूल गये हैं। भारत माता का अपमान हो रहा है, लेकिन सभी भारतीय सोये हुए हैं। कोई भी भारत माता का अपमान करने वालों से कुछ नहीं कहता। राष्ट्रमाता के साथ अत्याचार, अनाचार चरमसीमा पर पहुंच चुका है।

राष्ट्रभावना : तो फिर आप क्या कर सकती हैं ?

जीजाबाई : मैं यह सब नहीं होने दूंगी इस म्लेच्छ औरंगजेब और इसकी म्लेच्छ सेना ने कितनी ही निर्दोष कन्याओं और स्त्रियों की आबरू लूटी है। मेरे पिता, भाई और पति ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। क्या हो गया है? बहादुर कहलाने वाले भारतीयों को।

राष्ट्रभावना : बाई कुछ करो, सोचो, राष्ट्र को तुम जैसी मातायें ही बचा सकती हैं।

जीजाबाई : मैंने सोच लिया है बाले! मेरे गर्भ में यह जो शाहू वंश पल रहा है, इस वीर मराठे को मैं ऐसी शिक्षा और संस्कार दूंगी कि मेरा यह गर्भ आक्रान्ताओं, देशद्रोहियों का काल बनकर भारत की रक्षा करेगा। यह एक भारतीय माता का दृढ़ संकल्प है।

राष्ट्रभावना : बाई तुमने राष्ट्रानुकूल सोचा है। ऐसा सोचकर तुमने राष्ट्र भावना को सुदृढ़ किया है, नया यौवन प्रदान किया है, बाई तुम धन्य हो, राष्ट्रीयता तुम्हारी वन्दना करती है। तुमने ठीक ही तो सोचा है। तुमने अपने गर्भ को राष्ट्र को समर्पित करने का जो बीड़ा उठाया है। वह तुम जैसी भारतीय माताओं के लिए बड़े गर्व की बात है।

जीजाबाई : बाले ! क्या मेरा पुत्र म्लेच्छों से भारत माता को आजाद करायेगा, वह शकुन्तला के पुत्र भरत के समान सिंहों के दांत गिन सकेगा ?

राष्ट्रभावना : शकुन्तला के पुत्र भरत ने तो केवल सिंहों के बच्चों के दांत गिने थे, किन्तु तुम्हारा पुत्र तो शेरनी का दूध काढ़कर पीयेगा माते! शेरनी का दूध।

जीजाबाई : बाले! वह तो सतयुग का पुत्र था, यह तो कलयुग है।

राष्ट्रभावना : युग पुरुषों के लिए युग विशिष्ट नहीं होते माते। अनाचार का नाश करने के लिए ऐसे वीर हर युग में आते हैं और तुम्हारी जैसी माताओं की ही कोख में वे जन्मते हैं। यदि तुम्हारी जैसी माताओं के हृदय में राष्ट्रभावना के प्रति श्रद्धा हो।

जीजाबाई : यह राष्ट्रभावना कौन है?

राष्ट्रभावना : जानना चाहती हैं आप?

जीजाबाई : हाँ, जानने के लिए ही तो पूछ रही हूँ। (थोड़ी देर क्षणभर के लिए सन्नाटा, बाई का स्वप्न भंग हो जाता है।)

जीजाबाई : अरे तू तो चली गई, कहाँ गई बाले, अभी तो यहीं थी। (आश्चर्यचकित होकर!)

राष्ट्रभावना : मैं तो यहीं हूँ।

जीजाबाई : कहाँ!

राष्ट्रभावाना : यहीं।

जीजाबाई : यहाँ कहाँ ? प्रकट हो बाले।

Scanned by CamScanner

राष्ट्रभावना : तुम्हारे हृदय में, अन्त:स्थल की गहराईयों में।

जीजाबाई : तो बाहर आओ बाले।

राष्ट्रभावना : मैं सुसुप्ता अवस्था में हूँ माते! तुम्हें मुझे जगाना होगा। बाई तू हिम्मत मत हार। अपने मनरूपी रथ का सारथि अगर तू मेरी जैसी राष्ट्रभावना को ही बनायेगी तो तेरा स्वप्न अवश्य साकार होगा।

जीजाबाई : तो फिर जाग-राष्ट्रभावना-जाग-जाग -जाग राष्ट्रभावना। गाती है-

तू जाग भावना जाग-जाग, मेरे अन्तर्मन से जाग-जाग।
ओ! राष्ट्रभावना जाग-जाग
भारत माँ की वाणी सुन ले, वात्सल्यभाव का प्रण सुन ले।
तू जाग भावना.......................
हे जगत नियन्ता अब तो आ, माँ भारती का करुण-क्रन्दन सुनने।
पाप अधर्म बढ़ा जब से, अब पापाचार बढ़ा फिर से।
तू जाग भावना जाग-जाग, जब धेनु बिलखकर रोती है।
धरती की छाती फटती है, कवि-कविता दोनों सोते हैं॥
अन्तर में अन्तर खोते हैं, मेरे अन्तर्मन से जाग-जाग।
मेरे अन्त: स्थल की तू सृष्टि, मेरे हृदय चक्षु की तू दृष्टि॥
जाग भावना............जाग-जाग

राष्ट्रभावना : आँखें खोलो माँ!

जीजाबाई : कौन?

राष्ट्रभावना : मैं तुम्हारी पुत्री भावना

जीजाबाई : राष्ट्रभावना और मेरी पुत्री

राष्ट्रभावना : हाँ आपकी पुत्री

जीजाबाई : मेरे तो कोई पुत्री नहीं हुई।

राष्ट्रभावना : माँ! मैं राष्ट्रभावना तुम्हारी पुत्री हूँ। मैं तुम्हारे राष्ट्रचिन्तन से प्रकट हुई हूँ। सन्तों ने कहा है न!

जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी।।

तुमने राष्ट्रीय चिन्तन किया है और मैं राष्ट्रभावना के रूप में आपके हृदय की गहराईयों से परिपक्व होकर प्रकट हुई हूँ। अब मुझे आशीर्वाद दो माँ।

जीजाबाई : राष्ट्रभावना मैं तुझे चिरायु होने का आशीर्वाद देती हूँ। तू हर राष्ट्रमाता के अन्तस्थल में रहेगी और समय-समय पर प्रकट होकर माताओं के गर्भ से राष्ट्रभावना युक्त पौरुष को जन्म देगी। तू ही राष्ट्र प्रेमियों की पथ प्रदर्शिका बनेगी।

राष्ट्रभावना : धन्य हो माते, तुम्हें कोटि-कोटि धन्य।

जीजाबाई : राष्ट्रभावना!

राष्ट्रभावना : कहो माते!

जीजाबाई : तू करती क्या है?

राष्ट्रभावना : तुम जानना चाहती हो न कि मैं क्या करती हूँ?

जीजाबाई : हाँ बताओ न तुम क्या करती हो?

राष्ट्रभावना : तो सुनो मैं राष्ट्र विरोधी ताकतों से लड़कर हर युग में राष्ट्र भक्तों की प्रेरणा बनकर भारतमाता का अपमान करने वाली राष्ट्रघातक शक्तियों को कुचलती हूँ।

जीजाबाई : हे राष्ट्रभावना ! मैं एक प्रश्न यह भी पूछना चाहती हूँ कि वह मातायें कौन सी होती हैं जिनके गर्भ से युग पुरुष जन्म लेते हैं।

Scanned by CamScanner

राष्ट्रभावना : बाई आपने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। इसका उत्तर तो हर भारतीय माता को समझना आवश्यक है।

जीजाबाई : तो फिर शीघ्र बताओ राष्ट्रभावना।

राष्ट्रभावना : सुनो माते! यदि कोई माँ आदर्श चिन्तन, सात्विक भोजन करती है तो उसकी कोख से दिव्य बालक जन्म लेता है।

जीजाबाई : आदर्श चिन्तन और सात्विक भोजन क्या होता है?

राष्ट्रभावना : माते! कुरान, बाइबिल, गीता, महान एवं वीर पुरुषों की गाथाओं का पठन-पाठन और उनका राष्ट्रचिन्तन ही आदर्श चिन्तन है। मदिराहीन, माँसहीन, तीक्ष्ण पदार्थ रहित भोजन ही सात्विक भोजन है। ऐसे दिव्य परिवार में ही महापुरुष क्रान्तिकारी, देशभक्त, संत आदि जन्म लेते हैं। (अचानक बाई को बच्चे को जन्म देने की हल्की-हल्की पीड़ा होने लगती है।)

जीजाबाई : लगता है अब मेरा गर्भ बाहर आने को आतुर है। आह! आह! ओउम नमः शिवायः आह! ओम नमः शिवायः आह!

(बालक शिवाजी का जन्म)

बालक का रुदन (शिशु का रोना-अंग-अंगा-अंग अंगा) की आवाज।

जीजाबाई : अरे, यह कैसा दिव्य बालक है इसके अंग-प्रत्यंग से तेज झलक रहा है।

(खड़ाऊँ की खट-खट ध्वनि की आवाज)

जीजाबाई : लगता है कोई आ रहा है।

(गुरू-रामदास का प्रवेश)

रामदास : बाई!

जीजाबाई : कौन?

रामदास : बाई! मैं रामदास

जीजाबाई : गुरूजी के श्रीचरणों में बाई का प्रणाम स्वीकार हो।

रामदास : अखण्ड सौभाग्यवती भवः पुत्री

जीजाबाई : अखण्ड आदर्श पुत्रवती भव का आशीर्वाद दीजिये गुरूदेव।

रामदास : तथास्तु पुत्री! लाओ बालक मुझे दो।

जीजाबाई : लीजिये गुरूदेव (नम्रता के साथ)

(बालक की ओर देखते हुए आश्चर्य के साथ कहते हैं)

रामदास : ओह! बड़ा ही दिव्य बालक है। इसके ललाट, वक्षस्थल एवं भुजाओं पर शिवाजी का त्रिशूल सुशोभित है ऐसा लगता है बाई, मानों तुम्हारा पुत्र भगवान शिव का अवतार है।

जीजाबाई : इस दिव्य बालक को अपना आशीर्वाद दीजिये, गुरूदेव!

रामदास : बाई! बालकों पर तो गुरूओं का असीम आशीर्वाद रहता ही है फिर भी यह दिव्य बालक न जाने मेरे मन को क्यों अपनी ओर बरबस ही आकर्षित कर रहा है। पुत्री आज से यह शिवा कहलायेगा, म्लेच्छवंश का नाश करेगा यह वीर बालक। युगों-युगों तक 'जय शिवाजी-जय भवानी' की अमर ध्वनि से इसका नाम गूंजता रहेगा। इसकी ललाट रेखाएं स्वतः सब कुछ बता रही हैं।

जीजाबाई : मेरा बालक जाज्वल्यमान, परम तेजस्वी हो, गुरूदेव।

रामदास : तथास्तु बाई तथास्तु।

(परदा गिरता है)

किसी की बुराई तलाश करने की आदत उस मक्खी के समान है, जो सारे खूबसूरत शरीर को छोड़कर केवल घाव पर बैठती है।

Scanned by CamScanner

लेख

वैदिक साहित्य में मनोविज्ञान

भावना सारस्वत बी.एड. प्रवक्ता

वर्तमान समय में मन की जिस एकाग्रता के लिये साइकोलॉजीकल थेरेपी की महत्ता का अनुभव किया जा रहा है, उस मन पर वेदों में ऋषियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व दर्शन दिये हैं। यजुर्वेद में 'तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु' कह कर मन के कल्याण कारी संकल्प होने की कामना की है। मन का दृढ़ संकल्प होना आवश्यक है, अन्यथा बिना दृढ़ संकल्प के कोई भी काम पूरा नहीं किया जा सकता है। वैदिक विनियोग की प्रक्रिया में सर्वप्रथम मानसिक संकल्प होता है, तदनन्तर मन्त्रोच्चरण और उसके साथ सम्बन्धित क्रियाएं होती हैं। इसी मनस्तत्व की शक्ति से हम अपने सम्पूर्ण क्रिया कलाप संचालित करते हैं। मन चंचल होता है उसे स्थिर बनाने की आवश्यकता है। मन की चंचल स्थिति को एक वैज्ञानिक सिद्धान्त के माध्यम से समझा जा सकता है। मन नाभिक केन्द्रीय शक्ति है, मन के चारों ओर इलेक्ट्रोन के विचार प्रवाहित होते रहते हैं और केन्द्रक मन इन विचारों को नियंत्रित करता है। किरलियान नामक वैज्ञानिक ने एक अति संवेदनशील फोटोग्राफी का आविष्कार किया है जो व्यक्ति के मस्तिष्क के चारों और फैले हुए आभामण्डल का रंग व विस्तार बताता है। यह आभामण्डल (इलैक्ट्रोडायनेमिक फिल्ड) मनुष्य, पशु, पक्षी ही नहीं, अपितु वृक्ष के चारों ओर भी होता है जो जितना तेजस्वी होगा, उतना ही दूसरों को प्रभावित करेगा। जब मनुष्य मरता है तब वह आभामण्डल क्षीण होने लगता है। पूर्ण विसर्जित होने में उसे तीन दिन लगते हैं।

किरलियान की फोटोग्राफी जिस रहस्य को आज सिद्ध कर रही है, उसे भारत के योगी प्राचीन काल से जानते हैं। भगवान राम, भगवान श्रीकृष्ण, महात्मा बुद्ध, चैतन्य महापुरुषों के मस्तिष्क के पीछे प्रकाश का वृत्त बनाया जाता है जो इस आभामण्डल की ही सूचना देता है। वैज्ञानिकों, अन्वेषकों एवं दार्शनिकों ने जो भी नूतन ज्ञान-विज्ञान प्रदान किए वह इस मानस् तत्व के शिव संकल्प रूप का परिणाम है।

वैदिक संहिताओं में मानव मन से सम्बन्धित समस्त पक्षों का विशुद्ध विवेचन किया गया है। वैदिक मनोविज्ञान आध्यात्मिक चेतना से परिपूर्ण है, जो मनुष्य को पूर्णता प्रदान करता है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के समान दोषों को दूर कर इनका परिष्कार करता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में मन को ब्रह्म कहा गया है, यह सर्वशक्तिमान है और परमात्मा का स्वरूप है, अत: ब्रह्म है। मन सृष्टि का कर्ता है, अत: उसे ब्रह्म कहा गया है। इसी कर्तव्य के आधार पर उसे प्रजापति या सृष्टि-निर्माता बताया गया है। मन की कल्पना से ही यह सारा संसार मन जैसा चाहता है, वैसा होता है, अत: उसे सर्वम (सब कुछ) कहा गया है। मन की शक्ति अनन्त है, अत: उसे अनन्त और अपरिमित कहा गया है।

विजेता और पराजित में अन्तर

- विजेता हर समस्या के समाधान का हिस्सा होता है और पराजित हर समस्या का हिस्सा होता है।
- विजेता के पास हमेशा कुछ करने का एक प्रोग्राम होता है और पराजित के पास कुछ न करने का बहाना।
- विजेता कहता है 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं' ? पराजित कहता है 'यह मेरा काम नहीं है।'
- विजेता कहता है "यह कार्य मुश्किल जरूर है पर असम्भव नहीं",
  पराजित हर कार्य के लिए एक ही वाक्य कहता है "यह कार्य हो ही नहीं सकता"।
- विजेता टीम का हिस्सा होता है, पराजित टीम के ही हिस्से कर देता है।
- विजेता सोचकर बोलता है, पराजित बोलकर सोचता है।
- विजेता नम्रता के साथ ठोस दलीलें पेश करता है, पराजित कड़े शब्दों में कमजोर दलीलें पेश करता है।

Scanned by CamScanner

लेख

"ग्राम्य विकास के सम्बन्ध में सड़कों के निर्माण की भूमिका

डॉ. नीतू सैनी अर्थशास्त्र विभाग

भारत गाँव का देश है इसलिए भारतीय अर्थव्यवस्था को ग्रामीण अर्थव्यवस्था कहा जाता है। अत: स्वभाविक ही है कि यदि हमें भारत का विकास करना है तो सर्वप्रथम ग्रामीण क्षेत्र का विकास करना होगा। आज भारत सरकार भी ग्रामीण विकास हेतु कई योजनायें व कार्यक्रम चला रही है। हमारे दश के अर्थिक विकास के पुष्टिकरण में संरचना के महत्व को समझते हुए भारत सरकार ने एक योजना बनाई, इसलिए ग्रामीण संरचना पर आधारित एक कार्यक्रम शुरू किया, जिसके अन्तर्गत विकास परियोजनाओं सम्बन्धी छ: महत्वपूण घटक है–

- सिंचाई (भूजल संरक्षण तथा वितरण)
- सड़क (प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना)
- जलपूर्ति (त्वरित ग्रामीण जलापूर्ति कार्यक्रम)
- आवास (इंदिरा आवास योजना)
- ग्रामीण विद्युतीकरण (राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना)
- ग्रामीण दूर संचार सम्पर्क (ग्रामीण दूर संचार योजना)

इन घटकों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नया रूप मिलेगा। इससे न केवल मौजूद ग्रामीण संरचना विस्तृत और मजबूत होगी, बल्कि पारदर्शी तरीके से संरचना को अतिरिक्त सुविधाएं भी प्राप्त होगी। यह कार्यक्रम योजना और विभिन्न घटकों के क्रियान्वयन के लिए पंचायती राज विभाग जैसी प्रजातान्त्रिक संस्थाओं की पूर्ण भागीदारी पर निर्भर है, साथ ही निजी क्षेत्रों, सरकारी संगठनों एवं ग्रामीण जनता के सहयोग पर भी यह निर्भर है।।

यहाँ ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में सड़कों की भूमिका पर चर्चा की जायेगी।

सड़क निर्माण की ग्रामीण विकास में भूमिका :

आधारभूत अवसंरचनाएं किसी देश के विकास की कुंजी होती हैं। देश के सामाजिक और आर्थिक विकास की आधार स्थापना में सड़कों का महत्वपूर्ण योगदान है। निरंतर औद्योगिक विकास हेतु कृषि विकास के लिए आधारभूत संस्थाओं में पैसा लगाने से गुणात्मक प्रभाव, रोजगार के नये अवसरों के रूप में सामने आया है, जो इसी प्रकार के अन्य निवेश की अपेक्षा अधिक है। अर्थव्यवस्था का नवीनीकरण और बाजारीकरण सड़कों और संचार जैसे आधारभूत संरचना में निवेश के बाद ही सम्भव है। इनके बिना अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में पर्याप्त विकास सम्भव नहीं हो सकता इसलिए देश के ग्रामीण, गरीब और पिछड़े क्षेत्रों के निरन्तर विकास में आधारभूत अवसंरचनाओं की निर्णायक भूमिका है।

सड़क सम्बद्धता :

ग्रामीण सड़कें अभी तक सरकार की दृष्टि से उपेक्षित रही हैं। अच्छी सड़कें और परिवहन व्यवस्था संतुलित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। इस विषय में जॉन एफ. कैनेडी की एक उक्ति है– सड़कें हमारा न केवल धन होंगी, अपितु सड़कें धनोपार्जन करेंगी।

गांव को सड़कों द्वारा (सतही अथवा असतही तौर पर) नजदीक के राजमार्ग, कस्बें, बाजार एवं उपनगरीय क्षेत्रों से जुड़ने की योजना बनायी गयी है। इसके अन्तर्गत ग्रामीण सड़कों में गांव और जिले की सड़कें शामिल हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के

Scanned by CamScanner

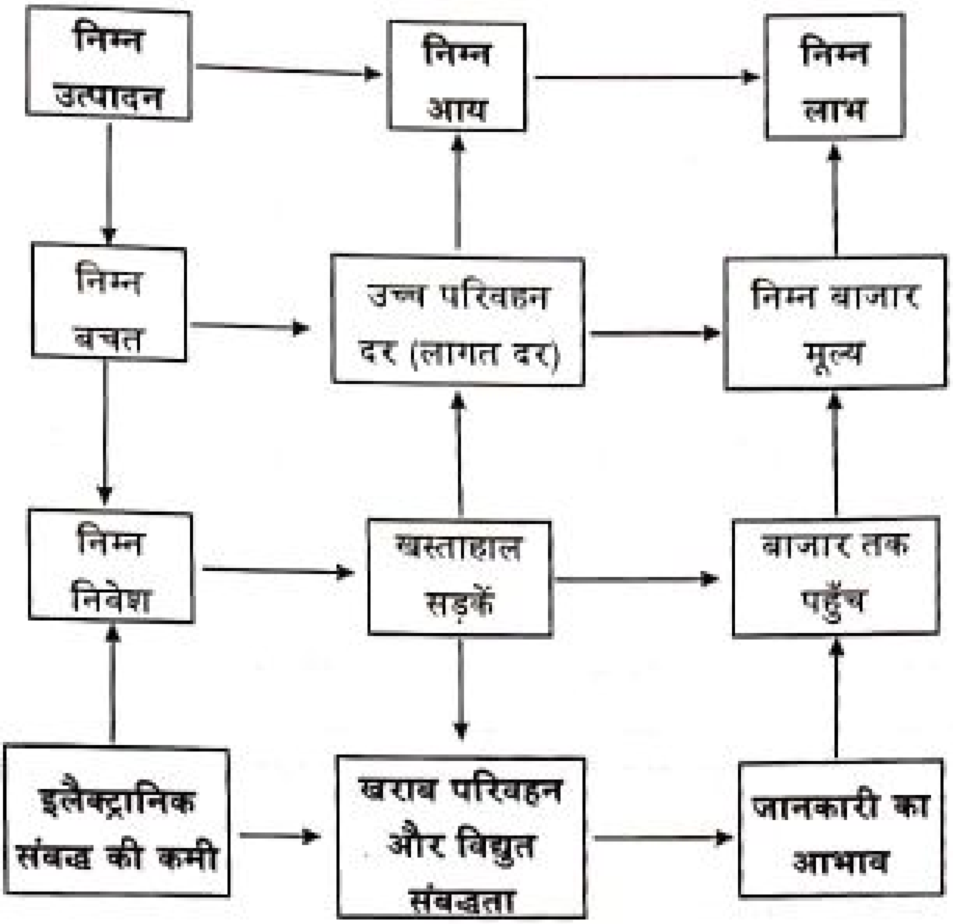

पिछड़े और अग्रणी क्षेत्रों के मध्य सड़क निर्माण से मजबूत सम्बन्ध स्थापित होंगे। अच्छी सड़कें सेवाओं और वस्तुओं का शीघ्र परिवहन सुनिश्चित करेंगी। सड़क निर्माण प्रक्रिया से गांवों के लोगों को रोजगार खोजने में सहायता होगी, उन्हें अपने उत्पादों का उचित मूल्य मिल सकेगा। इसके साथ ही सड़कें गरीबी कम करने में सहायक होंगी।

सड़कें अर्थव्यवथा का मजबूत आधार है तथा यह अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। सड़कों की सम्बद्धता अर्थव्यवस्था के विकास का एक नया मंत्र है। सड़क निर्माण से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की दूरियां कम होंगी और क्षेत्रीय असमानता भी दूर हो सकेगी।

सड़क निर्माण एवं ग्रामीण विकास हेतु अवसंरचनाएं :

2006-07 के वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर 8 प्रतिशत रही। ग्यारवीं पंचवर्षीय योजना में भी ऐसी ही विकास दर प्राप्त करने का लक्ष्य है। साथ ही कृषि क्षेत्र में उच्च विकास दर की निरंतरता को कायम करने का लक्ष्य भी इस योजना में रखा गया है। भारत की दो तिहाई आबादी अब भी कृषि से अपनी आजीविका कमाती है। अत: कृषि क्षेत्र और आधारभूत अवसंरचनाओं के मध्य समुचित संतुलन बनाए रखना होगा। इसलिए आवश्यक है कि अपनी अर्थव्यवस्था की विकास दर 8 प्रतिशत बनाये रखने के लिए कृषि क्षेत्र में भी 4 प्रतिशत की विकास दर बनाए रखनी होगी और यह सब सम्भव है ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में। अत: सड़कें और ग्रामीण क्षेत्रों की समृद्धि आपस में बहुत कुछ गुथी-बिंधी है। स्थानीय व्यापार से लेकर वैश्विक व्यापार तक की आपसी सम्बद्धता कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र के विकास के नए अवसर खोलेगी। निजी उद्यमियों द्वारा भी कृषि निर्यात क्षेत्र को प्रोत्साहन दिया जा रहा है, जिससे कृषि क्षेत्रों के लिए पूरक का काम करेगा। अत: यदि इस तथ्य को ध्यान में रखें तो सड़कों का विनिर्माण और सुदृढ़ीकरण करना अहम् बात है।

Scanned by CamScanner

सुदृढ़ीकरण और नयी सम्बद्धता के लक्ष्य:

तालिका –2

वर्ष	आवासों की संख्या	सड़कों की लम्बाई (कि.मी. में)	सुदृढ़ीकरण (कि.मी. में)
2005-06	7034	15492	11349 (73.5)
2006-07	16130	35182	54669 (155.4)
2007-08	20071	43900	59316 (134.8)
2008-09	23567	51521	68751 (134.4)
कुल	**66802**	**146185**	**194130** (132.8)

ग्रामीण क्षेत्र में आधारभूत अवसंरचनाओं का अर्थ गाँवों की बाजार तक पहुँच है। भौतिक और संस्थागत आधार अव-संरचनाओं से किसानों की पहुँच बाजार तक संभव हो सकेगी। सड़कों के जुड़ाव से जल्द खराब होने वाले कृषि उत्पाद बाजार में जल्द ही जल्द पहुँच सकेंगे। क्योंकि फसलों के तैयार होने के बाद उनका अधिकांश भाग खराब हो जाता है जो कुल उत्पादन (20 मिलियन टन प्रतिवर्ष) का 11 प्रतिशत है।

किसी देश का आर्थिक विकास कृषि क्षेत्र में अधिकाधिक निवेश तथा कृषि के बाजार में पर्याप्त पहुँच से ही सम्भव है। पुनर्संरचनात्मक साख और विपणन संरस्थाओं का ठीक से कार्य करना भी कृषि उत्पादन गतिविधियों में वृद्धि के लिए अनिवार्य है। इस विचार से, बाजार विकास के लिए आधारभूत अवसंरचनाओं की योजना ग्रामीण विकास में सहायक होगी।

ग्रामीण विकास जिसमें कि सड़क निर्माण अहम् भूमिका रखता है, के अन्तर्गत भारत के सभी गांवों को जिनकी जनसंख्या एक हजार है (पर्वतीय और आदिवासी क्षेत्रों के लिए 500) बारहमासी सड़कों से जोड़ा जाएगा। 66,802 छूटे हुए आवासों को भी इन सड़कों से जोड़ा जाएगा। 1 लाख 46 हजार 185 किमी. सड़कों का निवनिर्माण किया जाएगा। तथा 1 लाख 94 हजार 130 किमी. सड़कों की मरम्मत होगी। यहाँ सड़कों के नवनिर्माण की अपेक्षा अधिकांश सड़कों की मरम्मत और विकास यह दिखाता है कि सड़कों का रख-रखाव बड़ी बुरी अवस्था में है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना :

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क गुणवत्ता सड़क का निर्माण कर 'अन्तिम मील' तक की सड़कों से जोड़ा जायेगा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का विकास कार्य विभिन्न राज्यों में अपने उच्च स्तर पर चल रहा है।

विषयवस्तु–पूर्णतया केन्द्र द्वारा पोषित कार्यक्रम जिसका आरम्भ 25 दिसम्बर, 2000 को हुआ। 1 लाख 72 हजार आवासों को बारहमासी सड़कों से जोड़ेगा, दसवीं योजना के अंत तक 500 या उससे अधिक गांवों को सड़कों से जोड़ दिया जाएगा।

तालिका – 3
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना एक दृष्टि

मुख्य लक्षण

- कुल ग्रामीण आवासों की संख्या : 849341
- असंबद्ध आवासों की संख्या : 330647 (38.9 प्रति)

Scanned by CamScanner

- प्र.ग्रा.स.यो. द्वारा दायरे में लाये जाने वाले आवास : 172772 (52.3 प्रति)
- खर्च (करोड़ रुपये में) : 1,32,000 रु.
- कुल सड़क की लम्बाई (किमी. में) : 369386 किमी.
- औसत लम्बाई (किमी. में) : 2.14 किमी.

कार्यकारी मशीनरी और चेतावनी :

- राज्य सरकार द्वारा चिन्हित नोडल एजेंसी इसका कार्य भार देखेंगी।
- ऑन लाइन प्रबंधन, समस्याएं और लेखा कार्य प्र.ग्रा.स.यो. का महत्वपूर्ण आधार है।
- सड़कों की गुणवत्ता और रख-रखाव राज्य सरकारों के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण सड़क विकास संगठन तकनीकी सहायता प्रदान करेगी। कार्य की प्रगति (2005-06)
- कार्य हेतु मंजूर कुल रकम : 25410.44 (करोड़ रु.)
- खर्च के लिए निकाली गयी रकम : 14641.44 (करोड़ रु.)
- कुल सड़कों की संख्या : 46214
- खर्च का प्रतिशत : 79.73
- कुल किया गया कार्य : 62.57

निष्कर्ष :- सड़कें राष्ट्र की जीवन रेखा हैं। सड़कों के जुड़ाव से कृषि उत्पादों में तथा बाजार तक कृषि उत्पादों की पहुंच बढ़ जाएगी। आगे चलकर सड़कें गांवों की कृषि को उद्योगों के रूप में स्थापित करेंगी तथा रोजगार के सृजन के साथ ही गांवों में समृद्धि भी आएगी। सड़कें लोगों को जोड़ेंगी तथा एक राज्य से दूसरे राज्य तक राज्य विशेष के उत्पादों और सेवाओं की पहुंच में बाधाएं समाप्त हो जाएंगी। आपसी जुड़ाव से समझ बढ़ेगी, जिससे कृषि क्षेत्र में द्वितीय हरित क्रान्ति आने में देर न लगेगी। भारत में राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अन्तर्गत नवीन, सुदृढ़ और बेहतरीन प्रबन्धन से युक्त सड़कों का निर्माण एक बड़ा साहसिक कार्य है।

Do you Know ?

AJEET SINGH

Interesting Seven

Number of Seas	-	7
Days of week	-	7
Colour of Rainbow	-	7
Union territories in India	-	7
Continents of the World	-	7
Notes in Music	-	7
Wonders of the World	-	7

"English and Hindi"

Interesting Similarities

Nose	-	Naak (नाक)
Mouth	-	Moonh (मुँह)
Hand	-	Haath (हाथ)
Heart	-	Hriday (हृदय)
Sun	-	Surya (सूर्य)
Sea	-	Sagar (सागर)
Smell	-	Sugandh (सुगन्ध)
Long	-	Lamba (लम्बा)
Star	-	Sitarey (सितारे)

Scanned by CamScanner

लेख

भारतीय समाज में नारी की स्थिति

डॉ. ममता शर्मा प्रवक्ता–हिन्दी विभाग

संसार एक रंगमंच है जहाँ स्त्री एवं पुरुष दोनों को ही अभिनय करना पड़ता है। देश के निर्माण में पुरुषों के साथ स्त्रियों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारतीय समाज में नारियों की पूजा विभिन्न रूपों में होती रही है। प्राचीन भारत के इतिहास के पृष्ठ भारतीय महिलाओं की गौरवगाथा से भरे हुए हैं। 'मनुस्मृति' में कहा गया है– ''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता:,'' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

अतीतकाल में नारियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे, परिवार में उनका स्थान प्रतिष्ठापूर्ण था, गृहस्थी का कोई भी कार्य उनकी सहमति के बिना नहीं हो सकता था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब रामचन्द्र जी ने अश्वमेध यज्ञ किया तो उन्होंने सीताजी के वनवास के कारण उनकी स्वर्ण प्रतिमा रखकर यज्ञ पूर्ति की थी।

आवश्यकता होने पर स्त्रियां पुरुषों के साथ रणक्षेत्र में भी जाती थीं। देवासुर संग्राम की उस घटना को कौन भूल सकता है, जिसमें कैकेयी ने अपने अद्वितीय कौशल से महाराज दशरथ को भी विस्मित कर दिया था। प्राचीन काल में नारियों को अपनी योग्यता के अनुसार पति चुनने का अधिकार था। कैकेयी, शकुंतला, सीता, अनुसूय्या, सावित्री आदि प्रमुख स्त्रियां इसके उदाहरण हैं।

समय परिवर्तन के साथ स्त्रियों की स्थिति में भी परिवर्तन होता गया। प्रेम, बलिदान तथा सर्वस्व समर्पण ही स्त्रियों के लिए विष बन गया। समाज की घृणित विचारधारा ने उसका क्षेत्र केवल घर की चहारदीवारी तक ही सीमित कर दिया। मुगल काल में पर्दा प्रथा आरम्भ हुई और स्त्री को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। परदे की आड़ लेकर उसे घर की चहारदीवारी में कैद कर दिया गया। तभी से नारी विवशता की बेड़ियों में जकड़ी स्वाधीनता की बाट जोह रही है।

नारी ने प्रेम के वशीभूत होकर स्वयं को पुरुषों के चरणों में समर्पित कर दिया, किन्तु निर्दयी पुरुष ने उसे बन्धनों में जकड़ लिया। वही नारी जिसने अपने पति की पराजय से क्षुब्ध होकर विद्वानों से शास्त्रार्थ किया था, घर की सीमित परिधि में ही बन्द होकर रह गई। वह अज्ञान के गहन गर्त में डुबकियां लगाने तथा सामाजिक प्रताड़नाओं को मूक पशु के समान सहन करने के लिए विवश रही। छोटी अवस्था में बेमेल विवाह तथा कभी–कभी भाग्य की विडम्बना के कारण विधवा होकर जीवनपर्यन्त आँसू बहाते रहना पड़ता था। स्त्रियों का जीवन पुरुषों की दया पर निर्भर रहता था क्योंकि उत्तराधिकार आदि से उसे वंचित रखा जाता था। आर्थिक एवं सामाजिक कुरीतियों ने पराधीन भारत में नारियों को इतना दीन–हीन बना दिया था कि वे अपने अस्तित्व को ही भूल गई थीं। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने नारी की इसी शोचनीय दशा का वर्णन निम्नांकित पंक्तियों में किया है :

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में है पानी।।

समय के साथ–साथ भारतीय विचारकों एवं नेताओं का ध्यान स्त्री दशा में सुधार की ओर आकर्षित हुआ। राजा राममोहन राय ने सती–प्रथा का अन्त कराने का सफल प्रयास किया। गाँधीजी सहित अन्य अनेक नेताओं ने महिला उत्थान के लिए जीवन पर्यन्त कार्य किये। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुरुषों की भांति महिलाओं को भी समान अधिकार दिये जाने पर बल दिया। देश की स्वतन्त्रता के साथ–साथ नारी वर्ग में भी चेतना का विकास हुआ। वह आज घर तक सीमित न होकर पुरुषों के समान कार्य क्षेत्र में पदार्पण कर रही है। आज नारी को पुरुषों के समान अधिकार दिये गये हैं। यहाँ तक कि पिता की सम्पत्ति में पुत्र के समान ही हिस्से की कानूनी व्यवस्था की गई है।

भारतीय नारी जीवन की कटुता और विषमताओं का विष पीकर भी कर्तव्य और त्याग का संदेश देती रही है। रानी

Scanned by CamScanner

लक्ष्मीबाई ने अपना बलिदान देकर देश की रक्षा के लिए अंग्रेजों से युद्ध किया। गाँधीजी को चरित्र निर्माण की प्रेरणा देने वाली उनकी माता पुतलीबाई थी। श्रीमती सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पण्डित, इंदिरा गाँधी, राजकुमारी अमृत कौर, डॉ. सुशीला नय्यर आदि के रूप में हमें आज के प्रगतिशील नारी-समाज के दर्शन होते हैं। इन नारियों ने स्वयं राष्ट्र निर्माण एवं जन जागरण में भाग लेकर नारी जाति का पथ प्रदर्शन किया है।

आज के आधुनिक युग में हमारे देश में महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। हमारी सरकार भी महिलाओं की प्रगति पर पर्याप्त ध्यान दे रही है। आज की नारी घर के सीमित दायरे से बाहर निकलकर समाज के प्रत्येक कार्य में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही है तथा उनके हृदय में सामाजिक चेतना उत्पन्न हो रही है, बावजूद इस सबके भारतीय नारी के सामूहिक जागरण के मार्ग में अभी भी अनेक अवरोध हैं। इन अवरोधों को समूल नष्ट करके ही भारतीय नारी अपना उत्थान कर सकती है।

हमारे भारतीय समाज में सभ्यता का मूल मंत्र '**सादा जीवन उच्च विचार**' था, परन्तु आज की नारी आदर्श से बहुत दूर है। आज की इस महंगाई के दौर में जहाँ देश में हजारों लाखों व्यक्तियों के पास दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं है, तन ढंकने के लिए वस्त्र नहीं हैं, वहीं आधुनिकता और बाहरी चमक-दमक के वशीभूत होकर राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति का व्यय अपने सौन्दर्य प्रसाधनों पर कर रही हैं। वह स्वयं को सुन्दर दिखने एवं पुरुषों को आकर्षित करने हेतु भारत की प्राचीन परम्परा को छोड़ चुकी है। नारी समस्याओं पर गहन अध्ययन कर प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती प्रेमकुमारी दिवाकर का कथन है कि "आधुनिक नारी ने निःसंदेह बहुत कुछ प्राप्त किया है, पर सब कुछ पाकर भी उसके भीतर का परम्परा से चला आ रहा कुसंस्कार नहीं बदला है। वह आज भी स्वयं को पुरुषों के हाथ की कठपुतली समझती हैं। जब तक उसका भीतरी व्यक्तित्व न बदलेगा, तब तक नारीत्व की पराधीनता एवं दासता के विष वृक्ष की जड़ पर कुठाराघात न हो सकेगा।"

आज की नारी अपने सतीत्व एवं लज्जा के लिए चण्डी और दुर्गा बन जाती है। भारत में नारी की शक्ति को दुर्गा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। नारी केवल श्रृंगार एवं कोमलता की ही मूर्ति नहीं, वह समय पड़ने पर कठोरता को भी वरण करती है। यह पृथ्वी नारी के योगदान से ही स्वर्ग बन सकती है क्योंकि नारी जानती है कि उसके अभाव में मानव जाति का अस्तित्व ही नहीं है। वह माँ बनकर पालती है, पत्नी एवं बहिन के रूप में अपने कर्तव्य का निर्वाह करती है तभी तो किसी ने कहा है- **"पुरुष उस नारी की ही देन, उसी के हाथों का निर्माण"**

ईश्वर के पश्चात् माँ ही करती है। वह बालक का प्रथम गुरू होती है। माँ बालक की प्रथम गुरू एवं घर प्रथम पाठशाला होती है। यहीं से उसके संस्कारों की शुरुआत होती है। माँ के दिए संस्कारों का ही आचरण बालक आजीवन करता है बालक ध्रुव में माँ के संस्कार ही थे जो आज वह आकाश में तारा बनकर टिमटिमा रहा है। नारी त्याग एवं ममता की मूर्ति होती है। नारी पुष्प की भाँति कोमल अवश्य होती है, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर वह पापियों का संहार करने के लिए भैरवी का रूप भी धारण कर सकती है। नारी अपने बल पर आकाश-पाताल एक कर सकती है। पुरुष की यह भूल रही है कि वह सारे विश्व पर अपना अधिकार मानती है और अकारण ही नारी पर चोट करता है। कौन कहता है कि नारी बल हीन है। इसी सन्दर्भ में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं-

प्रकृति ने बतलाया कब पुरुष बली है, और नारी बल हीन। कहाँ अंकित है उसमें पुरुष श्रेष्ठ, नारी निकृष्ट, अति दीन।।

नारी के अभाव में पुरुष बेकार है क्योंकि नारी एवं पुरुष दोनों मिलकर ही समाज का निर्माण करते हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। पुरुष का स्थान उच्च एवं नारी का स्थान निम्न है, ऐसा सोचना अन्याय और असत्य का प्रतीक है। आज की जागृत नारी जो अपने कर्तव्य को भली भाँति जानती है और उसे पूरा भी करती है। वह माँ के रूप में समाज को दिशा निर्देश दे रही है। जिसके दिखाये रास्ते पर समाज आगे बढ़ता चला जा रहा है।

❖

Scanned by CamScanner

अलीगढ़ के कुछ क्षेत्रों के नाम कैसे पड़े?

ऋषि कुमार बी. ए. III

बारहद्वारी– लगभग सौ वर्ष पुराने इस बाजार का नाम यहाँ स्थित एक सराय के नाम पर पड़ा था। इस सराय के बारह (12) दरवाजे थे, इन्हीं दरवाजों की वजह से इसे **बारहद्वारी बाजार** कहा जाने लगा।

घुड़िया बाग– घुड़िया बाग क्षेत्र एक चारागाह था। यहाँ पर राजा की घोड़ी को घुमाने व चराने के लिए लाया जाता था। उस वक्त इस चारागाह को घोड़ी बाग कहते थे, बाद में इसका नाम **घुड़िया बाग** पड़ गया।

हरदुआगंज– इस नाम के पीछे मान्यता है कि यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण के भाई दाऊजी ने कोल नामक दैत्य का वध करने के उपरान्त हथियार यानि हल यहाँ आकर धोया था। तभी से इसका नाम हलधुआ पड़ा। कालान्तर में इसे इसे हरदुआगंज के नाम से जाना जाने लगा।

ऊपर कोट– अलीगढ़ क्षेत्र का सबसे ऊँचा क्षेत्र ऊपर कोट ही है। यह अलीगढ़ में सबसे ऊँचा क्षेत्र था और इस क्षेत्र के मौहल्ला पठानान में कभी कचहरी थी जो वर्तमान में पुरानी कचहरी के नाम से जानी जाती है, जिसके कारण इस क्षेत्र में काले कोट (वकील) वालों का काफी मात्रा में आना जाना था। इसी वजह से ऊपर के साथ कोट जोड़ दिया। जिसे **ऊपर कोट** के नाम से जाना जाता है। इसे कुछ लोग इसे **अपर कोट** के नाम से भी पुकारते हैं।

खाई डोरा– खाई डोरा मोहल्ला पहले ऊपर कोट में लगता था, इस क्षेत्र के आस–पास पहले खाई हुआ करती थी यहीं एक सुरंग का दरवाजा था, इसे खाई डोर कहते थे। इसी के नाम पर इस मोहल्ले का नाम **खाई डोरा** पड़ गया। वर्तमान में सुरंग का दरवाजा बन्द कर दिया गया है।

मदार गेट– मदार गेट क्षेत्र के प्राचीन समय में मदार (आम) के पेड़ थे और यहाँ पर स्थित शिव मन्दिर के पुजारी के आधार पर शिव के डमरू बजने के कारण मदारी कहा जाने लगा। इस वजह से इस क्षेत्र का नाम **मदार गेट** पड़ा।

मामू–भांजा– आज से 125 साल पहले इस जगह पर मामू और भांजे थे। दोनों ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी पूरी भागीदारी निभाई थी और दोनों शहीद हो गये। इसी कारण इस क्षेत्र का नाम **मामू–भांजा** पड़ गया।

गलत फहमी

पुनीत गौड़ बी. कॉम. I

हमारा टेलीफोन है कितना महान,
एक नमूना देखिये श्रीमान।
हमने लगाया रेलवे इन्क्वारी,
और वह लग गया कब्रिस्तान॥
हुआ यूँ कि हमें एक कवि सम्मेलन में जाना था।
और रेलगाड़ी में अपना आरक्षण करवाना था।
इसलिए हमने रेलवे इन्क्वारी का नम्बर मिलाया।
लेकिन हमें क्या मालूम था कि-
उधर से कब्रिस्तान के बाबू ने उठाया,
बोला फरमाइये हमने कहा भाई साहब।
हमें सिर्फ एक बर्थ चाहिए क्या मिल जायेगी॥
वह बोला बैठे ही आपके लिये हैं।
हमारी खिदमत किस दिन काम आयेगी।
हमारे होते हुए बिल्कुल मत घबराईए॥
एक क्या पचास सीटें खाली पड़ी हैं।
पूरे खानदान को ले आइए॥

शोध पत्र

फैसल जमील बी. एस-सी. I

"शिक्षा में नकल की आदत को दूर करना"

उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार, पंजाब और मध्यप्रदेश में क्या समानता है? इस सवाल का जवाब है। स्कूल शिक्षाबोर्ड की परीक्षा में धड़ल्ले से नकल। भले ही ये सभी राज्य भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक रूप से अलग-अलग हों, लेकिन स्कूल शिक्षाबोर्ड के केन्द्रों पर मचने वाली धमाल उनकी समानता का खुलासा करती है। आखिर क्यों होती है नकल? नकल के लिए यूँ तो कई वजह जिम्मेदार हैं, लेकिन इनमें से तीन वजह मुख्य हैं-

1. कोई भी विद्यार्थी परीक्षा में असफलता का मुँह नहीं देखना चाहता है। ऐसा देखा गया है कि कई विद्यार्थियों के अभिभावक या शुभचिंतक भी नकल करने में उनकी मदद करते हैं, क्योंकि वे भी असफलता को स्वीकार नहीं करना चाहते हैं।
2. आज यह बात किसी से नहीं छिपी है कि वर्ष के 365 दिनों में बमुश्किल 180 दिन भी विद्यालयों में शिक्षा कार्य नहीं चल पाता है। भारी भरकम पाठ्यक्रम तो तय कर लिए गये, लेकिन इनके शिक्षण का कार्य कैसे पूरा होगा, इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। ऐसे में ट्यूशन, कोचिंग की भी जरूरत पड़ने लगी।
3. ऐसे में तमाम चीजें बाजार में उपलब्ध रहती हैं, जिनमें आँकड़े वर्षों पुराने होते हैं। इन्हें पढ़ना व पढ़ाना विद्यार्थियों व शिक्षकों की मजबूरी होती है।

"शिक्षा में नकल से बचने के उपाय"

1. कुछ छात्र-छात्राओं की शिकायत होती है कि हमें पढ़ा हुआ याद नहीं रहता। आता तो सब है, पर पता नहीं क्या हो जाता है? दरअसल जब हम कक्षा में पढ़ रहे होते हैं तो हमारा शरीर तो वहाँ होता है पर दिमाग कहीं और होता है, इसकी वजह यह है कि हमें खुद पर भरोसा नहीं होता है।
2. शिक्षक तो पूरी मेहनत से पढ़ाते हैं, उनमें से कुछ बच्चे ध्यान से पढ़ते हैं, वे सफल हो जाते हैं। कुछ असफल हो जाते हैं, कारण यह है कि ध्यान से न पढ़ना।
3. असफल छात्रों में परीक्षा का भय अधिक रहता है, दरअसल भय और आत्मविश्वास का भी एक गहरा सम्बन्ध है, जहाँ आत्मविश्वास होता है, वहाँ भय नहीं होता। विद्यार्थियों को चाहिए कि बिना डरे तैयारी करें, क्योंकि डर आपके रिजल्ट को प्रभावित कर सकता है।
4. अपनी दिनचर्या को अनुशासन में रखें और जीवन के उद्देश्य को न भूलें। माता-पिता के त्याग को समझें, आप जिस धर्म को मानते हैं, उस पर पूरा विश्वास रखें।
5. अगर नकल करके आप पास हो भी गये, लेकिन आपको वो **"ज्ञान"** जीवन में कभी नहीं मिल सकता जो कि जीवन की नई-नई कठिनाइयों से लड़कर आपको आपका हक दिलायेगा क्योंकि ज्ञान खाली दिमाग को खुला रखता है। हमें गर्व है कि हम एक ऐसे महाविद्यालय में पढ़ रहे हैं, जिसका नाम भी **"ज्ञान"** है।

हम सभी को मिलकर नकल की रफ्तार को रोकना होगा क्योंकि हम देश का भविष्य हैं, और हमें सफलता अवश्य मिलेगी।

Scanned by CamScanner

एक वादा हिन्दुस्तान से

कल्पना बी. एस–सी. I

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा" बचपन में हम जब यह गाते थे तो एक अलग ही एहसास होता था। एक खुशी जो हमें अपने देश, अपने हिन्दुस्तान से जोड़ती थी। चेहरे पर एक स्माइल, आँखों में चमक और मन में उसके लिए कुछ करने का जज्बा होता था। जैसे–जैसे बड़े हुए अपने हिन्दुस्तान को जाना और देशवासियों को भी जाना। गाँधी जी, नेहरू जी ने जिस हिन्दुस्तान की नींव रखी थी, जाने कहाँ खो गई। आज सिर्फ भ्रष्टाचार, घोटाले दिखाई और सुनाई देते हैं। भ्रष्टाचार इस तरह घुल गया है, जिसे Filter भी नहीं कर सकते, अर्थात् लोगों के दिल, दिमाग से निकालना आसान नहीं। आज देश की कोई जगह नहीं बची जो घोटाले से मुक्त हो। नित नये घोटाले हो रहे हैं। जैसे– कोयला घोटाला, खेल घोटाला, संचार घोटाला इत्यादि। आज हमारे देश में घोटालों का महासागर बह रहा है। इन घोटालों ने हिन्दुस्तानी का हिन्दुस्तानी पर से विश्वास हटा दिया है। आज व्यक्ति यह समझ नहीं पा रहा है कि वह भ्रष्टाचार से अपने देश को ही खोखला कर रहा है। वो हिन्दुस्तान जहाँ से अन्य कई देशों ने सीखा था कि भाईचारा क्या होता है। आज उसी देश के वासी भाईचारा कैसे भूल गये। आज अपने देश को वही रूप देने का कार्य हम भावी नागरिकों को करना है और अपने आपसे वादा करना है कि अपने हिन्दुस्तान को उस हिन्दुस्तान से भी अच्छा बनायेंगे, जिसका सपना हमारे गाँधी जी, नेहरू जी, शास्त्री जी आदि ने देखा था। वो वादा जो हम सब मिलकर करेंगे और सबसे अच्छा हिन्दुस्तान बनायेंगे, जिसे देखकर 'बराक ओवामा' भी कहेंगे "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान तुम्हारा" और इस नेक कार्य की ओर हमारा पहला कदम होगा '**शिक्षा**'।

छात्रों के दिल से

खुशबू वार्ष्णेय एम. कॉम. I

खुदा तू भी यहाँ पढ़कर तो देख
छात्रों की तू मुसीबत से जरा गुजरकर तो देख
स्वर्ग में तो तुम सदा मौज करते ही रहे
कॉलिज में एक साल गुजारकर तो देख।

हुक्म ही देते रहे तुम संसार को सदा,
एक बार अपना हुक्म यहाँ चलाकर तो देख
तुमने भरा दामन सदा, दर पर जो आ गया,
टीचर से जरा नम्बर लाकर यहाँ पर तो देख।

भक्तों को तुम सदा कसौटी पर कसते हो,
एक बार इम्तिहान में खुद पास होकर तो देख,
भटकते हुए कमजोरों के तुम सदा रहनुमा बने
खुद को एम.बी.बी.एस में सलेक्शन करा कर तो देख।

ए खुदा तू भी यहाँ......

Scanned by CamScanner

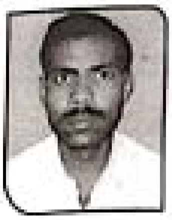

कविता

अकेले बढ़ो तुम

भूपेन्द्र पाल सिंह

न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम, सफलता तुम्हारे कदम चूम लेगी।
सदा जो जगाये बिना ही जगा है, अँधेरा उसे देखकर ही भगा है।
वही बीज पनपा पनपना जिसे था, घुना क्या किसी के उगाये उगा है।
अगर उग सको तो उगो सूर्य से तुम, सफलता तुम्हारे कदम चूम लेगी।
सही राह को देखकर जो मुड़े हैं, वही देखकर दूसरों से कुढ़े हैं।
बिना पंख तोले उड़े जो गगन में, न सम्बन्ध उनके गगन से जुड़े हैं।
अगर बन सको तो पखेरू बनो तुम, प्रखरता तुम्हारे कदम चूम लेगी।
न जो बर्फ की आँधियों से लड़े हैं, कभी पग न उनके शिखर पर पड़े हैं।
जिन्हें लक्ष्य से कम है प्यार खुद से, वहीं जी चुराकर तरसते खड़े हैं।
अगर जी सको तो जिओ झूमकर तुम, सफलता तुम्हारे कदम चूम लेगी।
न हो साथ कोई अकेले बढ़ो तुम, सफलता तुम्हारे कदम चूम लेगी।

❖

'हमारा प्रिय ज्ञान महाविद्यालय'

ज्ञान महाविद्यालय उद्यान हमारा है,
हम पक्षी हैं इसके यह वृक्ष हमारा है।
हम हैं सुमन सुगंधित इसके,
यह हमको प्रेरणा से प्यारा है॥

निर्धन धनी सभी बराबर इसमें,
भ्रातृभाव का प्रेम यहाँ है।
शिष्ट सभ्य हैं छात्र यहाँ के,
अनुशासन का राज्य यहाँ है॥

यह देता है हमको शीतल छाया,
अतुलित ज्ञान इसी से पाया।
ज्ञान दान हम सबको करके,
परिवर्तित है मन-वाणी-काया।

लेते शिक्षा सदाचार की,
आपस में सब मिलकर रहते।
प्रेम भाव से पूरित हम सब,
सत्कर्मों के पथ पर चलते॥

❖

प्रेरणात्मक

मधु चाहर
बी. एड. प्रवक्ता

इस कहानी के द्वारा जीवन में आने वाली कठिन परिस्थितियों से जूझने व उनसे हार न मानने की शिक्षा दी गई है। जो लोग कठिनाइयों का सामना करते हैं, उन्हें अपनी मंजिल अवश्य प्राप्त होती है।

एक भिखारी था। वह दिनभर भीख माँगता, थोड़ा-बहुत जो कुछ मिलता, उसे खाकर सो जाता। कभी-कभी उसे इस जीवन से घोर निराशा होती। वह सोचता, शायद उसके भाग्य में गरीबी ही लिखी है।'

एक दिन वह भीख मांग रहा था। जब कोई राहगीर उसके पास से गुजरता, वह कहता-"दाता, गरीब का भला करो। भगवान तुम्हारा भला करेगा।" एक राहगीर ने भिखारी से कहा- "क्या तुम-अपनी चीजें बेचोगे?

भिखारी सोचने लगा, "मेरे पास बेचने के लिए है ही क्या?" वह राहगीर से बोला-"दाता" गरीब की हंसी क्यों उड़ाते हो?" राहगीर बोला, "नहीं भाई, मैं तुम्हारी हंसी नहीं उड़ा रहा। तुम अपना बायाँ हाथ एक हजार रुपये में मुझे बेच दो" भिखारी ने इसका जवाब दिया, "वाह! कहीं हाथ भी बेचा जाता है?"

राहगीर ने कहा-"मैं तुम्हें पांच हजार रुपये दूँगा, तुम अपने दोनों हाथ दे दो।"

भिखारी बोला-"नहीं, नहीं! मैं हाथ नहीं बेच सकता।" अब राहगीर ने कहा-"अच्छा हाथ न सही, दस हजार रुपये में अपने दोनों पैर ही बेच दो।" भिखारी ने कहा- नहीं, यह भी नहीं हो सकता।"

भिखारी झल्ला उठा- "अरे बाबा, जाओ! क्यों गरीब के पीछे पड़े हो?"

राहगीर ने कहा- "कैसी बात करते हो! तुम गरीब कैसे हो? जिसके पास पाँच हजार रुपये की दो आँखें हों, वह गरीब कैसे हो सकता है? अरे भाई, तुम तो बहुत बड़े अमीर हो।"

अब भिखारी की आँखें खुल गई। वह राहगीर के पैरों पर झुकने लगा।

राहगीर ने उसे रोकते हुए कहा- "झुको मत! उठो और काम करो। भगवान ने तुम्हें संसार की बहुत बड़ी सम्पत्ति दी है।" यह सुन भिखारी भिक्षावृत्ति छोड़कर मेहनत से कमाने लगा।

❖

Scanned by CamScanner

व्यक्तित्व का विकास

शोभा सारस्वती बी.टी.सी. विभाग

किसी भी तरह की बाधाओं को दूर करके आगे बढ़ने वाले लोग उनकी तुलना में अधिक सुरक्षित होते हैं, जिन्होंने कभी उनका सामना नहीं किया। प्रत्येक व्यक्ति को कभी न कभी दिक्कतों का सामना करना ही पड़ता है। इस कारण कई बार हम मायूस हो जाते हैं। तब हमें यही सोचना चाहिये कि जिन्दगी में ऐसी परिस्थितियां सबके साथ आती हैं, जिनका डटकर सामना करने वाले ही आखिरकार सफल होते हैं। तभी तो कहा गया कि **संघर्ष ही जीवन है**, जिन्दगी में कभी जीत की खुशियां मिलती हैं। कभी हार का गम, अब यह हम पर निर्भर करता है, कि हम हार का सामना कैसे करते हैं। क्योंकि यह तो तय है कि हार के बाद जीत बिना संघर्ष के नसीब नहीं होती।

एक कक्षा में जीव विज्ञान के प्राध्यापक छात्रों को इस बात की जानकारी दे रहे थे, कि सूंड़ी किस प्रकार तितली में बदल जाती हैं, उन्होंने बताया कि कुछ ही देर में तितली अपने खोल से बाहर निकलने की कोशिश करेगी, उन्होंने छात्रों को आगाह किया कि खोल से बाहर निकलने में वे तितली की किसी भी तरह से मदद न करें, और फिर वह कक्षा से बाहर चले गये जब तितली खोल से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी तो कुछ देर तक तो छात्र चुपचाप देखते रहे, पर उन्हें दया आ गई और वे तितली को बाहर निकालने में मदद करने लगे। ऐसा करने से तितली बिना कोशिश के बाहर आ तो गई पर कुछ ही देर में तड़प–तड़प कर मर गई। वापस लौटकर शिक्षक ने जब यह नज़ारा देखा तो उन्होंने छात्रों को समझाते हुये कहा कि तितली को खोल से बाहर आने के लिये संघर्ष करना पड़ता है, जिससे उसके पंख मजबूत बनते हैं। यही प्रकृति का नियम है। ऐसे में तितली की मदद करके छात्रों ने उसे संघर्ष करने का मौका नहीं दिया, इस कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

जिन्दगी में सफलता का फार्मूला : याद रखिये कि जीवन में कोई भी चीज बिना मेहनत, बिना संघर्ष के नहीं मिलती। अभिभावकों को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनके बच्चे संघर्ष करना सीखें। संघर्ष से ही मजबूती मिलती है जो आखिरकार जीत में बदल जाती है।

न पढ़ने के बहाने

लक्ष्मी कुमारी बी. ए. I

जनवरी जान से प्यारी, फरवरी फरियाद लाती है।
मार्च में मौत आती है, जब परीक्षा पास आती है॥
अप्रैल आराम से प्यारी, मई मौज दिखाती है।
जून में जान निकलती है, जब रिजल्ट की याद आती है॥
जुलाई में एडमीशन की तैयारी, अगस्त में आजादी छा जाती है।
सितम्बर में फिर लौटकर ऋतु, मच्छरों की आ जाती है॥
अक्टूबर नौ दुर्गा में बीता, नवम्बर में दीपावली आती है।
दिसम्बर में कोहरा और ठण्ड बहुत सताती है॥
इस प्रकार साल यूं ही निकल जाती है।
अब आप ही बताएँ ऐसे में पढ़ाई कहाँ हो पाती है।

Scanned by CamScanner

सामान्य ज्ञान

भारत एवं विश्व का भौगोलिक वर्णन

महीपाल सिंह (B.T.C.)

1.	हिन्द महासागर का सबसे बड़ा द्वीप कौन सा है ?	मेडागास्कर
2.	स्वेज नहर किन दो समुद्रों को जोड़ता है ?	लाल सागर व भूमध्य सागर
3.	विश्व का सबसे अधिक गर्म स्थान माना जाता है ?	अजीजिया (लीबिया)
4.	विश्व का सबसे ऊँचा जलप्रपात ऐंजिल किस देश में है ?	बेनेजुएला (दक्षिण अफ्रीका) में
5.	किस भूगोलवेत्ता ने सर्वप्रथम विश्व ग्लोब पर अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ खींची ?	पटोलेमी (Ptolemy) ने
6.	विश्व का सबसे छोटा गणतन्त्र है ?	नौरू
7.	विश्व आर्थिक मंच की वार्षिक बैठक के लिए चर्चित 'दोवास' किस देश में है ?	स्विटजरलैण्ड में
8.	फिलीपीन्स का कौन सा ज्वालामुखी लगभग छः शताब्दी तक सुप्त रहने के बाद फट पड़ा था?	माउण्ट पिनेटूबो
9.	एलीफेण्टा दर्श किस देश में है ?	श्रीलंका में
10.	न्यू मूर द्वीप कहाँ स्थित है ?	बंगाल की खाड़ी में
11.	भारत का सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान कौन सा है ?	मासिनराम (मेघालय)
12.	भारत का मानक समय ग्रीनविच के पूर्व किस देशान्तर का समय है ?	82 1/2 का
13.	भारत व पाकिस्तान को विभाजित करने वाली रेखा है।	रेडक्लिफ लाइन
14.	गंगा डेल्टा के शीर्ष पर कौन सी पहाड़ियाँ स्थित हैं ?	राजमहल पहाड़ियाँ
15.	खासी और जैन्तियाँ की पहाड़ियाँ किस राज्य में स्थित हैं ?	मेघालय में
16.	भारत का कॉपर प्लांट कहाँ स्थित है ?	मलजखण्ड में
17.	मैटूर बाँध किस नदी पर बना है ?	कावेरी नदी पर
18.	हिमालय किस प्रकार का पर्वत है ?	वलित पर्वत
19.	कनाडा के मध्य अक्षांशीय घास के मैदान क्या कहलाते हैं ?	प्रेयरीज

पहेलियाँ

हंसिका वार्ष्णेय बी.सी.ए. II

1. धन दौलत से बड़ी है, सब चीजों से ऊपर जाए।
   जो पाए पंडित हो जाए, बिना पाए मूर्ख कहाए॥
2. पेड़ पर रहता हूँ, पर पक्षी नहीं हूँ।
   जटाएं हैं मेरी, पर साधू नहीं हूँ॥
3. ऊपर से तो है हरा, अंदर से है लाल।
   जितना मीठा रस भरा, उतनी मोटी खाल॥
4. मोती जैसा है एक फल,
   भरा है इसमें मोती जल।
5. तीन अक्षर का मेरा नाम,
   उल्टा सीधा एक समान।
6. हाथी, घोड़ा, ऊँट नहीं, खाए न दाना घास।
   चलता केवल धरती पर, सबको लाए पास॥
7. एक नगर में अठारह चोर और नगर की रानी एक।
   वहाँ दरोगा ऐसा आया, जिसने उनको मार भगाया॥
8. हरा-भरा एक पेड़ है, फलों से भरपूर।
   लकड़ी का नाम नहीं, पत्तियां है जरूर॥

1. विद्या 2. नारियल 3. तरबूज
4. अंगूर 5. जहाज 6. साईकिल
7. कैरम बोर्ड 8. केले का पेड़

Scanned by CamScanner

कविता

सच्ची पूजा

निर्मला कुमारी बी. एड.

मन्दिर मस्जिद धर्म नहीं है धर्मों के आधार हैं।
इन्सानों के खून से हों वो पूजाएँ बेकार हैं।।

हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई, सबके अपने धर्म हैं।
वैसा ही फल उसको मिलेगा, जिसके जैसे कर्म हैं।।
ईश्वर का घर एक है लेकिन, उसके लाखों द्वार हैं।
इन्सानों के खून से हों, वो पूजाएँ बेकार हैं।।

माँ की प्यारी गोद न खूँदो, आपस की तकरारों से।
धरती को मत घाव लगाओ, धर्मों की तलवारों से।।
धर्मों को जब मान रहे हो, फिर क्यों अत्याचार है?
इन्सानों के खून से हों, वो पूजाएँ बेकार हैं।।

प्यार सभी को बाँटते जाओ, अपना हो या गैर हो।
धर्म किसी का कब कहता है, इन्सानों में वैर हो।।
करते हैं जो लोग लड़ाई, अन्दर से बीमार हैं।
इन्सानों के खून से हों वो पूजाएँ बेकार हैं।

कैसे होगी राष्ट्र सुरक्षा, मन डूबा इस मर्ष में।
भारत माँ के लाल लगे हैं, कुर्सी के संघर्ष में।।
सच्चे पहरेदार हैं बैठे, लिए हाथ हथियार हैं।
इन्सानों के खून से हों, वो पूजाएँ बेकार हैं।।

अपने-अपने धर्म है सबके, समझो तुम ये शूल हैं।
भारत है बहुरंग बगीचा, हम सब इसके फूल हैं।।
तुम भी पहरेदार हो इसके, हम भी पहरेदार हैं।
इन्सानों के खून से हों, वे पूजाएँ बेकार हैं।।

पूजा का अनमोल समय, क्यों दुर्भावों में नष्ट हो।
पूजा का क्या अर्थ हुआ, जो पूजाओं में कष्ट हो।।
सबको मिले हैं जग में उसके, पूजा के अधिकार हैं।
इन्सानों के खून से हो, वो पूजाएँ बेकार हैं।।

कविता

अनुशासन

शिखा बी. एड.

आते ही अँधियारा जग का, पल में दूर भगाता है।
इसलिए कहती हूँ मित्रो, अनुशासन को अपनाओ।
ठीक समय पर उगता सूरज, ठीक समय पर ढलता है।
अनुशासित है सृष्टि तभी तो, कार्य समय से चलता है।।

चन्दा का परिवार रात में, ठीक समय पर आता है।
बड़े आदमी बनों पढ़ के, नाम देश का चमकाओ।
हँसते रहो सदा तुम ऐसे, जैसे फूल चमन में खिलता है।
अनुशासित है सृष्टि तभी तो, कार्य समय से चलता है।।

जल्दी जगना, जल्दी सोना, ठीक समय से पढ़ना तुम।
वाणी का संयम अपनाना, नहीं किसी से लड़ना तुम।
यदि फुर्तीला तन चाहो तो, सुनो एक तुम काम करो।
ब्रह्म-मुहूर्त में उठकर, नित हल्का सा व्यायाम करो।
अच्छे तन वाला बालक हो, सदा फूलता-फलता है।
अनुशासित है सृष्टि तभी तो, कार्य समय से चलता है।।

ठीक व्यवस्थित दिनचर्या हो, ठीक से अपना खाना हो।
ठीक समय घर से जाना, ठीक समय पर आना हो।
आज्ञा मानो सदा बड़ों की, झुककर उन्हें प्रणाम करो।
अनुशासित है सृष्टि तभी तो, कार्य समय से चलता है।।

संयम, नियम और अनुशासन, जो बालक अपनाते हैं।
वे ही आगे चलकर बच्चो, 'महापुरुष' बन जाते हैं।
अनुशासन का मूल मंत्र ले, बढ़ो प्रगति के पथ पर तुम।
नहीं रुकेगा यह रथ मित्रो, बढ़ो प्रगति के पथ पर तुम।
समय निकलता जाता है जो, कभी नहीं वो मिलता है।
अनुशासित है सृष्टि तभी तो, कार्य समय से चलता है।।

Scanned by CamScanner

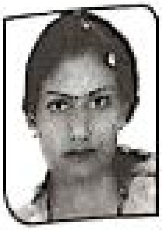

कविता

अच्छा लगता है

नीलेश वर्मा बी. टी. सी.

शाम से लेकर सुबह तक जलते रहना अच्छा लगता है,
इन अंधेरों को उजालों में बदलना अच्छा लगता है।
तुमने तय किया सफर जिंदगी का फूलों के सहारे,
लेकिन मुझे काँटों के सहारे चलना अच्छा लगता है॥
उसका मेरी दुनियाँ से, कोई वास्ता नहीं है,
फिर भी उससे एक रिश्ता बनाना अच्छा लगता है।
ये तो पता है तुमसे प्यार करने का अंजाम क्या होगा,
फिर भी धीरे-धीरे प्यार में जलना अच्छा लगता है।
उसके लिए रोज सजना-सँवरना अच्छा लगता है॥
कभी तो पा लूँगा मैं अपनी मंजिल को,
इसलिए कल पर विश्वास करना अच्छा लगता है।
सब कहते हैं कि सब्र का फल मीठा होता है,
इसलिए मुझे इंतजार करना अच्छा लगता है।
ये मेरी चंद लाइन पढ़कर आँसू मत बहाना दोस्त,
कोई तो है जिसे तेरा हँसना अच्छा लगता है॥
इन अंधेरों को उजालों में बदलना अच्छा लगता है।

क्षणिका

बेटियाँ

हसिका वार्ष्णेय
बी. सी. ए. II

ओस की बूंद सी होती हैं बेटियाँ।
पापा की दुलारी और जान से प्यारी होती हैं बेटियाँ॥
दो-दो कुलों की लाज होती हैं बेटियाँ।
हीरा गर है बेटा, तो सच्चे मोती हैं बेटियाँ॥
कहने को पराई, अमानत होती हैं बेटियाँ।
पर बेटों से बढ़कर अपनी होती हैं बेटियाँ॥

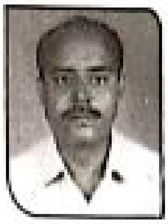

कविता

मन की भाषा

जितेन्द्र शर्मा भू.पू. सैनिक बी.टी.सी.

दिल से ही फूट निकलती है,
नयनों से जल की शीतल धारा।
ऐसा कोई नहीं जिसकी,
अपनी कोई दुर्बलता न हो।
सागर में उतरने वाले को,
तिनके का बड़ा सहारा॥

जीवन नभ में तो सुख-दुख के,
क्रम से आते रहते हैं बादल।
कभी मधुर जल और कभी ये,
पत्थर बरसा जाते हैं बादल।
साजन कहीं तड़पकर रोता,
हँसता है प्राची में तारा॥

तम में छुपकर ही तो दुनिया,
एक नींद सुख की लेती है।
दिल की दीवारें ही तो,
सपनों का श्रृंगार देती है।
काजल सी आँखों में मिलता,
चम चम स्नेह तुम्हारा॥

हँसते-हँसाते ही गिर जाता है,
हँसने का संसार किसी का।
दर्द भरा उर ही जानेगा,
मीठ-मीठा प्यार किसी का।
राह वही बतला सकता है,
जो है खुद देकर का मारा॥

Scanned by CamScanner

कविता

ज्ञान कॉलेज में

अरविन्द कुमार बी. टी. सी.

आओ हम सब मिलकर आयें, ज्ञान कॉलेज में।
अपना भव्य भविष्य बनायें, ज्ञान कॉलेज में॥

अपनी धरती अपनी बिल्डिंग, अपना सब कुछ इसमें है,
प्यारे-प्यारे सहपाठी हैं, अपने ही सब शिक्षकगण हैं।
सबका ही उत्थान यहाँ है, ज्ञान कॉलेज में,
अपना भव्य भविष्य बनायें, ज्ञान कॉलेज में॥
आओ हम सब मिलकर आयें...............................।

यहाँ नहीं झगड़े होते हैं, मिलकर सब दुख-सुख सहते हैं,
एक बाग के सुमन हो तुम सब, केवल इतना ही कहते हैं।
नवयुग का निर्माण करें ज्ञान कॉलेज में,
अपना भव्य भविष्य बनायें ज्ञान कॉलेज में॥
आओ हम सब मिलकर आयें........................।

भव्य मनोहर, उच्च इमारत, सबका मन हर लेती है,
अज्ञान त्याग शिक्षित बन जाओ, संदेश यही दोहराती है।
जीवन का उत्साह बढ़ाओ ज्ञान कॉलेज में।
अपना उज्ज्वल भविष्य बनाओ ज्ञान कॉलेज में॥
आओ हम सब मिलकर आयें.........................।

शुद्ध मनोहर कार्य यहाँ है, शुद्ध सनातन आर्य यहाँ हैं।
सच्ची शिक्षा देने वाले ज्ञानवान आचार्य यहाँ हैं॥
हर प्रकार की सुविधाएँ पायें, ज्ञान कालेज में।
आओ हम सब मिलकर आयें.........................।

❖

कविता

जीवन

मधुमिता सिंह बी. टी. सी.

जीवन एक कागज की नाव है,
जो चलती है डूब जाती है।
जीवन एक हवा का झोंका है,
जो आता है चला जाता है।
जीवन एक तिनका है,
जो कभी बिखर सकता है।
जीवन एक खिलौना है,
जो कभी भी टूट सकता है।
जीवन एक तरंग है,
जो आती है और चली जाती है।
जीवन एक पानी का बुलबुला है,
जो बनता है और फूट जाता है
जीवन एक सरिता की लहर है,
जो कभी उठती है और गिरती है।
जीवन एक फूल है,
जो खिलता है और मुर्झा जाता है।

❖

क्षणिका

दोस्ती क्या है?

रूबी शर्मा बी.बी.ए. II

दोस्ती एक वरदान है
जिसे पाकर हम धन्य हो जाते हैं।
दोस्ती एक सम्पत्ति है,
दोस्ती सभी निभा नहीं सकते हैं।
दोस्ती एक झरना है,
जो जीवन में सबको प्राप्त नहीं होता है।
दोस्ती एक सुन्दर सपना है,
जिसे भुलाया नहीं जा सकता।
दोस्ती एक दीपक है,
जो अन्धकार दूर कर देता है।

❖

Scanned by CamScanner

सामान्य ज्ञान

रोचक सत्य

हंसिका वार्ष्णेय बी. सी. ए. II

1. आधे चाँद से पूरा चाँद 9 गुना ज्यादा चमकदार होता है।
2. लुई चौदहवें ने अपने जीवनकाल में 3 बार स्नान किया। वह भी अपनी मर्जी से नहीं।
3. घोंघा बिना घायल हुए ब्लेड की धार पर चल सकता है।
4. विश्व में प्रति सेकेण्ड 6 बच्चे जन्म लेते हैं।
5. चूहा, ऊँट से भी ज्यादा दिन बिना पानी पिए रह सकता है।
6. एक रात को सोते समय अधिकांश लोग 40 बार करवट लेते हैं।
7. जब आपका जन्म दिन होता है, उस दिन दुनियाँ के सवा करोड़ से भी ज्यादा लोगों का जन्म दिन होता है।
8. कॉक्रोच सिर कट जाने के बाद भी कई दिन जीवित रहता है।
9. नर मच्छर कभी किसी को नहीं काटता, केवल मादा मच्छर ही काटती है।
10. छींकते समय व्यक्ति की दोनों आँखें खुली रहना असम्भव है।
11. कछुओं के दाँत नहीं होते।
12. एक वर्ग मील में इतने कीड़े-मकोड़े रहते हैं, जितने पूरी धरती पर मनुष्य हैं।
13. किसी भी पक्षी का 10वाँ अण्डा, पहले नौ अण्डों से बड़ा होता है।
14. शुतुरमुर्ग का अण्डा सबसे बड़ा होता है, उसका आमलेट 12 व्यक्तियों के लिए बन सकता है।
15. गिरगिट की आँखें एक समय में दो दिशाओं में देख सकती हैं।

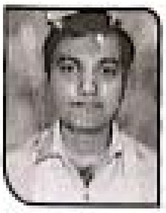

सामान्य ज्ञान

क्या आप जानते हैं?

मुनीष कुमार शर्मा बी. टी. सी.

राष्ट्रगान

'जन-गण-मन' को संविधान सभा ने भारत के राष्ट्रगान के रूप में 24 जनवरी, 1950 को अपनाया था। यह सर्वप्रथम 27 दिसम्बर, 1911 को भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गाया गया था।

राष्ट्रगीत

'बन्दे मातमरम्' गीत स्वतन्त्रता संग्राम में जन-जन का प्रेरणा स्रोत था। यह गीत प्रथम बार 1896 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अधिवेशन में गाया गया था।

राष्ट्रभाषा

संघ गणराज्य भारत की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। इसके अतिरिक्त संविधान द्वारा कुल 18 भाषायें शासकीय घोषित की गयीं।

राष्ट्रीय पंचाग

शक संवत् पर आधारित एकरूप राष्ट्रीय पंचांग स्वीकार किया गया है, जिसका पहला महीना चैत्र है और सामान्य वर्ष 365 दिन का होता है। इसे 22 मार्च, 1957 को अपनाया गया।

चार वेद षट शास्त्र में बात मिली है दोय।
सुख दीने सुख होत है, दुख दीने दुख होय॥

भावार्थ : चार वेद और छः शास्त्रों का सार यह है कि यदि आप किसी को दुख देंगे तो आपको भी दुख ही मिलेगा और आप यदि किसी को सुख देंगे तो आपको भी सुख प्राप्त होगा।

Scanned by CamScanner

कविता

वर का इश्तिहार

नीतू बी. टी. सी.

है याद आज भी दिवस वही,
बज उठी मधुर शहनाई थी।
हाथों में लाली मेंहदी की ले,
पिया के घर को आई थी।।
लड़की पराया धन होती है,
कह माँ ने मुझे सँवारा था।
मण्डप तक हाथ पकड़ लाई,
सखियों ने दिया सहारा था।।
मूरत सी बनकर बैठ गई,
तभी मेरी निद्रा टूटी।
हाय मैं क्यूँ न समझ सकी,
निज कर्मों पर बिजली टूटी।।
धरती पर टेके थे घुटने,
इक हाथ से दूजा हाथ जुड़ा।
मिन्नत करते-करते न थका,
वह बाबुल जिसने किया बड़ा।।
दूजे की इज्जत को रौंदे,
धन लोभी वो ब्याहने आए।
अपनी माँगों को पेश किया,
भीतर ही भीतर मुस्काए।।
अपनी पगड़ी रख पैरों में,
बाबुल ने उनको मना लिया।
आंखों में अश्रु छलकते थे,
भारी मन मुझको विदा किया।।
पहले दिन तो सब ठीक रहा,
पर अगले ही दिन बदले सब।
त्यौरियाँ चढ़ाकर पूछा ये,
धन निज घर से लाएगी कब।।
मेंहदी हाथों की उतरी नहीं,
गालों की लाली मिटी नहीं।
ताने सुनकर मेरे कान पके,
पति से बातें तो दूर रही।।
निर्लज्ज, कुल्टा, मनहूस कहाँ से,
पल्ले पड़ गई यह मेरे।
तू बहू नहीं है डायन है,
खा जायेगी घर को मेरे।।
कह पिता से अपना धन दे दे,
चाहे उसका घर बार बिके।
यह सुन सास के मुख से जब,
जी फटा मेरा मारे दुःख के।।
मैं इतना ही कह पाई कि,
माँ कुछ तो सोचो दया करो।
शादी से मेरी अभी कहो जो,
उन्हें न बेघरबार करो।।
इतना सुनते ही क्रूर बनी,
और केश पकड़ के झटक दिया।
ले नर्म छड़ी निर्मम वारों से,
बदन रक्त सा लाल किया।।
यूँ चला सिलसिला कुछ दिन तक,
पति ने भी मेरा तजा साथ।
जो नाथ बना प्राणों का उसने,
तन-मन पर कर दिया आघात।।
जब तक मैं समझती थोड़ा सा,
पति ने तब तक मुँह बन्द किया।
निर्दयी सास ने तेल छिड़ककर,
अग्नि देव को सौंप दिया।।
मैं नहीं-नहीं चिल्लाती रही,
पर लपटें फैली जहाँ-तहाँ।
मैं बेबस क्या कर सकती थी,
लुढ़की आँगन में यहाँ-वहाँ।।
कुछ क्षण जल बिन मछली की भाँति,
मैं उछल-उछल कर थी तड़पी।
फिर हुई देह निष्प्राण मेरी,
मैं मरती न तो क्या करती।।
रे हाय बहू मेरी बेटी,
तू क्यूँ छोड़ गई हमको।
हत्या कर दुर्घटना बताया,
सासू ने बाकी सबको।।
आई पुलिस तो बात खुली,
पर ले देकर वह भी टरकी।
मैं भी दहेज की भेंट चढ़ी,
यह बात रही घर में घर की।।
ऐसे ही कितने घर,
गृह लक्ष्मी जलवा देते हैं
दुर्घटना में नव वधू जली,
यह खबरें छपवा देते हैं।
कर मेरा क्रिया-कर्म पूरा,
दूजे ही दिन यह काम किया।
इक और वधू की बलि देने को,
''वर का इश्तिहार'' दिया।।

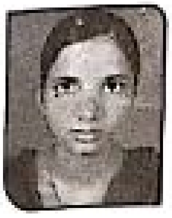

लेख

दो रोटियाँ

निर्मला कुमारी बी.एड.

पुरानी बस्ती में एक विधवा स्त्री रहती थी, वह अंधी थी, उसकी एक लड़की थी। जिसका नाम था करुणा था। उस समय करुणा की उम्र बारह वर्ष थी। करुणा सुन्दर होने के साथ-साथ बहुत भोली थी। उसकी माँ अन्धी होने की वजह से कुछ काम नहीं कर सकती थी। करुणा ही उसका एक मात्र सहारा थी। करुणा बड़ी कठिनता से अन्धी माँ को रूखी-सूखी दो रोटियाँ खिला पाती थी। वह एक स्कूल के बाहर टॉफी-बिस्किट बेचती थी।

एक दिन करुणा स्कूल के बाहर टॉफी-बिस्किट बेच रही थी कि कुछ शरारती लड़के उसके पास आये। उनमें से एक लड़का बोला... ए लड़की ये सारी टॉफी-बिस्किट हमें दे दो। करुणा ने सारी टॉफी-बिस्किट उन लड़कों को दे दी। आज वह बहुत खुश थी। खुश होती भी क्यों नहीं, आज उसका सामान इतनी जल्दी जो बिक गया था। लड़कों ने टॉफी-बिस्किट खाया और स्कूल के अन्दर घुस गये। लड़कों को बिना पैसे दिये जाते देखकर करुणा उनकी ओर दौड़ी। भइया-भइया तुमने मेरे सामान के पैसे तो दिये नहीं। कैसे पैसे? एक लड़का बोला, जिसका नाम नीलकमल था। करुणा घबरा गई और बोली भइया मेरी टॉफी-बिस्किट के पैसे! लड़के खिलखिला कर हँस पड़े। टॉफी-बिस्किट! कैसी टॉफी कैसी बिस्किट? हमने कोई टॉफी नहीं खाई तेरी। भाग जा यहां से नहीं तो मैं तेरा भुर्ता बना दूँगा। यह कहकर लड़के अपनी कक्षा की ओर चले गये। करुणा रो पड़ी वह नीलकमल के पैरों पर गिरकर बोली, 'ऐसा मत कहो भइया, मुझे टॉफी-बिस्किट के पैसे दे दो, मेरी माँ अन्धी है। वह दो दिन से भूखी है। मैं उसे रोटी कहाँ से खिलाऊँगी, दे दो भइया पैसे दे दो।'

तभी नीलकमल ने तड़ाक से करुणा के गाल पर थप्पड़ जड़ दिया। करुणा की आँखों के सामने अंधेरा सा हो गया। उसकी आँखों से टपटप आँसू बहने लगे। उसने अपनी मैली फ्रॉक से आँसू पोंछे और लड़खड़ाते हुए कदमों से घर की ओर बढ़ गयी। घर पहुँचते ही उसने देखा कि उसकी माँ भूख से व्याकुल थी। करुणा माँ को तड़पते न देख सकी और कुछ सोचते हुए बाजार की ओर बढ़ गयी। एक होटल में गरम-गरम फूली हुई रोटियों का ढेर देखकर करुणा की आँखें चमक उठी। लोगों की नजरें बचाकर करुणा ने रोटियों के ढेर पर झपट्टा मारा फिर हाथ में दो रोटियाँ लेकर वह सड़क पर भागने लगी। करुणा को कुछ चुराते देखकर होटल का मालिक चिल्लाया। उसकी चिल्लाहट सुनकर आस-पास के लोग भी करुणा के पीछे दौड़ पड़े।

करुणा ने अपने पीछे दौड़ते हुए लोगों को देखा तो वह घबरा गयी। लोगों से बचने के लिए वह सड़क पार करने लगी तभी एक टैक्सी तेजी से आयी। करुणा टैक्सी से टकराकर गिर पड़ी टैक्सी कुछ आगे जा कर रुकी। उसमें से पांच छः लड़के उतरे साथ में टैक्सी ड्राइवर भी। वे लड़के घटनास्थल पर आये और खून से लथपथ लड़की को तड़पती देखकर घबरा गये। उन्होंने लड़की को जरा ध्यान से देखा तो चौंक कर बोले-अरे यह तो वही लड़की है जो हमारे स्कूल में टॉफी-बिस्किट बेचती है।

करुणा के बायें हाथ में खून से सनी मुड़ी-तुड़ी दो रोटियाँ पड़ी थी जिसे देखकर लड़कों के आँखों में आँसू आ गये करुणा ने धीरे से आंखें खोली। अपने सामने लड़कों के बीच नीलकमल को खड़ा देखकर वह कांपते हुए स्वर में बोली, 'भइया तुमने अगर मुझे पैसे दे दिये होते तो आज इन दो रोटियों के लिए मुझे चोरी नहीं करनी पड़ती। अब कभी किसी गरीब को ऐसा नहीं सताना।'

मुझे माफ कर दो बहन! नीलकमल रो उठा। भइया! इस बदनसीब बहन की एक आरजू है, तुम्हारी कालौनी के अन्तिम छोर पर एक टूटी फूटी झोपड़ी है, उसमें मेरी अन्धी माँ भूख से तड़प रही होगी। ये दो रोटियाँ मेरी माँ को दे देना। तभी करुणा को एक हिचकी आयी और उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई, मुझे छोड़कर मत जाओ बहन, मैं पापी हूँ, मैंने ही तुम्हारा खून किया है।, नीलकमल चीख पड़ा, खून से रंगी दोनों रोटियाँ उठाई फिर उसके कदम पुरानी बस्ती की ओर बढ़ गये ।

नीलकमल झोपड़ी में पहुँचकर चीख पड़ा, करुणा की माँ मर चुकी थी। उसकी आँखों में आँसू आ गये। उसने खून से सनी दोनों रोटियां करुणा की माँ के सिरहाने रख दी फिर आँखों में आँसू लिये वह बाहर निकल आया। करुणा की माँ के सिरहाने खून की सनी दोनों रोटियाँ पड़ी हुई थीं। जिन्हें खाने वाला इन्सान तो क्या कोई भूखा जानवर भी न था।

सफल व्यक्ति कोई अलग प्रकार का कार्य नहीं करते, वरन् वे हर कार्य अलग ढंग से करते हैं।

Scanned by CamScanner

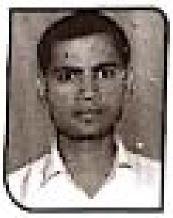

लेख

युवाओं के महान प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द'

प्रवीण कुमार बी. टी. सी.

उतिष्ठित जागृत प्राप्य वरान्नि बोधत्!

उठो, जागो, रुको मत, जब तक तुम अपना लक्ष्य प्राप्त न कर लो। यह मंत्र स्वामी विवेकानन्द के संदेश का ध्येय वाक्य कहा जाता है। स्वामीजी इस मंत्र का उपयोग युवा वर्ग और युवा मानसिकता वालों के लिए अक्सर करते थे। भारत में 1985 से उनके जन्म दिन 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। अब यह तिथि अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में भी मनायी जाने लगी है।

स्वामी विवेकानन्द के जन्म को 150 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। उनकी 150 वीं जयंती चार वर्ष तक मनाई जाएगी। ऐसे महान पुरुष को इस अवसर हम नमन करते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में जब अंग्रेजी राज में सूर्य कभी अस्त नहीं होता था, तब शिकागो की विश्व धर्म सभा में स्वामी विवेकानन्द का उद्‌बोधन भारतीय धर्म संस्कृति की जयघोष करता हुआ गूँजा था। उस सभा में उनका पहला वाक्य "अमेरीका के बहिनों और भाईयो!" ने श्रोताओं पर जादू कर दिया। उन्होंने कहा था कि भविष्य में दलितों और स्त्रियों को विश्व का नेतृत्व करते देखा जा सकेगा। अब से डेढ़ सौ साल पहले कलकत्ता के एक सम्पन्न परिवार में जन्मे नरेन्द्र का आगमन हुआ, उदारता, त्याग, बैराग्य के साथ विवेक और तर्क की प्रतिभा जैसे विरासत में मिली थी। कहते हैं कि माँ भुवनेश्वरी देवी ने उनके जन्म के लिए शिव की आराधना की थी। उनके परिवार में उनके पिता की मृत्यु के बाद काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें सन्यास की दीक्षा दी और नाम रखा–स्वामी विवेकानन्द। स्वामीजी ने 1888 से 1892 तक पूरे देश में यात्रा की और भारतीय धर्म तथा समाज को निकट से देखा। मात्र 39 वर्ष की अवस्था में उन युगपुरुष, वेदान्त केसरी ने अपनी प्रभावपूर्ण वाणी और प्रभावशाली व्यक्ति के साथ सम्पूर्ण विश्व को मानवता, भाईचारे और "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" का जो अनमोल संदेश दिया वह युगों–युगों तक अविस्मरणीय रहेगा। महात्मा गाँधी ने कहा था– "स्वामी विवेकानन्द के उपदेशों को पढ़कर मेरे मन में देश के प्रति प्रेम और श्रद्धा में हजार गुना वृद्धि हुई है।"

❖

इतिहास के झरोखे से

क्या आप जानते हैं?

दीपिका वार्ष्णेय बी. टी. सी.

- भगवान श्रीकृष्ण जी विष्णु के आठवें अवतार थे। अपने माता–पिता की आठवीं संतान थे और अष्टमी के दिन ही उन्होंने जन्म लिया था। इस प्रकार आठ का अंक श्रीकृष्ण भगवान के जीवन में महत्वपूर्ण है। 16 हजार 108 रानियों में से अष्ट लक्ष्मी जी का अवतार थीं। उनकी आठ ही पटरानी थीं।
- इस जगत को बुद्धि (गीता) प्रदान करने वाले प्रभु का जन्म बुधवार को हुआ था।
- भगवान श्रीकृष्ण के शंख का नाम पाञ्चजन्य है, जिसे उन्होंने पाञ्चजन्य नामक राक्षस का वध करके प्राप्त किया था।
- भगवान श्रीकृष्ण ने समुद्र से भूमि प्राप्त करके विश्वकर्मा के द्वारा द्वारिकापुरी का निर्माण कराया।
- अपने गौलोक गमन के पश्चात् द्वारिका की भूमि समुद्र को लौटाने का वचन भी दिया। इसी कारण से प्राचीन द्वारिका समुद्र में डूब गयी।

सन्दर्भ– श्रीमद् भागवत गीता महापुराण

❖

Scanned by CamScanner

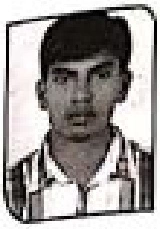

लेख

दोहरा मापदण्ड

कुलदीप सिंह बी.एड. छात्र

''किसका फोन है राजू?'' श्याम ने पूछा, ''पता नहीं पिताजी'' राजू ने जबाव दिया, ''अगर रामू अंकल का हो तो कहना, पिताजी घर पर नहीं है'' श्याम ने कहा।

राजू पिता के मुँह से यह वाक्य सुनकर हक्का-बक्का रह गया। सहसा उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ उसने हैरानी से पूछा ''पिताजी क्या मैं झूठ बोल दूँ?'' श्याम ने बेटे के मन में उठे आक्रोश (बवाल) को बगैर समझे ही बोल दिया, "हाँ- हाँ झूठ कह दो।'' राजू का दिमाग चकरा गया। सात साल का राजू अब भी नहीं समझ पाया कि थोड़ी देर पहले जिस झूठ के लिए पिताजी मुझे इतना डाँट रहे थे, उसी झूठ को वह अब खुद बोलने को कह रहे हैं।

अगले दिन राजू की नानी का फोन आया, राजू ने अपनी माँ को फोन पकड़ा दिया और माँ की बातें सुनने लगा, उस की माँ नानी से कह रही थीं, माँ हमारे पास खाने को तो पैसे हैं नहीं, गौरव को बिजनेस के लिए हम एक लाख रुपये तो क्या दस हजार रुपये भी नहीं दे सकते, और शांति ने अपनी माँ से बात करके फोन रख दिया।

शाम को शांति के घर शीला आई उसने शांति को बताया कि सम्राट शोरूम में एक लाख रुपये का हीरे का बहुत ही प्यारा हार है, शांति बिना किसी देरी के शीला के साथ हार खरीदने चली गई, राजू यह देखकर हैरान था कि उसकी माँ ने नानी से कैसे झूठ बोल दिया, जबकि उनके पास रुपये थे। वह माँ जो उसे दिन-रात सच्चाई का पाठ पढ़ाती रहती हैं। आज खुद झूठ बोल रहीं है। शांति के घर वापस आने पर राजू ने माँ से झूठ बोलने का कारण पूछा तो वह बोलीं, ''तुम अभी छोटे हो, झूठ कहाँ बोलना है, यह तुम्हारी समझ से बाहर है'' शांति ने यह बात बेटे से साधारण तौर पर कही। परन्तु राजू के मन में ये बात भर गई और उसने भी अब बात-बात पर माँ से झूठ बोलना शुरू कर दिया।

बाल सुलभ मन पर बड़ों की इस दोहरी नीति का क्या प्रभाव पड़ता है, शायद बड़े कभी नहीं सोचते, जिससे बच्चे छिपाने जैसी गलत आदत सीख लेते हैं या फिर कुंठा के शिकार हो जाते हैं। इसलिए जहाँ तक सम्भव हो सके अपने जीवन में सच्चाई को पूरा महत्व दीजिए।

यह घटना केवल शांति और श्याम के घर की ही नहीं है, बल्कि उन सभी घरों की है, जहाँ माता-पिता दोहरा मापदंड अपनाते हैं, जिसमें बच्चा खुद तो यह समझ नहीं पाता कि क्या गलत है और क्या सही है, दूसरी तरफ उसके माता-पिता भी उसके मन में उठ रहे तूफान को नहीं समझ पाते हैं।

यह सच है कि व्यावहारिक जीवन में हर जगह सच नहीं बोला जा सकता, परन्तु जहाँ तक सम्भव हो सके, बच्चों के सामने कभी झूठ न बोलें यदि झूठ बोलना ही पड़े तो उसे सच के करीब रखकर ही बोलिए, बच्चों के मन और उनकी भावनाओं को समझते हुए उन्हें समझाने का प्रयास कीजिए कि आपने किन परिस्थितियों में झूठ बोला और क्यों ?

'मेरा अभिप्राय इस कहानी के माध्यम से माता पिता को अपने बच्चों के प्रति जाग्रत करना है।'

धन्यवाद!

दूसरों के अवगुण देखना ही अवनति का कारण है और प्रत्येक व्यक्ति से गुण ग्रहण करना ही उन्नति का मार्ग है।

Scanned by CamScanner

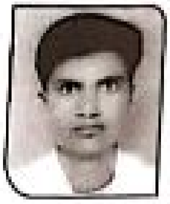

लेख

सहनशीलता

आशीष कुमार सुमन बी. एड.

हर युग में ही, भले ही वह सतयुग रहा, त्रेता रहा, द्वापर रहा अथवा कलयुग रहा, महापुरुषों ने इन्सान को ऐसे भाव प्रदान किये हैं। उन समय भी सच्चाई पर चलने वाले सदैव इन्हीं भावों से युक्त रहते थे। भक्त प्रहलाद का जीवन हम देखें तो उसके अपने ही पिता उससे घृणा और वैर करने वाले थे। फिर भी भक्त ने सत्य की प्रतिष्ठा की। त्रेता युग में भगवान श्रीराम जी ने मर्यादाएँ स्थापित की, प्यार, करुणा और सहनशीलता का प्रमाण दिया और सत्य की प्रतिष्ठा की। इसी प्रकार द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण जी ने इसी सत्य को स्थापित किया और जीने का सही ढंग सिखाया। इसी प्रकार कलयुग में हजरत मुहम्मद साहिब ने, श्री गुरुनानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोविन्द सिंह जी तक तथा और भी अनेकों संत हुए, सभी ने इसी सत्य की प्रतिष्ठा की। आज हम सब भी इसी प्रयास में है कि इस सत्य को ही जीवन में प्राथमिकता दी जाए।

आज इन्सानी रिश्तों को श्रेष्ठ न मानने के कारण ही इन्सानों के बीच दूरियाँ बनी हुई हैं। कहीं प्रान्त के नाम पर, कहीं भाषाओं के नाम पर, कहीं जाति-पाँति के नाम पर, ऐसे बहाने गढ़ लिये जाते हैं, जो इस देश को गिरावट की तरफ ले जाने का काम कर रहे हैं। इसे नीचा दिखाने का काम कर रहे हैं। अगर हम सही इन्सान बन जाते हैं तो हममें सहनशीनलता, प्रेम एवं त्याग की भावना आ जाती है जो हमसे नेक कर्म करवाती है। फिर हमें अपने फर्ज़ की पहचान हो जाती है तथा उनके पालन करने की भावना जाग्रत हो जाती है। ❖

लेख

रविवार की छुट्टी

धर्मेन्द्र कुमार बी. एड.

रविवार की छुट्टी बहुत ही प्यारी होती है, इस दिन 6 दिनों के काम के उपरान्त एक दिन आराम मिलता है। लगातार काम करते-करते तन और मन दोनों विश्राम चाहते हैं। इसलिए रविवार की छुट्टी का विधान किया गया है। रविवार आपका अपना दिन होता है।

रविवार की छुट्टी जितनी मीठी है उतना ही इसका इतिहास दर्दनाक है। एक जमाना था, जब मजदूर साल भर काम करते था, सोने के अलावा उन्हें कभी आराम नहीं था। वे अपने बच्चे को सोते हुए देखते। लगातार परिश्रम से उनका बदन टूटता था। उनकी थकान को विराम का मौका ही नहीं मिलता था।

एक दिन 1 मई 1887 ई. में अमेरिका के शिकागो शहर के क्रुद्ध मजदूरों ने मालिकों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। कई मजदूर मारे गए। शिकागो में खून की नदी बहने लगी। कारखानों के मालिक भयभीत हो गए, प्रशासन भी डोलने लगा। अन्त में मजदूरों की मांगों को मान लिया गया। उसी दिन से रविवार की छुट्टी मनाने की शुरुआत हुई।

सप्ताह में एक दिन रविवार की छुट्टी और आठ घण्टे काम का विधान किया गया। मई दिवस मनाने के पीछे भी यही इतिहास है-

एक मई का दिन था साथी रोटी का त्यौहार।
शहर शिकागो में जगी थी मेहनत पहली बार॥ ❖

सफलता का मतलब सिर्फ असफल होना नहीं है, बल्कि सफलता का मतलब अपने असली मकसद को पाना। इसका मतलब है पूरा युद्ध जीतना, न कि छोटी-मोटी लड़ाइयाँ जीतना। **एडविन सी. ब्लिस**

Scanned by CamScanner

संस्थापक दिवस 11 सितम्बर, 2012

समारोह में विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते महाविद्यालय के प्राध्यापक गण

डा. खजानसिंह — डा. रमेश गोयल (वैज्ञानिक सर्जन मुम्बई)

श्रीमती सविता यादव — श्रीमती रजनी गोयल उद्योगपति

श्री अनिल खण्डेलवाल सदस्य प्रबन्ध समिति — डा. जे. के. शर्मा

श्री लाल गोपाल प्रसिद्ध उद्योगपति — डा. हरीश गोयल

श्रीमती श्रीदेवी गोयल आई.पी.एस., डी.जी. महाराष्ट्र — श्रीमती रंजना सिंह

श्री लक्ष्मी चन्द — इ. इन्द्रेश कौशिक सदस्य प्रबन्ध समिति

श्री पुष्पेन्द्र सिंह — श्री असलूब अहमद कोषाध्यक्ष प्रबन्ध समिति

डा. गोविन्द वार्ष्णेय — श्री चाँद गोयल आई.ए.एस., मुख्य सचिव

Scanned by CamScanner

संस्थापक दिवस 11 सितम्बर

संस्थापक दिवस पर आयोजित विभिन्न आकर्षक कार्यक्रमों की झलकियां

जर्नल 'ज्ञान भव' का विमोचन करते अतिथिगण

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते छात्र-छात्राएं

विशिष्ट अतिथि डी.आई.जी. श्री डी. प्रकाश द्वारा उद्बोधन

मुख्य अतिथि महापौर श्रीमती शकुन्तला भारती को स्मृति चिन्ह प्रदान करते सचिव

सचिव श्री वार्ष्णेय कालिज द्वारा प्रबन्धक श्री मनोज पाठक को प्रशस्ति पत्र देते हुए

विशिष्ट अतिथि डी.आई.जी. श्री डी. प्रकाश को स्मृति चिन्ह प्रदान करतीं अध्यक्षा

विशिष्ट अतिथि श्री भूपेन्द्र गुप्ता आर.ए.एफ. कमान्डेन्ट को स्मृति चिन्ह प्रदान करते सचिव श्री दीपक गोयल

संस्थापक समारोह में उपस्थित अतिथिगण एवं छात्र-छात्राएं

जनजागरण अभियान

राष्ट्रीय कर्तव्य के अन्तर्गत मतदाताओं के जन जागरण हेतु विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां

मतदाताओं का पंजीकरण करते टीम सदस्य

मतदाता पंजीकरण के विशेष कार्यक्रम के अवसर पर जिलाध्यक्ष तथा डा. रक्षपाल सिंह जी का सम्मान करते प्राचार्य डा. जी. के. गुप्ता

मतदाता पंजीकरण हेतु महाविद्यालय हेल्प डेस्क के संकायवार सदस्य

जिलाधिकारी महोदय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय मतदाता जागरूकता रैली में सहभागिता करते प्राध्यापकगण एवं छात्र-छात्राएं

Scanned by CamScanner

सामाजिक गतिविधियाँ

समाज सेवा के अन्तर्गत महाविद्यालय द्वारा संचालित 'स्वराज्य स्वावलम्बी योजना' तथा 'पॉलीथिन हटाओ पर्यावरण बचाओ' रैली की झलकियां

कार्यक्रम में उपस्थित नगर विधायक मा. जफर आलम, ग्राम प्रधान कर्मेन्द्र सिंह, महाविद्यालय के सचिव श्री दीपक गोयल, योजना प्रभारी डा. बी. डी. उपाध्याय

मंचासीन अतिथिगण

सिलाई मशीन भेंट करते प्राचार्य एवं प्राध्यापकगण

पर्यावरण चेतना हेतु जागरूकता रैली में सहभागिता करती डायट प्राचार्या साथ में महाविद्यालय के प्राध्यापकगण एवं छात्र–छात्राएं

पर्यावरण जागरूकता रैली में सहभागिता करता ज्ञान परिवार महाविद्यालय

ग्राम बढ़ौली में सिलाई मशीन भेंट करते ज्ञान महाविद्यालय परिवार के सदस्यगण

Scanned by CamScanner

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्र 2012–13 में महाविद्यालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना एवं स्काउट गाइड शिविर के विभिन्न कार्यक्रम

Scanned by CamScanner

अतिथि व्याख्यान माला

सत्र 2012–13 में महाविद्यालय द्वारा विभिन्न संकायों में आयोजित अतिथि व्याख्यान

डॉ. आमिर एसो. प्रोफेसर ए.एम.यू. द्वारा जन्तु विज्ञान विभाग में व्याख्यान

डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव एसो. प्रोफेसर डी.एस. कालेज, अलीगढ़ द्वारा वनस्पति विज्ञान विभाग में व्याख्यान

डॉ. एस.के वार्ष्णेय एसो. प्रोफेसर, राजकीय डिग्री कालिज, अतरौली द्वारा वाणिज्य विभाग में व्याख्यान

अर्थशास्त्र विभाग में व्याख्यान के उपरान्त स्मृति चिन्ह प्राप्त करती डॉ. इन्दु वार्ष्णेय एसो. प्रोफेसर डी.एस. कॉलिज, अलीगढ़

डॉ. एस.के. वार्ष्णेय पूर्व एसो. प्रोफेसर एस.वी. कॉलिज द्वारा भौतिक विभाग में व्याख्यान

डॉ. मृत्युन्जय सिंह एसो. प्रोफेसर राजकीय डिग्री कॉलिज, खैर द्वारा वाणिज्य विभाग में व्याख्यान

डॉ. चन्द्रकान्ता अग्रवाल एसो. प्रोफेसर टी.आर. कॉलिज द्वारा मनोविज्ञान विभाग में व्याख्यान

डॉ. नीता कुलश्रेष्ठ एसो. प्रोफेसर एस.वी. कॉलिज द्वारा अंग्रेजी विभाग में व्याख्यान

Scanned by CamScanner

अतिथि देवो भवः

विभिन्न अवसरों पर उपस्थित अतिथियों का सत्कार करते महाविद्यालय के प्रवक्तागण

प्रो. आर. के. शर्मा — डा. गौतम गोयल

डा. एच.बी.सिंह — डा.बी.डी.उपाध्याय

मैनेजर बैंक ऑफ बड़ौदा — प्रो. आर. के. मिश्रा

डा. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ — श्रीमती शकुन्तला भारती 'महापौर'

डा. प्रबोध श्रीवास्तव — श्री राजेश कुमार

डा. एस. एस. यादव — डा. बी. डी. गुप्ता

डा. प्रमोद कुमार — श्री चन्द्रशेखर वरिष्ठ पत्रकार

डा. खजान सिंह — डा. बी. डी. गुप्ता पूर्व विभागाध्यक्ष बी.एड.

Scanned by CamScanner

अतिथि देवो भवः

विभिन्न अवसरों पर उपस्थित अतिथियों का सत्कार करते महाविद्यालय परिवार के सदस्य

डॉ. वी. के. गुप्ता — प्राचार्य
डॉ. डी. के. शर्मा — प्राधानाचार्य हिन्दू कॉलिज

डॉ. ललित उपाध्याय
डॉ. डी. के. सक्सेना — प्राधानाचार्य डी. एस. इंटर कॉलिज

श्री सबरस मुरसानी — हास्य कवि
डॉ. एस. एस. यादव

श्री दीपक गोयल — सचिव
श्री धीरेन्द्र सचान — ए.डी.एम. सिटी

डॉ. हरीश गोयल
डॉ. एस.पी.एस. जादौन — पूर्व प्राचार्य, एस.वी. कॉलेज

डॉ. आर. के. पाराशर
श्री अशोक अंजुम — कवि

श्रीमती चन्दन चटर्जी
प्रो. मधु चाहर

डॉ. वाई.के. गुप्ता — उप प्राचार्य
श्री उमाशंकर राही — कवि

Scanned by CamScanner

लेख

क्लोरीन की आत्मकथा

प्रियंका कुमारी बी. एड.

मेरा नाम क्लोरीन है। प्यार से मुझे C, कहते हैं। मेरे पिता का नाम Mno_2 (मैगनीज डाइआक्साइड) व माता का नाम HCL है। मिस्टर शीले ने मेरा पालन पोषण किया है। उन्हें मेरे अस्तित्व का muu में पता चला। मेरे एक पुत्र हुआ। जिसको ब्लीचिंग पाउडर के नाम से जाना जाता है। मेरा पुत्र कीटाणुओं को नष्ट करने में सहायता करता है। मैं सफेद रंग के वस्त्र पहनती हूँ। मेरी माँ भयंकर HCL गुणों से भरपूर है। वह मनुष्यों के फेफड़ों और हृदय को स्पर्श मात्र से जला देती है। वह अपनी सहेली cacor के साथ मनुष्यों की सांसे फुला देती है। स्वभाव से मैं जहरीली हूँ, पर परीक्षक से बहुत प्यार करती हूं जब मैं ठण्डे पानी में नहाती हूँ तो लोगों को फायदा करती हूँ। लोग बड़े आनन्द से मेरे नहाये पानी को पीते हैं। सुन्दर फूल तो मेरे नाम से ही काँपते हैं। मेरे तनिक स्पर्श से ही वो अपनी सुन्दरता को खो देते हैं।

घोटाला (भ्रष्टाचार)

विजय कुमार बी. एड.

घोटाले करने की शायद, दिल्ली को बीमारी है।
रपट लिखाने मत जाना तुम, ये धन्धा सरकारी है॥
तुमको पत्थर मारेंगे, तब रुसबा तुम हो जाओगे।
मुझसे मिलने मत आओ, मुझपे फतवा जारी है॥
हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आपस में सब भाई हैं।
इस चक्कर में मत पड़ियेगा, ये दावा अखबारी है॥
सारी दुनिया तेरी है, तू ही सबका रखवाला है।
मुस्लिम का अल्लाह है और हिन्दू का गिरधारी है॥
भारतवासी कुछ दिन से रूखी रोटी खाते हैं।
पानी पीकर जाते हैं, महंगी सब तरकारी है॥
नया विधेयक लाओ, कि बूढ़े अब आराम करें।
देश युवाओं को दे दो, अब नये खून की बारी है॥
जीना है तो झूठ भी बोलो, घुमा फिराकर बात करो।
केवल सच्ची बातें करना, बहुत बड़ी बीमारी है॥

लेख

खुल जा सिम-सिम

योगेश कुमार शर्मा बी. एड.

सिम का मतलब होता है सब्सक्राइबर आईडेंटिटी मॉड्यूल। मोबाइल में किसी भी कंपनी का सिम डालते ही मोबाइल काम करने लगता है। सिम कार्ड की अपनी पर्सनल आईडेंटिटी होती है। सिम कार्ड को अगर मोबइल की हार्ड डिस्क कहा जाए तो गलत न होगा। इसमें आप फोन बुक, मैसेज तथा दूसरा डाटा सेव कर सकते हैं। पहला सिम कार्ड 1991 में जिसाके और डविडिएंट ने बनाया था। उन्होंने 300 सिमकार्डों को फिनिश वायरलैस आपरेटर को बेचा था। सेटेलाइट फोन इरीडियम, इमारसेट में भी सिम कार्ड का इस्तेमाल होने लगा।

सिम का इस्तेमाल– जीएम (ग्लोबल सिस्टम फोर मोबाइल कम्युनिकेशन) और सीडीएमए (कोड डिवीजन मल्टीपल एक्सेस) नेटवर्क के अनुरूप सिम का इस्तेमाल होता है। सिम कार्ड में ही सर्विस सब्सक्राइबर की जानकारी स्टोर होती है जो कि यूजर की आइडेंटिटी को यूनीक बनाती है। कम्प्यूटर की तरह सिम कार्ड में भी दो तरह के ऑपरेटिंग सिस्टम काम करते हैं, नेटिव और जावा कार्ड । सिम कार्ड में नेटवर्क स्पेसिफिक इनफॉरमेशन स्टोर होती है। प्रत्येक सिम को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसके आईसीसी–आईडी (इंटीग्रेटेड सर्किट कार्ड–आईडी) के द्वारा पहचाना जाता है।

सिम में लिखे नम्बरों का मतलब– सामान्य सिम कार्ड 19 डिजिट का होता है लेकिन कुछ सिम कार्ड 20 डिजिट के भी होते हैं। अगर किसी सिम में 89 92 10 1200 00 320451 0 लिखा है, तो इसमें शुरूआती दो डिजिट (89) टेलीकॉम आईडी, उसके बाद के दो डिजिट (92) किसी देश का कोड, अगले दो डिजिट (10) नेटवर्क कोड, उसके बाद के चार डिजिट (1200) जिस महीने और वर्ष में वह सिम बनाया गया है, उसके बाद के दो डिजिट (00) स्विच कान्फीगरेशन कोड और अगले छः डिजिट (320451) सिम नम्बर होते हैं। अन्तिम डिजिट (0) को चेक डिजिट कहा जाता है। सिम की मैमोरी तकरीबन 16 से 64 केबी की होती है।

लेख

शिक्षा का अधिकार : सब पढ़ें, सब बढ़ें

प्रवीण कुमार बी.टी.सी.

संविधान के अनुच्छेद 45 के अनुसार- "देश में इस संविधान के लागू होने के समय से प्रत्येक राज्य '10' वर्ष के अन्तर्गत 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करेगा।"

किन्तु सरकार 10 वर्ष की समय सीमा में यह कार्य नहीं कर सकी और यह कानून 60 वर्ष बाद लागू हो सका है। 86 वें संशोधन 2002 के द्वारा अगस्त 2009 में कार्यरूप धारण करके भारतीय युवा राष्ट्र निर्माताओं के लिए सकारात्मक दिशा मुहैया करवाता है। यह अधिनियम 1 अप्रैल 2010 से लागू हो गया है और देश के इतिहास में पहली बार प्रधानमंत्री ने किसी अधिनियम के लिए राष्ट्र को सम्बोधित किया है। 86 वें संशोधन अधिनियम 2002 के द्वारा अनु. 21 (क) स्थापित करके एक नया मूल अधिकार बनाया है। इसके द्वारा राज्य को यह कर्त्तव्य सौंपा गया है कि वे 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा।

86 वें संशोधन से अनुच्छेद 51 (क) में एक मूल कर्त्तव्य भी जोड़ा गया है। इसके अनुसार प्रत्येक माता-पिता या अभिभावक का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने बालक या प्रतिपाल्य के लिये 6 से 14 वर्ष की आयु के बीच शिक्षा का प्रबन्ध करेगा।

इस विधेयक की निम्नलिखित विशेषताएं हैं –

- विधेयक में 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए नि:शुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है।
- विधेयक में कमजोर व उपेक्षित वर्गों के बच्चों के लिए शिक्षा के समुचित अवसर सुनिश्चित करने, शिक्षकों की ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में तैनाती में असन्तुलन समाप्त करने व समुचित प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की नियुक्ति करने के साथ-साथ विद्यालय भवनों, शिक्षक छात्र अनुपात, शैक्षणिक कार्य दिवसों व शिक्षकों के कार्य के घंटों आदि के लिये मानकों को निर्धारण किया गया है।
- बच्चों को शारीरिक दंड देने, प्रवेश में बच्चों व अभिभावकों की स्क्रीनिंग करने, कैपिटेशन फीस लेने तथा विद्यार्थियों को स्कूल से निष्कासित करने आदि को इस विधेयक में प्रतिबंधित किया गया है।
- जनगणना, चुनाव कार्य व आपदा राहत कार्यों को छोड़कर अन्य किसी कार्य के लिये शिक्षकों की नियुक्ति किये जाने पर रोक लगाई गई है।
- बिना समुचित मान्यता के किसी स्कूल का कार्य संचालन दंडनीय अपराध है।
- किसी बच्चे को किसी कक्षा में न तो अनुत्तीर्ण किया जायेगा, न ही प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति तक विद्यालय से निष्कासित किया जायेगा और न ही उन्हें शारीरिक या मानसिक दण्ड दिया जायेगा
- सरकारी सहायता न लेने वाले निजी स्कूलों को भी इस विधेयक के अधिनियमित होने पर प्रवेश स्तर की प्रारम्भिक कक्षा में प्रवेश की 25 प्रतिशत सीटें अपने आस-पास के वंचित बच्चों के लिए आरक्षित रखनी होंगी। ऐसे बच्चों की पढ़ाई का खर्च सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

जो लोग अवसर को पहचान नहीं पाते, उन्हें दरवाजे पर अवसर की दस्तक शोर लगती है।

Scanned by CamScanner

कविता

माँ

दीपा वार्ष्णेय बी.एड.

माता को जो प्यार करें, वो लोग निराले होते हैं,
जिसे माँ का आशीर्वाद मिले, वो किस्मत वाले होते हैं।
चाहे लाख करो तुम पूजा, और तीरथ करो हजार,
मगर माँ-बाप को ठुकराया तो सब कुछ है बेकार॥
जो माँ की ना सुनेगा, तेरी कौन सुनेगा,
जो माँ को ठुकरायेगा, दर-दर की ठोकर खायेगा..जो माँ की..।

एक बेटा अपने बेटे को भेंट में गाड़ी देता है,
वो ही बेटा माता-पिता को थाली तक नहीं देता है।
फिर भी वो माता कभी खफा नहीं होती,
जुबां से कभी बद्दुआ नहीं देती॥
माता जो तेरी ममता की ज्योति, माता के आँसू हैं सच्चे मोती।
उनके दिल को ठेस लगा के, बेटा संभल न पायेगा..जो माँ की..।

चाहे लाखों कमा लो, चाहे करोड़ों भी कमा लेना,
जिसने माता को नहीं जीता, धिक्कार है उसका जीना।
गर्व न कर तू धन का ओ पगले, गाड़ी ये बंगले यहीं रह जायेंगे,
माता-पिता की ले ले दुआएं, जीवन बनेगा तेरा सुखदाई॥
जिसने नहीं ली माँ की दुआएँ, हरदम वो पछतायेगा.. जो माँ की..।

बुढ़ापे में माता-पिता का सपना तब टूट जाता है,
जब दौलत के संग माता-पिता का बँटवारा हो जाता है।
एक बेटा अपने घर माँ को ले जाये, दूसरा पिता को घर ले जाये,
एक होते भी हो गये पराये, दोनों बिछुड़कर आँसू बहायें॥
जो बबूल को बोयेगा, वो आम कहाँ से खायेगा..जो माँ की..।

इस दुनिया को माँ की महिमा सबको आज सुनानी है,
माँ और बेटे के रिश्ते की ये तो अमर कहानी है।
माता ने बेटे को जन्म दिया है, बाप ने बेटे का सब कुछ किया है,
तूने उसका क्या बदला दिया है, किसके भरोसे छोड़ दिया है॥
माता-पिता को दुःख दे के, कहाँ से तू सुख पायेगा......।
जो माँ की न सुनेगा..॥

Scanned by CamScanner

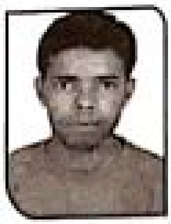

कविता

मेरा महाविद्यालय

अश्वनी कुमार भास्कर बी. एड.

ज्ञान महाविद्यालय,
तेरी अजब निराली शान।
वैभवशाली भवन शान्तिमय,
नाम है तेरा बहुत महान॥

साक्षरता के प्रसार में,
खूब बढ़ाया तूने हाथ।
लेते तेरा नाम सभी जन,
पूरे यश गौरव के साथ॥

बच्चे बनें सुयोग्य नागरिक,
उन्हें सिखाता बहुविधि ज्ञान।
स्वच्छ सुडौल व्यक्तित्व बनाकर,
शिक्षा के देता परिधान॥

पशुता और अज्ञान सभी को,
झण्डी लाल दिखाता है।
दानव को मानव कर देता,
इसलिए सबको भाता है॥

दिन दूनी और रात चौगुनी,
तू नित उन्नति करता जा।
भारत माँ का हृदय सरोवर,
प्रेम ज्ञान से भरता जा॥

तकनीकी के आधुनिक प्रकाश में,
तेरी है अब ज्योति प्रचण्ड।
फूले फले और उन्नति करे,
अश्वनी की कामना है अखण्ड॥

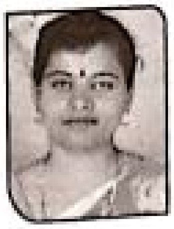

कविता

हिन्दी की दुर्दशा

डौली रानी बी. टी. सी.

आज के युवक-युवतियों की English से हम हो गये क्षुब्ध,
एक हिन्दी प्रेमी की हिन्दी सुनकर हम हो गये मुग्ध।
उन्होंने अपने हाथ को हवा में लहराया,
और जोरदार आवाज में फरमाया॥

लेडीज एण्ड जैन्टिलमैन इण्डिया हमारा कन्ट्री है,
और हम सब इसके सिटीजन हैं।
इसलिए हिन्दी बोलना हमारी ड्यूटी है,
पर हिन्दी बेचारी की तो किस्मत ही फूटी है॥

आजकल की जेनरेशन जब भी माऊथ खोलती है,
ओनली एण्ड ओनली English में ही बोलती है।
हमें अपनी डेली लाइफ में हिन्दी लेंग्वेज को लाना है,
और इसे वर्ल्ड वाइड बनाना है॥

दैन ओनली भारत माता के ड्रीम्स होंगे सच,
सो फौर दैट थैंक्यू वेरी वैरी मच।

पैसा

पढ़ता लिखता है कौन यहाँ, किसको पढ़ने की फुर्सत है।
घर बैठे डिग्री मिलती है, पढ़ने की किसको जरूरत है॥
दुनिया में पैसा चलता है, पैसे से दुनिया चलती है।
पैसे से डिग्री मिलती है, ये ही हम सबकी गलती है॥
न जाने कैसे लोग हैं ये, पैसा-पैसा चिल्लाते हैं।
पैसा न हुआ अमृत हो गया, क्या पैसे को भी खाते हैं।
अब भारत में ये भी देखो, पैसे को पूजा जाता है।
पैसे पाने की ही खातिर, बहुओं को फूँका जाता है॥
अगर रहा यह हाल भारत का, तो ऐसा कलयुग आयेगा।
इनसान न होगा धरती पर, केवल पैसा रह जायेगा॥

जब लोग यह कहते हैं कि मैं यह काम किसी दिन कर लूंगा तब इसका यह साफ मतलब है कि यह काम कभी नहीं होगा।

Scanned by CamScanner

कविता

समय का महत्व

नीतू सिंह M. Com. (Final)

एक वर्ष का महत्व विद्यार्थी से पूछो,
जो परीक्षा में फेल हो गया।
एक महीने का महत्व उस माँ से पूछो,
जिसने एक महीने पहले बच्चे को जन्म दिया।
एक दिन का महत्व रोज मेहनत कर पेट पालने वाले,
मजदूर से पूछो, जिसे दिन भर कोई कार्य नहीं मिलता।
एक मिनट का महत्व पूछो उससे,
जो दुर्घटना से बाल-बाल बच गया।
एक सेकेण्ड के दसवें भाग का महत्व उससे पूछो,
जो ओलम्पिक खेलों में गोल्ड मेडल न पा सका।

कविता

रूप दिये से तुम ले लो.

अन्जली सिंह बी. सी. ए. II

मौसम दे रहा निमंत्रण, मौसम का मन रख लो।
कांति बढ़ जायेगी तन की, रूप दिये से तुम ले लो।

खयालों में खोया मन, आशंकित क्यों हैं बताओ।
ऐसे बुझे-बुझे मत रहो, कुछ पल चंचल हो जाओ।

बुलबुल की तरह चहको, ताजे गुलाब की तरह खिलो।
खुशबू की लहरों पर सवार होकर, किनारों से मिलो॥

पर्वों का यह "दीप पर्व", नहीं कोई औपचारिकता।
सदाचार से इसे मनाओ, इसमें कैसी विवशता॥

जगमगाना है तो........

मुश्किलों से भी निकलना सीखो।
जगमगाना हो तो जलना सीखो॥
इस जमाने को बदलना छोड़ो।
हो सके तो खुद बदलना सीखो॥
खुद की खुशियों में जियों पर दोस्तो।
गैरों के गम में पिघलना सीखो॥
एक जैसा रंग तो रहता नहीं।
सूर्य से उगना व ढलना सीखो॥
मौसमों के साथ खुद को ढालो।
बर्फ से जमना व गलना सीखो॥
जब फिसलने की तमन्ना हो जवां।
उन दिनों में संभलना सीखो॥
दिलों के रिश्ते टूट जाते हैं "दोस्तो"
हमसफर के साथ चलना सीखो॥

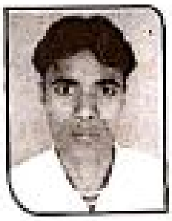

आगे की सोच

राजेन्द्र सिंह बी. एड.

एक बुजुर्ग कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक व्यक्ति मिल गया। वह अपना दुखड़ा सुनाने लगा। वह व्यक्ति अपने साथ गुजरी हुई बातों को लेकर दुखी था। बुजुर्ग ने समझाया कि जो हुआ सो हुआ, आगे की सोच। लेकिन उस पर कोई प्रभाव पड़ता नहीं दिखा। चलते-चलते एक तालाब आ गया, जिसके पार दोनों को पहुँचना था। उसे पार करने के लिए लाइन से बड़े-बड़े पत्थर रखे हुए थे। बुजुर्ग ने कहा-तुम ऐसा करो, पहले मैं तालाब पार कर लेता हूँ, इसके बाद तुम इन पत्थरों से होकर तालाब पार करो, लेकिन आगे वाले पत्थर पर जाने के बाद पीछे वाला पत्थर भी उठा लेना। वह व्यक्ति बोला-दादाजी, ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा करने से तो मैं तालाब को पार ही नहीं कर पाऊँगा। तब बुजुर्ग बोले, तो फिर अपने अतीत का बोझ लेकर क्यों घूमते हो ?

कथा-मर्म: गुजरी हुई अप्रिय बातों का भूल जाना ही बेहतर है। तभी हम जीवन में आगे बढ़ सकते हैं।

Scanned by CamScanner

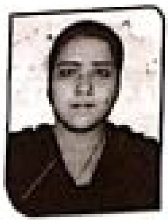

कविता

शिक्षा और साक्षरता

नीलम वर्मा बी. एड.

शिक्षा और साक्षरता का, घर-घर में दीप जलायेंगे।
तम को दूर भगाकर हम, रोज दीवाली मनायेंगे॥
दूर-दूर फैले उजियारा, भारत की इस धरती पर।
सूरज चाँद सितारे बनकर, चमकेंगे इस धरती पर॥
दैदीप्यमान होगा मन-मन्दिर, पाप सभी मिट जायेंगे।
शिक्षा और साक्षरता..............................जलायेंगे॥
ऊँच-नीच व भले-बुरे का, ज्ञान स्वयं आ जायेगा।
जाति-पाति व तेरे-मेरे का, भेद सभी मिट जायेगा॥
एक-दूसरे के आपस में, गले सभी लग जायेंगे।
शिक्षा और साक्षरता..............................जलायेंगे॥
पाठ नागरिकता का पढ़कर, अपने को पहचानेंगे।
अधिकारों व कर्त्तव्यों का, सही अर्थ तब जान पायेंगे॥
काम, क्रोध, मद, लोभ मोह से, मुक्ति तब ही पायेंगे।
शिक्षा और साक्षरता..............................जलायेंगे॥
दीप ज्ञान का जगमग होगा, मन-मंदिर के आंगन में।
कमी न कोई रह पायेगी, शासन और अनुशासन में॥
भ्रष्टाचारी दुष्ट स्वयं ही सुगम मार्ग पर आयेंगे।
शिक्षा और साक्षरता..............................जलायेंगे॥
मानव-दानव नहीं रहेगा, नर-पशु नहीं कहलायेगा।
भारत का हर भारतवासी, महामानव बन जायेगा।
जन,गण,मन अधिनायक जय हे, हर भारतवासी गायेगा॥
शिक्षा और साक्षरता का, घर-घर में दीप जलायेंगे।
तम को दूर भगाकर हम, दीवाली रोज मनायेंगे॥

अज्ञानी होना उतनी शर्म की बात नहीं, जितनी कि किसी कार्य को ठीक ढंग से सीखने की इच्छा न होना।

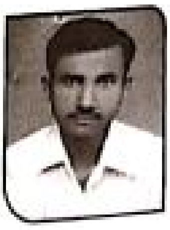

कविता

गुरू प्रेरणा

नीरेश कुमार बी. एड. प्रवक्ता

जिन्दगी आपकी सदा मुस्कुराती रहे,
ज्ञान के पुष्प सदा खिलाते रहे।
आशीर्वाद के रंग भरे प्रकाश से,
नई-नई राहें हमें दिखलाती रहे॥
कितनी भी बाधाएं, अड़चने आएँ,
सफलता और मंजिलें हमें पाती रहें।
दुष्कर्मों की भीड़ में खो न जाए हम,
यादें आपकी आकर हमें बचाती रहें॥
मौत के समुन्दर में सो न जाएं हम,
आपकी प्रेरणा रूपी मौजें हमें जगाती रहें।
पाप के तालाब में डूब न जाएं हम,
आपके ज्ञान की पतवार हमें उबारती रहें॥
बगिया में पुष्प कभी कम न हों,
नव निर्मित कली खिलखिलाती रहे,
चमन में ज्ञान के दीप जलाती रहे।
जिन्दगी आपकी सदा मुस्कुराती रहे ॥

गुरू ज्ञान देते हैं

हिमानी शर्मा बी. एड.

लोग कहते हैं, गुरू ज्ञान देते हैं।
देह दमके हमको ऐसे प्राण देते हैं॥
मैं मानती हूँ कि गुरू ज्ञान देते हैं।
गुरू के कारण ही लोग, शिष्य को सम्मान देते हैं॥
जीवन उजागर करने के लिए मार्ग देते हैं।
व्यक्तित्व बनाने के लिये संस्कार देते हैं॥
देह दमके सबको ऐसे प्राण देते हैं।
लोग कहते हैं गुरू हमें ज्ञान देते हैं॥

Scanned by CamScanner

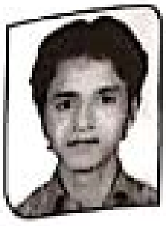

कविता

मेरे देश की धरती

नदीम अहमद बी.एस-सी. I

सोना है मेरे देश की धरती, अमृत इसका पानी।
दूर-दूर के देशों में फैली, इसकी अमर कहानी॥

यहीं हुए थे रामचन्द्र रावण को मार गिराया,
यहीं हुए वह श्रीकृष्ण वृन्दावन रास रचाया।
भारत की मिट्टी की देखो कैसी अजब कहानी,
यहीं हुई वह मीराबाई जो कान्हा की थी दीवानी॥

राणा ने जौहर दिखलाए, उसकी एक न मानी।
मीरा ने पति गिरधर माने, यही थी प्रेम कहानी॥
सोना है मेरे देश की धरती, अमृत इसका पानी।
दूर-दूर के देशों में फैली, इसकी अमर कहानी॥

यहीं हुई माता कालका, दानव जिसने संहारे।
देवों की विनती सुन माँ ने, चण्ड-मुण्ड भी मारे॥
रक्त बीज भी मारा माँ ने, जो था दानव वरदानी।
सोना है मेरे देश की धरती, अमृत जिसका पानी॥

यहीं हुआ वह वीर धनुर्धर जो अर्जुन कहलाया।
धर्म क्षेत्र में जाकर जिसने दुष्टों को मार गिराया॥
महाभारत के पन्नों में अंकित जिसकी अमर कहानी।
सोना है मेरे देश की धरती, अमृत जिसका पानी॥

यहीं बहती गंगा-जमुना, इलाहाबाद में मिलती हैं।
यहीं बहती माता सरस्वती, दुखियों के दुख हरती हैं॥
इलाहाबाद में जाकर देखो, संगम की अजब कहानी।
सोना है मेरे देश की धरती, अमृत जिसका पानी॥

यहीं हुए बिस्मिल, भगतसिंह, शौक से फाँसी खायी।
यहीं हुए अशफाक, चन्द्रशेखर दुष्टों को धूल चटाई॥
आजादी के इतिहासों में जिनकी अमर कहानी।
सोना है मेरे देश की धरती अमृत जिसका पानी॥

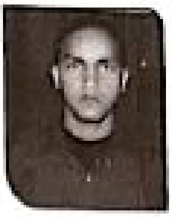

कविता

जब सत्य हमारे दिल में है

रवि यदुवंशी बी. एस-सी. III

जब सत्य हमारे दिल में है मंदिर को बनाकर क्या होगा?
जब मिल न सका मन-मन्दिर में,
हरि-धाम में जाकर क्या होगा?
कोई नाच-नाच कर गाता है, कोई चन्दन लेप लगाता है।
जब प्रेम सुमन अर्पित न किये, फिर फूल चढ़ाकर क्या होगा?
कोई लाख करोड़ कमाता है, कोई ऊँचे महल बनाता है।
सब माँटी में मिल जाता है, मखमल को बिछाकर क्या होगा?
मानवता उपहास करे, कोई जंगल में क्यों वास करे।
जब माता-पिता घर-घर में हैं, संगम में नहाकर क्या होगा?
जब सत्य हमारे दिल में है.................।

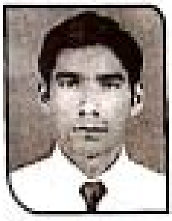

माँ

रविनीत यादव बी. एड.

हम सरफरोश हैं उसी जमीं के,
जिसने हमें खुद पर चलाया है।
हम शुक्रगुजार हैं उस लम्हे के,
जो हमें इस मुकाम तक लाया है।
खुदा तो सिर्फ जिन्दगियां बनाता है
हम तो कर्जदार है उसके जिसने हमें बनाया है।
फर्ज तो अपना सभी निभाते हैं
खुशियों में खुश रहना तो सभी जानते हैं
उसने हमें गम से गुजरना सिखाया है।
और क्या कहें हम उसे, समझ नहीं आता है
आज तक हमने उसे (माँ) कहकर बुलाया है।

मूल्यवान लक्ष्य की प्राप्ति हेतु लगातार प्रयत्न करना ही सफलता का मूल मंत्र है।

Scanned by CamScanner

लेख

राष्ट्रभाषा हिन्दी

संजीव कुमार बी. टी. सी.

संसार में प्रत्येक मनुष्य अपने विचारों के भावों की अभिव्यक्ति किसी न किसी प्रकार की भाषा के माध्यम से करता है। भाषा के अभाव में, न तो किसी प्रकार के सामाजिक परिवेश की कल्पना की जा सकती है और न ही सामाजिक व राष्ट्रीय प्रगति की। साहित्य, विज्ञान, कला, दर्शन आदि सभी का आधार भाषा ही है। अत: जीवन का मूल आधार ही भाषा है। मैथिलीशरण गुप्त द्वारा भी कहा गया है–

''है भव्य भारत की हमारी मातृभाषा हरी–भरी।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी॥''

राष्ट्र भाषा का दर्जा पाने के लिए हर भाषा में कुछ विशेषतायें होती है– जो भाषा देश के सर्वाधिक क्षेत्र और सब जगह अधिकतर व्यापक रूप से बोली जाती है तथा जो भाषा समृद्ध हो, भाषा के शब्द समुदाय में ज्ञान–विज्ञान की उपलब्धियों को व्यक्त करने की क्षमता रखती हो जो धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि को जनसाधारण तक पहुँचाने की क्षमता रखती हो तथा जो भाषा की सरलता, लिपि की सरलता एवं भाषा में विकसित होने की सामर्थ्य हो आदि ऐसे ही गुण है जो किसी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा पाने हेतु अनिवार्य हैं। इन सभी विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य में गहन विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि समस्त भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही राष्ट्रभाषा का दर्जा पाने की अधिकारिणी है।

केवल हिन्दी ही ऐसी भाषा जिसकी लिपि में यह क्षमता है इसमें जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है और बोला जाता है जबकि अन्य भाषाओं में इसका अभाव है। किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी राष्ट्रभाषा पर निर्भर करता है। इस दृष्टि से और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु, सामाजिक एकता हेतु आपसी सौहार्द या वैचारिक तकरार हो, सभी के लिये हिन्दी अर्थात् राष्ट्रभाषा हिन्दी ही सर्वोत्तम है। इसके उत्थान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिये। हिन्दी साहित्य के मर्धून्य विद्वान ''भारतेन्दु हरिशचन्द्र'' ने भी यही कहा–

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।''
''निज भाषा बिनु ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।''

कविता

गुरू वंदना

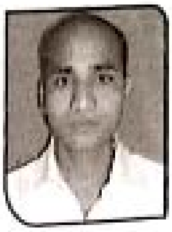

जगदीश प्रसाद बी. एड.

कुर्सी है गुरुवर वाली, हाथों में पूजा की थाली।
नित्य करूं मैं गुणगान, चरणों में उनको प्रणाम॥
दुनियां नोटों के पीछे, लेकिन मैं तुम्हारे पीछे।
ऐसा बना दो गुणवान, चरणों में उनको प्रणाम॥
कुर्सी है.....................

मधु मैडम जी आती, शिक्षा के उद्धेश्य बताती।
न्याय योग वेदान्त के, दर्शन वो हमको करवाती॥
रंजना मैडम भी आकर, भारत की शिक्षा बतलाती॥
आर. के. सर भी देते हैं, मूल्यों का ज्ञान॥
चरणों में.....................

शिवानी मैडम भी आकर, शिक्षा का क्षेत्र बतावें।
प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर, श्रेष्ठ ज्ञान करावें॥
शिक्षा के रूप हैं कितने, शालिनी हमें बतावें।
लख्मी सर भी देते हैं, समस्याओं का ज्ञान॥
चरणों में.....................

पूनम मैडम भी हमको, मन विज्ञान पढ़ावें।
किशोरावस्था से लेकर, संवेगात्मक विकास लिखावें॥
शैक्षिक मापन बुद्धि, सांख्यिकी गणना करवावें।
नीरेश सर भी आकर, कहते बच्चे मेरी मानें॥
चरणों में.....................

सरिता मैडम भी आकर, शैक्षिक तकनीकी सिखावें।
जी. के. सर भी आकर, जन माध्यम बतलावें।
पुष्पेन्द्र सर भी आकर, अपना रौब जमावें।
ऐसा ही बनूं मैं, यह है उनका प्रतिमान॥
चरणों में.....................

ज्ञान प्रशासन का हम सब यान बढ़ावें।
आदर्श शिक्षक बनकर ज्ञान हम करावें॥
ऐसा दें H.O.D हमें मूल मंत्र का ज्ञान।
चरणों में उनको प्रणाम.....................

Scanned by CamScanner

लेख

मौन की भाषा

✍ सन्तोष शर्मा बी. टी. सी.

सारे संसार में केवल मनुष्य ही एक मात्र ऐसा प्राणी है जिसे ईश्वर ने वाणी प्रदान की है, जिससे वह अपने विचारों के माध्यम से अपनी बात दूसरों तक पहुँचा सकता है। एक श्रेष्ठ वक्ता अपने पास से कुछ न कुछ ग्रहण करता ही है जो व्यक्ति समाज में ज्यादा बोलते हैं, लोग उनसे दूरियाँ बनाते हैं।

आधुनिक काम के शीर्षस्थ विचारक जे. कृष्णमूर्ति ने एक स्थान पर लिखा–

"Mind your own business and learn the virtue of silence.' अर्थात् अपने काम पर ध्यान दो, और चुप रहने की प्रवृत्ति विकसित करो।

हमारे राष्ट्रपिता, महात्मा गाँधी जी भी एक बार सप्ताह में मौन रखा करते थे। किसी भी प्रकार की सिद्धि प्राप्त के लिये मौन आवश्यक है। अधिक बोलने को एक अवगुण ही नहीं बल्कि मूर्खता का लक्षण माना गया है, यहाँ तक कि कुछ मनोविश्लेषकों द्वारा इसे रोग की संज्ञा भी दी गयी है। विद्वानों ने तो यह भी कहा है– "If speech is silver, silence is gold."

अनेकों ऋषियों मुनियों एवं महापुरुषों ने मौन की भाषा की महिमा का वर्णन करते हुये इसके लाभ बताये हैं–

- मौन रहने से आपकी मानसिक शक्ति बढ़ती है।
- सहनशक्ति में बल आता है।
- दूसरों से शब्दों को सुनने का मौका मिलता है।
- वाणी पर अधिकार करने वालों को ही सच्चा साधक माना गया है।

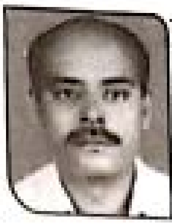

व्यंग

आधुनिक संस्कृति
(भौतिकवाद)

✍ जितेन्द्र शर्मा बी. टी. सी.

नदी में डूबते एक नौजवान ने
पुल पर चलते हुए आदमी को देखकर
आवाज लगाई "बचाओ"
पुल पर चढ़ते हुए आदमी ने नीचे रस्सी गिरायी,
और कहा "आओ"
लेकिन डूबता हुआ आदमी, रस्सी पकड़ नहीं पा रहा था,
मैं मरना नहीं चाहता, बड़ी महंगी जिन्दगी है,
कल ही तो एस्कोर्ट कम्पनी में मेरी नौकरी लगी है।
इतना सुनते ही ऊपर वाले आदमी ने
अपनी रस्सी खींच ली,
और उसे मरता देखकर अपनी आँखें मींच ली।
फिर वह दौड़ता–दौड़ता एस्कोर्ट कम्पनी गया
हाँफते–हाँफते उसने अधिकारी को बताया–
"देखिये अभी–अभी कम्पनी का एक आदमी डूबकर मर गया है।
इस तरह आपकी कम्पनी में एक जगह खाली कर गया है।"
लीजिए मेरी डिग्रियां संभालें
बेरोजगार हूँ, कृपया मुझे लगा लें।"
अधिकारी मुस्कुराते हुए बोला,
'दोस्त तुमने देर कर दी।
अभी 10 मिनट पहले हमने यह जगह भर दी है,
हमने नौकरी पर उस आदमी को लगाया है,
जो अभी–अभी उस आदमी को धक्का देकर
तुमसे पहले यहाँ आया है।
सुनकर युवक को पसीना आ गया,
यह देखकर अधिकारी थोड़ा रहम खा गया।
बोला– "बेटे घबराओ नहीं,
ये भौतिक वाद की देन है,
जो इसे नहीं जानता वही बैचेन है,
तुम्हें भी अगले को धक्का लगाना होगा,
सैकड़ों तजुर्बों से यह सत्य निकाल के लाया हूँ।
क्योंकि मैं भी एक सीनियर को धक्का देकर आया हूँ।

बुराई के जड़ जमाने के लिए इतना ही काफी है कि अच्छे लोग कुछ न करें अर्थात् निष्क्रिय हो जाएं, और बुराई जड़ पकड़ ही लेगी।

Scanned by CamScanner

देशभक्त चोर

सोनू कुमार बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

यह घटना जापान की है एक चोर रात में किसी सेठ के यहाँ चोरी कर रहा था। तभी सेठ की आँख खुल गई। सेठ पुलिस को फोन नहीं कर सकता था क्योंकि फोन चोर वाले कमरे में था। कुछ न सूझा तो उसने ग्रामोफोन पर राष्ट्रगान की धुन बजा दी। राष्ट्रगान सुन चोर सावधान मुद्रा में खड़ा हो गया। मौका देख सेठ ने उसके हाथ पैर बाँध दिए और पुलिस को सूचना दे दी। मामला अदालत में पहुँचा। क्योंकि चोर राष्ट्र भक्त है, अतः अदालत उसे बरी करती है। अदालत ने फैसले में आगे कहा कि सेठ राष्ट्रगान बजते समय चोर को बाँधने में लगा रहा। अतः उसे राष्ट्रगान के अपमान के अपराध में दो वर्ष की सजा सुनाई जाती है। फैसला सुन सभी दंग रह गए। उस फैसले में निजी हित पर राष्ट्रभक्ति भारी पड़ी।

❖

तेरा नाम सुनकर हे देवी!
हम काँप-काँप रह जाते हैं।
ओ कालवाहिनी मत आ तू,
सब फैशन फीके पड़ जाते हैं॥

कुछ तो सोच निष्ठुर न बन,
जन कितने बलि चढ़ जाते हैं।
ये लाल टमाटर से चेहरे,
तेरे भय से पीले पड़ जाते हैं॥

तेरी तैयारी में हम जुटकर,
दिन-रात बदन घुल जाते हैं।
यदि आँख तनिक लग जाती है,
तो तेरे ही सपने आते हैं॥

हम काँपते भय के मारे,
त्राहि-त्राहि कर चिल्लाते हैं।
तेरा नाम सुनकर हे देवी,
हम काँप-काँप रह जाते हैं॥

❖

जीवन की अवधारणा

रश्मि गुप्ता, बी.एस-सी.।

जीवन में एक बार मिलते हैं	-	माँ, बाप और जवानी
कभी छोटा न समझो	-	शत्रु, कर्जा और बीमारी
प्रतीक्षा नहीं करता	-	समय, ग्राहक और मौत
प्रत्येक का अलग होता है	-	स्वभाव, भाग्य और कर्म
मित्र को शत्रु बना देता है	-	जर, जमीन और जोरू
सर्वदा स्मरण रखना चाहिए	-	सच्चाई, कर्तव्य और धर्म
चोर चुरा नहीं सकता	-	अक्ल, हुनर और ज्ञान

"So we enjoy our life carefully."

❖

Scanned by CamScanner

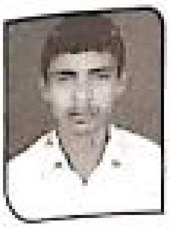

सपना

प्रशान्त कुमार बी.एस.सी. I

सपना शब्द देखने में तो बहुत छोटा प्रतीत होता है परन्तु यदि हम इसे गहराई से सोचें तो इसका अर्थ इतना व्यापक है कि हम उसका सही अर्थ लगाने में असमर्थ हो जायेंगे। सपने कहीं बिकते नहीं है। यह तो स्वयं अपनी आँखों से देखे जाते हैं। सपने देखने से ही हम सफलता की सीढ़ी पर पैर रखेंगे।

सपने कई प्रकार से देखे जाते हैं। कुछ लोग तो सपनों को बंद आँखों से रात में देखते हैं। लेकिन कुछ लोग दिन के प्रकाश में खुली आँखों से देखते हैं जो व्यक्ति सपने नहीं देखते, वह कभी जीवन में सफल नहीं हो सकते। क्योंकि हम सपना देखेंगे तब ही तो उसे साकार करने का दृढ़ संकल्प लेंगे और उसकी प्राप्ति हेतु कठिन परिश्रम करेंगे। उस कठिन परिश्रम से अपने लक्ष्य पर आसानी से पहुँच जायेंगे। हमें दिन के प्रकाश में खुली आँखों से सपने देखने चाहिए। जो व्यक्ति केवल कल्पना रूपी सपनों में अधिक से अधिक डूब जाते हैं तो वह अपने जीवन में कुछ नहीं पा सकते अर्थात कल्पनाओं में ही अपना अमूल्य जीवन बर्बाद कर देते हैं। सपने ही जीवन में सफलता की प्रथम सीढ़ी पर चढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं यदि सपने बिकते तो सभी सफलता प्राप्त कर लेते।

यह बात जरूरी नहीं कि सपने सभी पूरे हों। सपने टूट जाते हैं तो हमें अपनी जिन्दगी से हार नहीं माननी चाहिए। हमें टूटे हुए सपनों को विश्वास या आस्था की जंजीर में जोड़ना चाहिए। यदि हम समय के साथ चलते चलें तो हम अपनी मंजिल पर आसानी से पहुँच जायेंगे। हमें कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। जो काम हमारे हाथ में होता है उसे पूर्ण विश्वास के साथ करना चाहिए।

विज्ञान के दोहे

पुनीत गौड़ बी. कॉम I

मटर उगाकर खेत में, दिया नया विज्ञान।
आनुवांशिकी के पिता, मेण्डल हुए महान॥

चाहे घर रोशन करो, चाहे सुनो ग्रामोफोन।
एडीसन सा और भला, अविष्कारक कौन॥

प्रेमिका से प्यार की बात कराता कौन।
ग्राह्म बैल का शुक्रिया दे गये टेलीफोन॥

किस जीवन का किस जगह होता है स्थान।
ऐसा लिनियस ने दिया वर्गीकरण विज्ञान॥

इस वसुधा पर हर कहीं हैं ये विराजमान।
धन्य ल्यूवेन हॉकजी दिया जीवाणु विज्ञान॥
कैसी तारों की बस्ती या उनका आलोक।
गैलीलियो चला गया देकर टेलिस्कोप॥

फिल्म देखने का जिसे सचमुच में हो शौक।
एडीसन ने पेश किया, उसको बायस्कोप॥
जिसको चाहे भेज दो, अब तुम टेलीग्राम।
मारकोनी का शुक्रिया, उसको करो सलाम॥

बेटियाँ

लक्ष्मी कुमारी
बी.ए. I

ओस की बूँद होती हैं बेटियाँ, स्पर्श खुरदरा हों तो रोती हैं बेटियाँ।
एक घर की लाज होती हैं बेटियाँ, दो-दो घर की लाज होती हैं बेटियाँ॥
मोती हैं बेटे तो हीरा हैं बेटियाँ, विधि के विधान से होती है बेटियाँ।
इनका न कभी करो तिरस्कार, क्योंकि भाग्यवान के ही होती है बेटियाँ।

Scanned by CamScanner

'माँ' की अज़मत

(जनरल ऊर्दू, देवनागरी स्क्रिप्ट में)

मुहम्मद तौसीफ बरकाती
बी.एस-सी. I

शायर ने कहा	– माँ एक ऐसी ग़ज़ल है जो हर दिल वालों के दिल में उतर जाती है।
मुसन्निफ (लेखक) ने कहा	– माँ वो है जिसकी तारीफ के लिए दुनिया में अल्फाज़ नहीं मिलते।
दरिया ने कहा	– माँ वो है जो औलाद की सभी गलतियों और खामियों को अपने दिल में छिपा लेती है।
फलक (आसमान) ने कहा	– माँ रहमत का साया है, जिसका आंचल मुझसे बड़ा है।
बारिश ने कहा	– माँ वो है जो औलाद की जरूरतों को जानती है।
हवा ने कहा	– माँ वो है जो औलादों की आदत पहचानती है।
बाग़बान ने कहा	– माँ वो खूबसूरत फूल है जो पूरे बाग़ में खूबसूरती और खुशबू बिखेरती है।
दुआ ने कहा	– माँ वो है जिसके लबों पे हर वक्त मैं रहती हूँ।
जन्नत ने कहा	– माँ वो है जिसके कदमों तले मैं रहती हूँ।
खुदा ने कहा	– माँ मेरी तरफ से कीमती और नायाब तोहफा है जो दुनिया में मुहब्बत और कुर्बानी (त्याग) की मिसाल है।
मैंने कहा	– माँ नूर है, महकता फूल है, जिन्दगी का रंग है, खुदा की जन्नत है, तोहफों का अनमोल खज़ाना है और मुहब्बत का दरिया है।

अभ्यास की महिमा

अनीता अमरावत बी. कॉम. II

एक गांव में बहुत जाने माने प्रसिद्ध गुरूजी थे, जो बच्चों को मुफ्त शिक्षा का ज्ञान बाँटते थे। उनकी पाठशाला में एक लड़का था उसका मन पढ़ने में नहीं लगता था। सभी लड़के-लड़कियाँ उसका मजाक उड़ाते थे। गुरू जी कहते थे "तुझे तो भगवान भी नहीं पढ़ा सकते।" उसके दोस्त उसे चिढ़ाते थे कि "भगवान जब बुद्धि बाँट रहे थे तो कहाँ था।" सो रहा था मैं! उसे स्वयं भी ऐसा लगता था कि वह बुद्धू है, मूर्ख है, इसलिये वह पढ़ लिख नहीं सकता। उसका मन इसलिये पढ़ने में नहीं लगता था। तंग आकर गुरू जी ने उससे कह दिया, "तू अपने घर लौट जा, वहाँ कुछ काम कर लेना।" इस पर वह लड़का वापस अपने गाँव चला गया। उसने सोचा मेरे भाग्य में विद्या ही नहीं है। चलते-चलते उसे एक कुँआ और कुँए पर कुछ औरतें दिखाई पड़ी, उसे प्यास भी लगी थी, अत: वह पानी पीने कुँए के पास गया और उसने कुँए के पास की जगह पर बने गड्ढों को देखा। उसने पानी निकाल रही औरतों से कहा कि घड़े रखने के लिये कितने अच्छे गड्ढे बनाये हैं, उसकी बातें सुनकर औरतें चौकीं। उन्होंने कहा कि कुँए से पानी निकालते-निकालते ये कोमल रस्से के निशान इस कुँए पर पड़ गये है, वैसे ही घड़े रखते-रखते ये गड्ढे बन गये हैं। उस विद्यार्थी ने सोचा कि इस मिट्टी के घड़े से जमीन पर गड्ढे पड़ गये तो मेरे बार-बार अभ्यास करने से सफलता या बुद्धि क्यों नहीं मिल सकती। मैं बार-बार अभ्यास करूँगा और सफलता को पाऊँगा। वह वापस लौटा और गुरूजी से कहने लगा कि गुरूजी मैं अब बार-बार अभ्यास करके विद्या को पाऊँगा और गुरूजी ने उसे प्यार से गले लगा लिया।

इस कहानी में यह दर्शाया गया है कि अभ्यास करने से बड़ी से बड़ी कठिनाई दूर हो जाती है। अभ्यास ही एक ऐसी कला है कि बुद्धू को भी बुद्धिमान बना देती है और मैं आज के विद्यार्थी से यही कहना चाहती हूँ कि-

"Practice Make a Man Perfect"

Scanned by CamScanner

** लक्ष्य **

मीनू वर्मा बी.ए. II

महाभारत काल की बात है। गुरू द्रोणाचार्य पाण्डवों और कौरवों को धनुर्विद्या सिखा रहे थे। उन्होंने एक दिन उन सबके मन की परीक्षा लेने के लिए शिष्यों को बुलाया, और कहा, 'देखो सामने पेड़ है, उस पर एक बनावटी चिड़िया टाँगी गई है, तुम्हें इस चिड़िया की दाई आँख पर निशाना लगाना है। अब उन्होंने एक-एक करके शिष्यों को बुलाया। सभी शिष्य तैयार हो गये। सबसे पहले उन्होंने युधिष्ठिर को बुलाया, और निशाना लगाने को कहा–

युधिष्ठिर चिड़िया का लक्ष्य करके धनुष पर तीर चढ़ाकर और निशाना साधकर गुरू की प्रतीक्षा करने लगे। गुरूजी ने कहा, 'जब मैं आज्ञा दूँ, तब तीर चलाना।' गुरू जी ने पूछा, 'यह बताओ कि तुम्हें वहाँ पेड़ पर क्या दिखाई पड़ रहा है ?' युधिष्ठिर ने कहा– एक वृक्ष है और उस पर चिड़िया दिखाई दे रही है। गुरू जी ने कहा कि तुम जाओ अभी तुम लक्ष्य नहीं भेद सकते हो। अब गुरूजी ने दुर्योधन को बुलाया। उन्होंने भी यही देखा और कहा कि एक चिड़िया दिखलाई पड़ रही है। गुरू जी ने कहा कि तुम भी लक्ष्य नहीं पा सकते हो तुम भी जाओ। दुर्योधन ने पूछा कि गुरूजी मैं और क्या बताऊँ जो मैं देख रहा हूँ, वही आप देख रहे हैं। तब गुरूजी ने कहा तुम अभी तुम लक्ष्य के प्रति एकाग्र नहीं हो।

एक–कर उन्होंने सभी विद्यार्थियों को बुलाया, और सबसे एक ही प्रश्न किया, उनके प्रश्न पर सबका एक ही उत्तर होता, हमें तो चिड़िया और पेड़ सब दिखलाई पड़ रहा है। तब उन्होंने अर्जुन का बुलाया जो उनका सबसे प्रिय शिष्य था। अर्जुन ने भी निशाना साधा। तब गुरूजी ने अर्जुन से भी वही पूछा जो उन सबसे पूछा था, तो अर्जुन ने जवाब दिया कि "मुझे तो केवल चिड़िया की दाई आँख ही दिखाई दे रही है" क्या तुम्हें पेड़ भी नहीं दिखाई पड़ रहा! गुरु जी मुझे तो केवल चिड़िया की दाई आँख दिखाई पड़ रही है। तब गुरूजी ने अर्जुन को तीर चलाने को कहा। गुरू जी की आज्ञा प्राप्त करते ही अर्जुन ने तीर चला दिया और तीर बिल्कुल निशाने पर लगा।

यह पूरी कहानी हमें यह बताती है कि हमें अपना कार्य पूरी एकाग्रता से करना चाहिए और अपने लक्ष्य पर से हमें अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिए, चाहे कोई कितना भी भ्रमित करे क्योंकि **"Aim is very Important"**

जीवन या जिन्दगी

आरजू गुप्ता बी. काम, द्वितीय वर्ष

ये जिन्दगी है एक ख्वाब, यहाँ कोई नहीं है अपना
ये ऐसा है एक सपना जो कभी न हुआ अपना।
जो बातें करते हैं हमसे हँसकर बोलकर,
वो चले जाते हैं, ये दुनिया छोड़कर।
आज भी याद आता है, वो उनका हँसना।
ये जिंदगी है एक ख्वाब...
ये सपना है ऐसा जो कभी नहीं टूटता।
जब आती है मौत, तो उससे कोई भी नहीं छूटता।
जब आती है मौत तो उससे कोई भी नहीं छूटता
कर देती है मौत, इस सपने को चूर-चूर
अपना हो या पराया कर देती है दूर-दूर
जब तक है अपनी जिंदगी तो सबसे ही प्यार
करना
ये जिंदगी है एक ख्वाब... यहाँ कोई नहीं है
अपना, ये जिन्दगी है एक ख्वाब...।

Scanned by CamScanner

न्यूटन है, भौतिकी का जन्मदाता

चन्दन वार्ष्णेय बी.एस-सी. I

सर आइजन न्यूटन की गिनती विश्व के महान वैज्ञानिकों में की जाती है। इनका जन्म लिंकन शायर के वूल्सथोर्प नामक गाँव में सन् 1642 में हुआ था और उसी वर्ष प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियों का स्वर्गवास हुआ था। बड़े होकर वे संसार के महानतम वैज्ञानिक बने।

उन्होंने बारह वर्ष की आयु में स्कूल जाना शुरू किया। 18 वर्ष की आयु में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज में प्रवेश लिया। गणित उनका पसन्दीदा विषय था। गणित में उन्होंने अपनी छाप छोड़ी तथा वर्ष 1669 में उसी महाविद्यालय के गणित के प्रोफेसर बने।

न्यूटन को मशीनों से बहुत शौक था। एक दिन वह बगीचे में सेब के पेड़ के नीचे बैठे थे। तब पेड़ से एक सेब गिरा। न्यूटन के दिमाग में यह ख्याल आया कि यह नीचे ही क्यों गिरा ? आसमान में क्यों नहीं गया ? यह प्रश्न उनके दिमाग में पूरी तरह घुस गया। इसके लिए न्यूटन ने कई प्रयोग किये। इससे उन्होंने यह परिणाम निकाला कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण होता है और तब उन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम दिया और यह स्थापित किया कि पृथ्वी सभी वस्तुयें केन्द्र की ओर खींचती है। इसके अलावा न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का ब्रह्माण्डव्यापी नियम दिया। इससे यह पता चला कि सभी पिण्ड आकर्षण के कारण अन्तरिक्ष में लटके हुए हैं। यह भी सिद्ध किया कि सूर्य का प्रकाश जो सफेद होता है। लेकिन ये सात रंगों से मिलाकर बना होता है। न्यूटन ने इन सात रंगों को प्रिज्म द्वारा अलग करके दिखाया। इसके अलावा बहुत सी पुस्तकों में अपनी भी छाप छोड़ी, और न्यूटन ने खोज के आधार पर गति का नियम भी दिया। इसलिए इसे भौतिक का जन्म दाता कहते हैं।

सन् 1689 में वे पार्लियामेन्ट के सदस्य चुने गये। 1703 में वे रॉयल सोसायटी, लन्दन के अध्यक्ष चुने गये। उसके बाद मृत्यु पर्यन्त वे बार–बार रॉयल सोसायटी के प्रेसीडेन्ट नियुक्त हुए। वृद्धावस्था में भी न्यूटन ने बहुत से खगोलीय पिण्डों के अविष्कार किये। 85 वर्ष की उम्र में रॉयल सोसायटी से वापस लौटते समय 20 मार्च, 1727 को उनका देहान्त हो गया। न्यूटन का विज्ञान में इतना महान योगदान है, जिसको कि हम कभी इन्हें भुला नहीं सकते। इसलिए न्यूटन को भौतिक का जन्मदाता कहा जाता है।

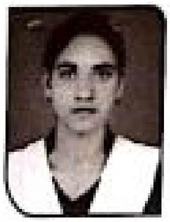

आज का रहस्य

प्रीती राघव बी.एस-सी. I

देश में डेवलपमेन्ट हो रहा है,
अमीरों का काम अर्जेन्ट हो रहा है।
गरीब बेचारा साइलेन्ट हो रहा है।

देश को बेचने का एग्रीमेण्ट हो रहा ।
चमचा परमानेन्ट हो रहा।
ईमानदार बेचारा सस्पेन्ड हो रहा।

कार्यालय रेस्टोरेन्ट हो रहा है।
बच्चा बाप से इंटेलिजेन्ट हो रहा है।
देश में डवलपमेन्ट हो रहा है।

घर–घर में पार्लियामेन्ट हो रहा है।
नेता को सभा समाप्ति पर प्रजेन्ट हो रहा है।
देश में डेवलपमेन्ट हो रहा है।

Scanned by CamScanner

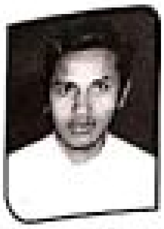

सच्चा हीरा

✍ वेदान्त बी.एस-सी. I

संध्या का समय था। गाँव की चार स्त्रियाँ पानी लेने के लिए अपने-अपने घड़े लेकर कुएँ पर पहुँचीं। पानी भरने के साथ-साथ आपस में बातें भी कर रहीं थीं उनमें से एक ने कहा, ''मैं अपने बेटे से बहुत खुश हूँ। भगवान अगर किसी को बेटा दे तो ऐसा ही दे। बेटा क्या, अनमोल हीरा है, हीरा। उसका कंठ इतना मधुर है कि बस पूछो मत!''

उसकी बात सुनकर दूसरी ने भी बड़े गर्व के साथ कहा, ''मेरा बेटा भी ऐसा ही है। मल्ल विद्या में तो इतना निपुण है, कि उसकी बराबरी बड़े-बड़े पहलवान भी नहीं कर सकते हैं।''

तीसरी ने भी कहना शुरू किया, ''मेरा बेटा भी हीरे से कम नहीं है, उसके कण्ठ में सरस्वती का निवास है। वह ज्ञान का विपुल भंडार है। जो एक बार पढ़ लेता है। उसे कभी भूलता नहीं है।''

चौथी स्त्री बिलकुल चुप बैठी थी, उसे देखकर एक ने कहा- ''बहन! भगवान ने तुम्हें भी बेटा दिया है। तुम भी उसके बारे में कुछ बताओ। ''क्या उसमें कोई भी गुण नहीं है?''

उसने कहा- नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है। मेरा बेटा तुम्हारे बेटों की तरह न गंधर्व है, न पहलवान और न ही बृहस्पति। वह तो बहुत ही सीधा-साधा, सरल हृदय का है। वह माता-पिता व गुरूजनों की सेवा को ही अपना प्रथम कर्तव्य मानता है।''

जब चारों स्त्रियां अपने-अपने घड़े उठाकर सिर पर रखने लगीं। उसी समय पास से किसी के गीत की मधुर ध्वनि सुनाई दी। पहली स्त्री ने कहा- ''देखो, मेरा हीरा आ रहा है। कितना मधुर गाता है।''

तीनों स्त्रियाँ बड़े ध्यान से उसके बेटे को निहारने लगीं।, वह गाता हुआ सीधा आगे निकल गया। वे सभी उसकी प्रशंसा करने लगीं।

तभी दूसरी स्त्री का बेटा उधर आया। वह सचमुच भीम जैसा लग रहा था। उसकी छाती चौड़ी व भुजाएँ कसी हुई थीं। वह भी अपनी माँ की ओर बिना देखे वहाँ से निकल गया।

तीसरी स्त्री का लड़का फर्राटे से संस्कृत के श्लोक और विद्वतापूर्ण कविताओं का पाठ करते हुए वहाँ से गुजर गया।

तभी चौथी स्त्री का बेटा वहाँ आ पहुँचा। वह अपनी माँ से बड़े स्नेह से कहने लगा- ''ओ माँ! तू क्यों तकलीफ उठाती है? ला! अपना घड़ा मुझे दे, मैं इसे ले चलता हूँ।''

चौथी स्त्री ने लाख मना किया, परंतु वह नहीं माना। उसने अपनी माँ के सिर से घड़े को उतारकर अपने सिर पर रख लिया और आगे-आगे चलने लगा। सभी स्त्रियाँ उसके व्यवहार को देखकर आश्चर्य चकित हो गयीं। कुछ दूर बैठे एक वृद्ध पुरुष के मुख से सहज में ही शब्द फूट निकले- ''धन्य-धन्य''! यही है सच्चा हीरा जो अवसर मिलने पर अपनी माँ की सेवा से चूका नहीं।''

बड़ा विद्वान बन जाने से, संगीतज्ञ, खिलाड़ी अथवा धनवान बन जाने से कोई बड़ा नहीं हो जाता। कोई बहुत बड़े पद पर पहुँच गया लेकिन माँ-बाप व गुरूजनों की सेवा से जी चुराता है, तो उसका बड़प्पन किस काम का? सच्चा बड़प्पन तो तब है जब हमारे सदगुण सहज में सत्-चित् आनन्द की सुवास फैलाये, आत्मसुख का आनन्द उभरें। हम मातृ-पितृ-गुरूभक्ति को अपने आचरण में लायें

भ्रष्टाचारी नेता

✍ विवेक कुमार गुप्ता बी. कॉम. II

जहर सर्प के सिर्फ फन में होता है,
जहर नेता के हर फन में होता है।
एक भ्रष्ट नेता को एक सर्प ने डसा,
नेता जी मौज में रहे सर्प चल बसा।

Scanned by CamScanner

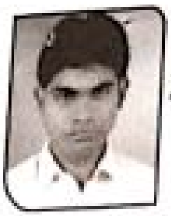

सैनिक का सन्देश

अमित कुमार बी.एस-सी.।

ओ साथी मेरे घर यह संदेशा देना,
मुँह से किसी को कुछ न कहना।
सिर्फ इशारों से समझा देना॥
अगर हाल मेरी माता पूछे,
तो घर का दीप बुझा-देना।
अगर हाल मेरे पिताजी पूछे,
तो जलती चिता दिखा देना।
अगर हाल मेरी बहिन पूछे,
तो राखी वापिस लौटा देना।
गर हाल मेरा बेटा पूछे,
तो खून से रंगी वर्दी दिखा देना।
अगर हाल मेरी पत्नी पूछे।
तो मांग का सिन्दूर मिटा देना।
गर हाल मेरे बुजुर्ग, गुरूजन पूछें,
तो छब्बीस जनवरी का सम्मान और
भारत माता का घायल सीना दिखा देना।
ओ साथी घर यह संदेश पहुँचा देना।

चुटकुला

एक नौकर गाँव से अपने सेठ के पास आया जो कि उन्हें घर के हालचाल बता रहा है।

सेठ जी - और रामू घर के क्या हाल चाल है?
रामू - सेठ जी, बाकी सब तो ठीक है पर आपका घोड़ा मर गया।
सेठ जी - मेरा प्रिय घोड़ा, वो कैसे मर गया?
रामू - आपके कुत्ते की हड्डियाँ खाकर।
सेठ जी - हाय! मेरा टॉमी कैसे मर गया?
रामू - आपकी माँ की खाई हुई जहर की शीशी को चाटकर।
सेठ जी - क्या? मेरी माँ भी स्वर्ग सिधार गई।
रामू - हाँ! जी तो पौते का गम न झेल सकीं।
सेठ जी - हाय, मेरा लड़का भी!
रामू - माँ के दूध के बिना कैसे जीवित रहता?
सेठ जी - मेरी पत्नी को क्या हुआ?
रामू - घर के जलने के साथ वो भी जल गयीं, और बाकी सब ठीक ठाक है।

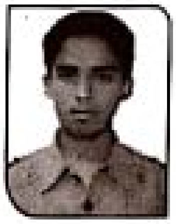

कलयुग का विद्यार्थी

अभिमन्यु पाल बी.कॉम.।

दो पन्ने की कॉपी लेकर, कॉलेज पढ़ने जाते हैं।
रास्ते में मिल गया यार तो, पिक्चर को मुड़ जाते हैं॥
रफ एण्ड टफ जींस या पेन्ट, चश्मा आँखों पर होगा।
व्हाइट शर्ट रंगीन रूमाल और जूता चमकदार होगा॥

इण्टर वैल की घण्टी लगे तो, चौराहे पर जाते हैं।
रुपये एक का पान चबाकर, सिगरेट भी सुलगाते हैं॥
अटेण्डन्स आदि नहीं लगी तो, दौड़े भागे फिरते हैं।
प्रोफेसर यदि नहीं सुने तो, अपनी जुगाड़ लगाते हैं॥

पेपर हॉल में बैठे-बैठे, अपनी अक्ल दौड़ाते हैं।
रिजल्ट आउट होने पर, बेटा घर छोड़कर जाते हैं॥
माता-पिता दुःखी होकर, जब पेपर में छपवाते हैं।
जहाँ भी हो आ जाओ बच्चो, हम तुमको वापस बुलाते हैं॥

पेपर में पढ़ लिया तो, खुशी-खुशी घर जाते हैं।
माता-पिता का पैसा फूंक, नित नया शौक फरमाते हैं।
दो पन्ने की कॉपी लेकर, कॉलेज पढ़ने जाते हैं।
रास्ते में मिल गया यार तो, पिक्चर को मुड़ जाते हैं।

Scanned by CamScanner

शैक्षिक गतिविधियाँ

महाविद्यालय द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला की झलकियां

मंचासीन अतिथिगण बायें से डा. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, श्रीमती बबिता यादव, श्री अजय गुप्ता, श्री जगवीर सिंह, डा. गोविन्द वार्ष्णेय एवं डा. वाई. के. गुप्ता

मुख्य वक्ता श्री अजय गुप्ता वरिष्ठ डायट प्रवक्ता द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का शुभारम्भ

प्रशिक्षुओं द्वारा स्वागत गान

वरिष्ठ डायट प्रवक्ता श्री जगवीर सिंह द्वारा प्रशिक्षु को प्रमाण पत्र वितरण

डायट प्रवक्ता श्री जगवीरसिंह जी कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए

Scanned by CamScanner

शैक्षिक सत्र

सत्र 2012–13 में महाविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठियाँ एवं साहित्यिक गतिविधियाँ

वाद विवाद प्रतियोगिता के अवसर पर डा. रत्न प्रकाश

हिन्दी दिवस के अवसर पर डा. आर. के. मिश्रा

हिन्दी दिवस के अवसर पर डा. ललित उपाध्याय

हिन्दी दिवस के अवसर पर डा. आर. के. पाराशर

FDI निबन्ध प्रतियोगिता में श्री कपिगोयल द्वारा प्रशस्ति पत्र भेंट

सेबी के व्याख्यान में उपस्थित छात्र–छात्राएं व प्राध्यापक गण

प्लेसमेन्ट सेल में रिलायंस ग्रुप के अधिकारी व उपस्थित छात्र–छात्राएं एवं प्राध्यापक गण

दीपोत्सव

दीवाली मेला के अवसर पर आयोजित विभिन्न आकर्षक कार्यक्रमों की झलकियां

माँ सरस्वती की वन्दना प्रस्तुत करती छात्रा

जि. पंचा. अध्यक्ष श्री सुशील चौधरी का स्वागत करते सचिव

महाविद्यालय सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा उद्बोधन

दीवाली मेला उपस्थित प्राध्यापकगण एवं छात्र–छात्राएं

दीवाली मेले का लुत्फ लेते सचिव व अन्य गणमान्य व्यक्ति

स्वास्थ्य शिविर में परीक्षण कराते जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सुशील चौधरी

दीवाली मेले का अवलोकन करते ए.डी.एम. (प्रशा.) श्री धीरेन्द्र सचान

मेले के स्टॉल पर उपस्थित प्राध्यापकगण व छात्र–छात्राएं

Scanned by CamScanner

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सत्र 2012-13 में आयोजित विभिन्न आकर्षक कार्यक्रमों की झलकियां

Scanned by CamScanner

ज्ञान दिवस 16 दिसम्बर, 2012

पुरातन छात्र-छात्राओं के सम्मानार्थ आयोजित कार्यक्रम के प्रमुख दृश्य

ज्ञान दिवस के अवसर पर मंचासीन अतिथि गण

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएं

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएं

डा. एस.पी.एस.जादौन पूर्व प्राचार्य को बुके भेंट करते डा. एस.एस. यादव

शपथ ग्रहण करते पुरातन समिति के छात्र

पुरातन छात्र समिति की सचिव स्वाति जैन को प्रमाण देते सचिव

पुरातन छात्र समिति के उपाध्यक्ष नीरज सिंह को प्रमाण देते डा. गौतम

डी. एस. इण्टर कालिज के प्रधानाचार्य
डा. डी.के. सक्सैना का स्वागत करती प्रो. रेणु अरोरा

Scanned by CamScanner

खेल महोत्सव

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं की झलकियां

खेल महोत्सव का शुभारम्भ व उद्‌बोधन करते एम.एल.सी. श्री विवेक बंसल व सचिव श्री दीपक गोयल

अर्न्तमहाविद्यालीय खो-खो प्रतियोगिता में
उप विजेता महाविद्यालय की टीम व क्रीड़ा प्रभारी

कबड्डी में भाग लेते छात्र

कबड्डी में भाग लेते छात्र

कबड्डी में भाग लेते छात्र

डा. एल. सी. गौड़ क्रिकेट टूर्नामेन्ट विजेता टीम

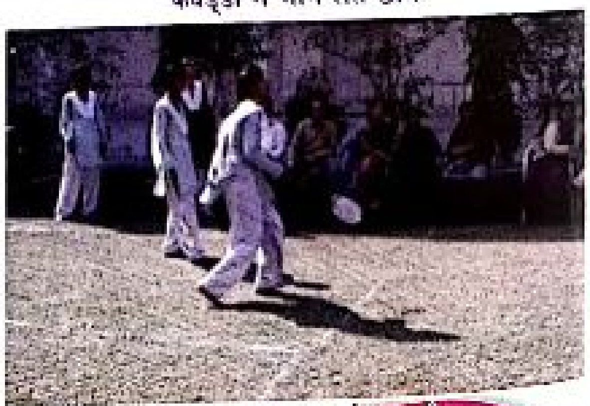

बेडमिन्टन खेलती हुई छात्राएं

Scanned by CamScanner

वार्षिकोत्सव 2012

महाविद्यालय द्वारा आयोजित वार्षिकोत्सव समारोह की झलकियां

'ज्ञान पुष्प' के तृतीय संस्करण का विमोचन करते विशिष्ट अतिथि डा. मंजू सारस्वत, प्राचार्या, टी.आर. कन्या महाविद्यालय, अध्यक्षा श्रीमती आशादेवी, मुख्य अतिथि डा. एस.सी. जैन, कुलपति, मंगलायतन विश्वविद्यालय, प्राचार्य डा. आर.एस. शर्मा

टी.आर. कालिज की प्राचार्या डा. मंजू सारस्वत द्वारा दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ

समारोह में छात्राओं द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति

आयोजित प्रतियोगिताओं एवं शैक्षिक उपलब्धियों के लिए छात्र-छात्राओं को सम्मानित करते सचिव श्री दीपक गोयल व उपाध्यक्ष श्री अविप्रकाश मित्तल

Scanned by CamScanner

COLLEGE TOPPER'S-2012

Km. Shalu
M.Com. (P)

Pankaj Kumar
M.Com. (F)

Km. Renu Verma
B.Com. Ist

Deepak Singh
B. Com. IInd

Km. Chanchal
B. Com. IIIrd

Taruna Kumar
BBA Ist year

Km. Preeti Kulshreshtha
BBA IInd year

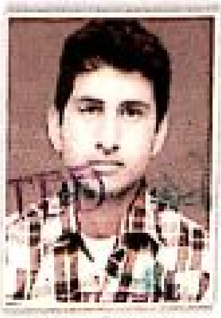

Uday Gautam
BCA Ist year

Km. Nidhi Verma
BCA IInd year

Km. Dipika Chauhan
B.Sc. Ist (ZBC)

Saurabh Singh
B.Sc. Ist (PCM)

Km. Swati Mishra
B.Sc. IInd (ZBC)

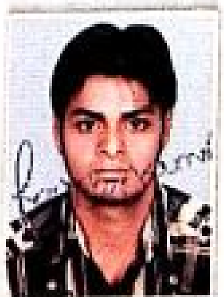

Rajeev Kumar
B.Sc. IInd (PCM)

Arvind Yadav
B.Sc. IIIrd (ZBC)

Km. Shivangi Singh
B.Sc. IIIrd (PCM)

Swaran Lata
B. Ed.

Vinita Verma
B.T.C IInd Sem.

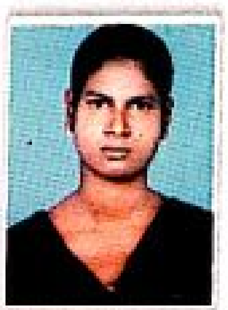

Km. Savita Sharma
B.A. Ist year

Km. Bhageswari
B.A. Ist

Km. Rekha Jadaun
B.A. IInd

Scanned by CamScanner

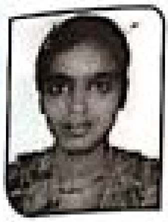

पानी करे पुकार

मेघाली गुप्ता
बी.एस-सी. II

पानी-पानी करे पुकार
मुझे बचाओ दो जीवन दान
व्यर्थ न गवाओ
वह हम सब की जान
पानी-पानी करे पुकार।

पानी ही तो हमारा
आत्म-जीवन तत्व
जिससे होते हम सब के सारे कार्य पूर्ण।
जीव से लेकर मानव तक सब है पानी पर निर्भर
पानी-पानी करे पुकार।
अगर इसी तरह मानव ने किया पानी का दुरुपयोग
तो वह दिन दूर नहीं जब
धरती का हर इंसान बस पानी-पानी चिल्लायेगा।
पानी ने की करुण पुकार
मुझमें बसते तुम सब के प्राण।
नदी-झील सब सूख रहे
पानी-पानी चिल्ला रहे
इनसे न छीनों इन सब की जान
वही देते हम सबका प्राण।
पानी की जारूरत को अगर समझ न पाया मनुष्य
तो वह दिन दूर नहीं
जब धरती पर मचे हाहाकार।

नेता बनाम डाक टिकट

हेमन्त कुशवाहा
बी.एस-सी. II

ये नेता बड़े विकट होते हैं, बिल्कुल डाक टिकट होते हैं।
जब तक जीते हैं, कुर्सी से टिकट की तरह चिपके रहते हैं।।

मरने के बाद भी, इनकी चिपकने की आदत जाती नहीं है।
ये डाक टिकट पर होते हैं, और लिफाफे पर चिपक जाते हैं।

इनका करो उपयोग

नीतू कुमारी
बी.एस-सी. III

खुशी को करो- Save
रिश्तों को करो- Recharge
दोस्ती को करो- Download
दुश्मनी को करो- Delete
सच को करो- Broadcast
टेंशन को करो- Not Rechargeable
प्यार को करो- Incoming
नफरत को करो- Outgoing
लेंग्वेज को करो- Control
हंसी को करो- Outbox Full
आँसू को करो- Inbox Empty
गुस्से को करो- Hold
मुस्कान को करो- Send
हेल्प को करो- Ok
सेल्फ को करो- Auto lock
दिल को करो- Vibrate
Then your life will be color full.

चाय की चुस्की

हेमन्त कुशवाहा
बी.एस-सी. II

कल खाय तो आज खा, आज खाये सो अब।
खाता ही रह जायेगा, तो चाय पियेगा कब।।
चाय दूध दोनों पड़े, किसको पहले पायं।
बलिहारी है चाय पर, सेहत यही बनाय।।
रहिमन प्याला चाय का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर न जुरे, तब चाय कहाँ मिल पाए।।
यह ऐसा संसार है, जैसे दूध का घूंट।
दस दिन के त्यौहार में, चाय न पीना भूल।।
चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन का भीर
चाय पी रहे बैठकर राजा, रंक, फकीर।

Scanned by CamScanner

कलयुगी दोहे

राकेश कुमार चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

शकुनि समादर पा रहे, विदुर नीति है त्याज्य।
अन्धा युग वापस हुआ, धृतराष्ट्रों का राज्य॥
इस युग का यह पुन्य है, समझो इसे न पाप।
उल्लू बनकर कीजिए, उल्लू सीधा आप॥
भूखे सच ने पेट को, माँगा आटा पाव।
आटा मिला न तनिक भी, खूब मिले सद्‌भाव॥
हर निर्णय में देर है, हर नगरी अन्धेर।
तजी अयोध्या राम ने, ख्वाजा ने अजमेर॥
हुआ समूचा देश ही, शोषण से कंगाल।
शोषित की धज्जी उड़ी, शोषक माला माल॥
लाठी और लंगोट पर, निर्भर मोहनदास।
नेताजी है काँपते, जबकि कमांडो पास॥
मैना, सुआ, कपोत सब, सहमे-सहमे आज।
दीवारों पर गिद्ध हैं, और गगन में बाज॥
पंख लगाकर मोर के चले मतवाली चाल।
कौवे निर्वाचित हुए, संसद है बेहाल॥
अस्पताल से मिल रही, उसी दवा की भीख।
जिसके इस्तेमाल की, निकल गयी तारीख॥

दहेज प्रथा

लक्ष्मी कुमारी बी.ए.।

माँ-बाप करते हैं, बेटी की शादी जब धूम-धाम से,
जिसमें जाता है दहेज प्रथा का नाम।
जिसमें तोला जाता है बेटी का प्यार,
जिसे कहते हैं हम बेटी का संसार।
जिसमें मिलती है, बेटी को मौत की सजा,
जिसमें हो जाती है, वह अपने माँ-बाप से जुदा।
आँखों में आ जाते हैं बरबस बन मोती,
जब तुल जाती है, पैसों से बहु ज्योति।
सहम जाते हैं भाई बाप,
जो करते हैं बेटियों से प्यार।
करो, करें ऐसा कोई काम,
जिसमें मिटा दो, दहेज प्रथा का नाम।
नहीं रहेगी ऐसी कोई प्रथा,
जिसमें सहनी पड़े बेटियों को सजा॥

"तीन चीजें"

शिशुपाल बी.ए.।

- तीन चीजें किसी की प्रतिक्षा नहीं करती। — समय, मृत्यु, ग्राहक
- तीन चीजें भाई-भाई को दुश्मन बना देती है। — जर, जोरू, जमीन
- तीन चीजें कोई दूसरा चुरा नहीं सकता। — अक्ल, चरित्र, हुनर
- तीन चीजें निकल कर वापस नहीं आती। — तीर कमान से, बात जुबान से, प्राण शरीर से
- तीन चीजें जीवन में एक बार ही मिलती है। — माँ, बाप, जवानी
- तीन चीजें पर्दे योग्य है। — धन, स्त्री, भोजन
- इन तीनों का समान करो। — माता, पिता, गुरू
- मनुष्य के तीन सद्‌गुण हैं। — आशा, विश्वास, दान
- तीन सच्चे मित्र हैं। — बूढ़ी पत्नी, पुराना कुत्ता, पास का धन।
- तीन चीजें याद रखना जरूरी है। — सच्चाई, कर्त्तव्य, मौत

Scanned by CamScanner

अपना शहर अलीगढ़

अबरार अली बी.ए. III

- पांच हजार वर्ष पूर्व कौशारिव कौशल नामक चन्द्र वंशी राजा राज्य करता था। कोल नाम के दैत्य ने राजा कौशारिव को हराकर यहाँ अपना अधिकार जमा लिया, उसने अपने नाम से इस राज्य का नाम कोल रखा। अलीगढ़ ब्रजमण्डल के किनारे अर्थात कोर पर स्थित होने से कोर शब्द को ही कालान्तर में कोल कहा जाने लगा।
- सन् 1500 ई. में इब्राहिम लोदी ने मौहम्मद शाह को शासक बनाया। इन्हीं के नाम से यहाँ का नाम मौहम्मद गढ़ पड़ गया। मौहम्मद शाह के बाद साबित खान शासक रहा। इनके नाम पर फिर इसका नाम साबितगढ़ पड़ गया। यहाँ पर जाटों का आधिपत्य रहने के कारण, इसका नाम रामगढ़ पड़ गया। राजा सूरजमल की मृत्यु के बाद मुगल सेनापति नजफ खाँ और अफर शयाब खान रहे। बाद में शिया समाज के मौहम्मद अली यहाँ के राजा बने। इन्हीं के नाम से इनका नाम अलीगढ़ रखा गया, जो आज भी कायम है।
- सन् 1804 में इसे अलीगढ़ घोषित किया गया, जिसके सर्वप्रथम कलैक्टर जनरल C Russel थे। अंग्रेज अफसर ऊपर कोट पर कचहरी लगाते थे। सन् 1854 में कलक्टर बाटसन के दरबार में रेलवे के अधिकारी आये। विचार विमर्श के बाद अगले दिन से उत्तर रेलवे बिछाना शुरू हुई।
- सन् 1846 में कलैक्टर W.H. Tent ने जिला जेल बनवायी थी। इससे पहले यह किराये की बिल्डिंग में चलती थी। इसके निर्माण में 37 हजार रुपए का खर्चा आया था।
- सन् 1880 में कलैक्टर मार्शल ने अश्व प्रदर्शनी के नाम से शुरू की। अब यह औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी के नाम से जानी जाती हैं।
- सन् 1857 में J.H. ने ताला कारोबार शुरू कराया था। जॉनसन की कब्र जेल रोड पर स्थित रेलवे क्रोसिंग के पास आज भी है।
- सन् 1563 में शाहजमाल क्षेत्र में ईदगाह का निर्माण मीर मौहम्मद गौस खाँ ने कराया। 1573 में मौहम्मद दाऊद खाँ को मनसबदार बनाया गया।
- सन् 1714 में जामा मस्जिद का निर्माण शुरू हुआ, इसके निर्माण में 14 वर्ष लगे। जामा मस्जिद का निर्माण सूबेदार साबित खान बहादुर जग विन मौहम्मद वेग ने कराया था–
- जामा मस्जिद का आकार देने वाला कारीगर ताजमहल बनाने वाले ईरान के अबू ईसा इफदी का पोता था। इसे तुर्क स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना माना जाता है। इसके तीनों दरवाजों पर 17वीं सदी की तुर्क नक्काशी आज भी मौजूद है। इसके बड़े–बड़े गोल गुम्बदों व मीनारों की बुर्जिया लगभग सात मन सोने से बनी हैं।
- सन् 1854 में तहसीली जूनियर हाईस्कूल की स्थापना मदार गेट क्षेत्र में की गयी थी। बाद में इसे जिला स्तर का विद्यालय बनाया गया। 1868 में इसे नये स्थान पर स्थानान्तरित कर दिया गया।
- सन् 1889 में भारतवर्षीय नेशनल एसोसिएशन के तत्वावधान में सार्वजनिक लाइब्रेरी का निर्माण हुआ था बाद में जिसका नाम मालवीय पुस्तकालय पड़ गया।
- मदार गेट क्षेत्र में प्राचीन समय से मदार (ऑक) के पेड़ थे और यहाँ पर स्थित शिव मन्दिर के आधार पर एवं शिव के डमरू के कारण मदारी कहा जाने लगा। इस वजह से इस क्षेत्र का नाम मदार गेट पड़ा।
- एशिया के सबसे शिक्षित और तरक्की पसन्द गाँव में शुमार है। ''धौर्रा माफी'' इसने AMU के रजिस्ट्रार, कराची यूनिवर्सिटी के कुलपति तक दिये हैं। इस गाँव का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस में दर्ज है। गाँव में दाखिल होने पर

Scanned by CamScanner

आलीशान अपार्टमेन्ट की एक लम्बी श्रृंखला आपका स्वागत करती है। शानदार कोठियां यहाँ की पहचान बन रही है। इसे गाँव के कुछ लोगों ने अपने दम पर किया है। 95 प्रतिशत साक्षरता दर है धौर्रा माफी गाँव की।

- 1944 में अलीगढ़ लोक मैन्युफैक्चरर्स एसोसियेसन का गठन हुआ।
- 1955 में एसोसियसन के सदस्यों के आर्थिक सहयोग से खाईडोरा क्षेत्र में ताला भवन बना।
- 1991 में रामघाट रोड पर ताला नगरी के नाम से इण्डस्ट्रियल एरिया घोषित किया गया। इसका शिलान्यास तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री कल्याण सिंह ने किया था।
- सन् 2010 तक जिले में 26 थाने और एक महिला थाना है। देहात में 17 थाने हैं जबकि शहर में 7 थाने हैं और 4 तहसील हैं – कोल, अतरौली, गभाना, खैर।
- सन् 2000 में 17 जुलाई को तीर्थधाम मंगलायतन का निर्माण श्री आदिनाथ कुन्दमुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट द्वारा कराया था जिसका शिलान्यास श्री एल. के. आडवाणी ने किया था।
- सन् 2008 में अलीगढ़ को मण्डल का दर्जा मिला। मण्डल के प्रथम कमिश्नर श्री सुरेश चन्द्रा जी बने। मण्डल में हाथरस, एटा, कासगंज शामिल है।

शानदार उपहार गुटखा खाने वालों के लिए

Millennium Bumper Scheme

तनु अग्रवाल बी.ए.।

योजना अवधि – आज से जीवित रहने तक। 'गुटखा खाओ–भाग्य जगाओ'

*	प्रथम पुरस्कार	-	कैंसर
**	द्वितीय पुरस्कार	-	गले हुए गाल
***	तृतीय पुरस्कार	-	छोटा एवं टेढ़ा मुँह
****	चतुर्थ पुरस्कार	-	जवानी में बुढ़ापा
*****	पाँचवा पुरस्कार	-	दमा, खाँसी, दाँत खराब
	बम्पर पुरस्कार	-	राम नाम सात है।
	फॉर्म मिलने का स्थान	-	पान की दुकान, रेलवे प्लेटफार्म, बस अड्डों आदि सार्वजनक स्थानों पर
	फॉर्म शुल्क	-	5 से 6 रूपये तक
	पुरस्कार स्थान	-	श्मशान घाट
	मुख्य अतिथि	-	यमराज
	अध्यक्ष	-	हम
	सदस्यगण	-	आप

अगर आप गुटखा खाते हैं तो उपरोक्त स्कीम का शीघ्र लाभ उठायें, हर गुटखें के साथ कमजोरी मुफ्त पाएँ।

नोट– वाद–विवाद के लिए यमलोक पधारें।

Scanned by CamScanner

'ज्ञान की कीमत'

रेशु गुप्ता बी. कॉम. ।

चारों ओर बजा ज्ञान का ढिंढोरा,
ज्ञान के जरिए हो नया सवेरा।
ज्ञान खुशियों का है डेरा,
ज्ञान के बिना अँधेरा ही अँधेरा॥
मुश्किलों में रहे हमेशा साथ,
साथ देने के लिए बढ़ाए हाथ।
जरिया बने मंजिल पाने का,
जिन्दगी में नई राह दिखाने का
और सही रास्ता अपनाने का॥
ख्वाबों को सच कर दे वो,
न मुमकिन को मुमकिन कर दे जो
जिसके पास ज्ञान हो,
आसमान को छूले वो
ज्ञान का उपयोग जहाँ सही हो॥

नई बीबी और डॉक्टर

प्रदीप कुमार बी.एस-सी. ।

डॉ. नीरज निधीश 'सम्राट' आगरा रोड, अलीगढ़
कंजूस करोड़ीमल की बीबी बीमार हो गयी।
शरीर के रोगों से बेकार हो गयी।
लेकर पहुँचे डॉक्टर के पास,
डाक्टर बोला मामला बड़ा ही सीरियस है,
ब्लड यूरिन, थाइराइड टेस्ट कराओ,
पेट-छाती के एक्सरे, हार्ट इको कराओ,
और सभी रिपार्ट, मेरे पास लाओ,
हर्गिज नहीं जाने दूँगा इसे मजार में,
भगवान की कृपा से दुरुस्त हो जाएगी दस हजार में,
बोला कंजूस भाई डॉक्टर साहब।
यह बेकार बीवी इतना खर्च करायेगी।
दस हजार में तो बीवी नई आ जायेगी।

गुरू का आशीर्वाद

सुरभि जैन बी.कॉम ।

गुरू के बिना शिष्य,
जैसे सूर्य के बिना चन्द्रमा।
गुरू है ईश्वर से भी ऊपर, उसे कोटि-कोटि वन्दना।
करे हैं इतने उपकार,
उसके लिए धन्यवाद बारम्बार।
शीश पर रहे आपका हाथ,
और हम करते जाएँ तरक्की वाला कार्य
आपके जरिए पा जाएँ अपना मुकाम॥

असाइनमेंट की मार

रंजना सिंह बी. एड.

हर हफ्ते को असाइमेंट हमारा,
छीना इसने चेन हमारा।
संडे को हम पढ़ते रहते,
दस-दस घण्टे लिखते रहते।
घरवाले हो गये हमसे बहुत दूर,
कॉलेज में आने को हैं मजबूर।
मुश्किल से तो संडे आता,
उस दिन भी यह असाइमेंट रूलाता।
हमसे अच्छी भतीजी प्रतिक्षा,
साल में उसकी दो ही परीक्षा।
ताजा होकर स्कूल को जाए,
शाम को खेले मौज मनाए।
असाइनमेंट ने ले ली खुशी हमारी,
कोई न समझे व्यथा हमारी।
कौन हमें मुक्ति दिलवाए,
इस संकट से हमें बचाये।

Scanned by CamScanner

Article

Lesson Planning

(An indispensible teaching learning activity)

ABHA K. JOHRI Lect. B.Ed.

Lesson planning is an indispensable teaching learning activity that goes on in a classroom. During recent decades, there has been a phenomenal rise in that realm of evaluation procedure of all these, lesson planning has also been a given a new format in the form of Bloom's schemes of formulating the educational objectives in the cognitive and affective domain. There is also planning of lessons for a short period of time and small content coverage. There are also much talked methods of teaching such as the Project Method, Dalton Method, Unit Method etc. which have not been adopted by teachers in general .

A lesson plan is actually a blue print of the work to be undertaken by teacher in a class room. So far we have not attached much importance to this essential aspect of teaching, except during the period of teacher education, on account of several difficulties of theoretical as well as practical nature. The present day, need is to devise ways and means to draw small size plans having objectives from affective domain rather than focusing on cognitive domain. We should think about the plan and strategy for drawing the plans with objective like attitude, aptitude and interest etc.

So for the lesson planning is concerned, Herbaria steps have been followed with minor changes from time to time. It is here that while following Herbaria steps, we may change our method of teaching or combine different techniques of teaching in the same lesson according to the class room situation.

Formulations of objectives : The objectives which are generally laid down are (i) Knowledge (ii) understanding (iii) Application and (iv) Skill development or acquisition. There are other objectives like attitude, aptitude and interests which can not be dealt with equal significance. We have to sort out a number of objectives to be achieved on a priority basis in different areas of the school curriculum like the languages, social science and science with mathematics.

Methodolog1y : The course or the content of the subject under study is significant. The prospective teacher's rely upon the text books in different subjects taught by them. The model plans prepared should have the subject matter derived from standard books of the subject with current data and information.

Due to the type of examination system and our Indian educational system at high school and Intermediate level, we are confined to limited methods of teachixg. Whatever method we use, the very basis of planning a lesson is Herbaria way of planning, let it be a unit method, project method, the lesson proceed from preparation to evaluation with a change in the technique of teaching.

Evaluation Scheme : The last but not the least stage needs careful planning . Every behaviourial change can not be tested by paper. The evaluation of subject matter taught should be done at the end of daily teaching. After completion of the plan, the entire class must be given some home work.

Everyone has a will to win but very few person have the will to prepare to win.

Scanned by CamScanner

Social Networks in Education System

Reshu Arora
Lecturer, Education Dept.

Humans are social creatures. With rare exception, we strive to relate, converse and connect with others. Social networking promotes online communities of interests and activities that promote connections between users in a more open and robust manner than simple e-mail Social networking and education has found its circles meshed. According to a new Study by National School Boards Association, online social networking is now so deeply embedded in the lifestyles of teens that it rivals television for their attention. Further, students report that one of the most common topics of conversation on the social networking scene is education. Almost 60 percent of students who use social networking talk about education topics online and, surprisingly, more than 50 percent talk specifically about school work. Most available educational systems hardly support sociability. There is a need for a central system that allows the campus community to interact, socialize, discuss, collaborate and promote their activity. This condition forces both lecturers and students especially to look for services outside of available online systems provided by the campus to hold discussions and create groups, such as Yahoo! Groups or face book pages etc. to manage their events. These social networking systems have some advantages as well as some drawbacks.

Advantages : Since the web is arguably better linked than the "real world", finding people on-line with shared interests is easier, and more likely. Nowadays many applications allow users to keep in touch with long term friends, family and to find new friends. In addition, new relationships based on the links between friends, and friends of friends are created. These new relationships are not limited to people users already know. Indeed, links are created in the act of stating an interest, or joining a network; in this action, users find other people who share the same opinions, hobbies, or university. To maintain relationships, the computer-supported social network software provides various tools within the application (forums, tickets, online profiles, etc.). Thus users have more support options than when using one-to-one communications such as email. When a dedicated place is available for users to post specific comments, the opportunity to request information and gauge others' interactions creates available norms that can more easily be applied. Viewing others' comments and postings provides a double feedback to the user : first, they are using the right application at the correct place; secondly, other people have the same questions, interests or ideas. This promotes a much needed sense of community. This reciprocating interaction applied to the university environment offers not only benefits to students but in the long term to the entire community.

Drawbacks : Links among individuals based on trust, affinity and expertise versus friendship are not as well defined as in the real world. As the definition of strong and weak ties

Scanned by CamScanner

are vague in their application to online relationships, social software struggles to model and implement real world relationships. Online profiles can be a source of deception. Indeed, when a person miss-states their true identity or intentions, trust is broken, potentially negating the foundation of their online relationships. It is much easier to lose contact online since online interaction is asynchronous communication. Native students over-reliant on online communication can be unwittingly cutoff from the necessary communities with possibly disastrous academic consequences. In terms of trust, the security of personal information online is increasingly important. Whilst the authenticity of online identities may be questioned, conversely the vulnerability of personal information online is generating increasing numbers of 'horror stories' covered in the mass media. Many social networking sites work on a basis of presumed trust, with users' profiles being displayed and available to registered users and guests (meaning non-registered users) by default, even if they do not belong to the same network or do not share the same interests. Progressively, many networks now give the users the facility to set their own level of disclosure, at a community level or to close friends only. However, this precaution is not yet available for all applications.

Academic use is limited, social networking sites (SNS) is still a "playful" thing. Despite posting personal information on public website's, student responses seem to suggest an "illusion of privacy" and that SNS are used primarily for communication. Campus SNS program initiatives, whether academic or non-academic, should be mindful of SNS as a presentation or image building tool that may affect their future.

Passion of life

Rekha Jadon B.A. II

To achieve something great in the world, you need passion
To fulfill a vision, great leader's courage comes from passion.
Whatever it may be, you must find yours passion.
Never underestimate, the power of passion.
Without passion religion is spiritless.
Without passion history is meaningless.
Without passion art is useless.
There is no end and there is no beginning.
There is only the passion of life.
Passion is universal humanity.
Passion is the genesis of genius.
Follow your Passion and success will Follow you.

"Difficulties do not crush men, they make them....and finally fetch the rewards"

Scanned by CamScanner

BRAINSTORMING

Nishant Agrawal
Lecturer, BBA Deptt.

Brainstorming is a group technique for generating new, useful ideas and promoting creative thinking. It can be used to help 1) define what project or problem to work on, 2) to diagnose problems , 3) remediate a project by coming up with possible solutions and to identify possible resistance to proposed solutions.

Roles : There are three roles for participants in a brainstorming session : leader, scribe and team member.

Leader : This person needs to be a good listener. Before the session they need to refine a statement to help the others on the team focus on the reason for the brainstorming, and prepare the warm up activity. During the session the leader will need to relay the ground rules of the session, and to orchestrate the session.

The Problem Statement :

- Needs to be specific enough to help participants focus on the intent of the session, but it must be open enough to allow innovative thinking.
- Should not be bias so it favour a particular solution or excludes creative ideas.

Ground Rules for Brainstorming :

1. All ideas are welcome. There are no wrong answers. During brainstorming, no judgments should be made of ideas.
2. Be creative in contributions. Change involves risk taking, it's important to be open to new, original ideas. Every point of view is valuable.
3. Attempt to contribute a high quantity of ideas is a short amount of time.
4. Participants should "hitch hike" on others' ideas.

Scribe : This person needs to write down EVERY idea clearly and where everyone in the group can see them. Check to be sure the materials provided will allow you to write so everyone in the group can clearly see what you are writing. The scribe could be the same person as the leader.

Team Members : The number of participants should be no less than five, and no more than ten. The ideal group number is usually between six and seven. Sometimes it is helpful to include a person on the brainstorming team who has worked with the subject in the past.

Team members will follow this brainstorming procedure :

1. Team members will make contributions in turn.
2. Only one idea will be contributed each turn.
3. A member may decline to contribute during a particular round, but will be asked to contribute each round.
4. Participants should not provide explanations for ideas during brainstorming. Doing so would both slow the process down, and allow premature evaluation of ideas.

Scanned by CamScanner

Set the Stage :

- If possible the group should know what the brainstorming session is about before the session begins. This will allow them to think about the session.
- Provide appropriate places and ways to record ideas. This could include: flip charts, chalk or white boards, Post-its or large monitored computers.
- Provide a mental and physical environment which allows for creativity. Putting out thing such as magazines, clay, books, water colors, slates etc.

Steps for the Leader on How to Brainstorm

1. **Introduce the Session :** Review the reason for the brainstorming session, discuss the ground rules, and the team member procedure to be used.
2. **Warm-Up :** Provide a warm up activity (5 to 10 minutes) that helps the group get use to the excitement possible in a brainstorming session. This activity should be on a neutral subject that will encourage participants to be creative. The leader may want to end the warm up by having the members discuss what could be said about the ideas that would prevent brainstorming from being successful.
3. **Brainstorming :** This is the creative part. Set a time limit of 20 to 25 minutes. Sometimes it is effective to call time and then allow 5 more minutes. Stop when there is still excitement, do not force the group to work. Guide the group to generate as many ideas as possible. All suggestions made must be noted by the scribe. The scribe should use the speaker's own words. If the speaker's idea is long, the leader may need to summarize it and verify with the originator if the summary is correct.
4. **Process the Ideas :** Review ideas for clarification, making sure everyone understands each item. Similar ideas should be combined and grouped. At this point you can eliminate duplicate ideas and remove ideas. Next the group should agree on the criteria for evaluation. This could include: time allotments, talents and skills of the group, and more.
5. **Establish a consensus if appropriate :** Have the group vote on ten ideas to consider, then have the group vote on five of the ideas and tally the results to get a priority of feelings of the group. After refining ideas give each team member 100 points to allocate on the idea list. Team members can use their points however they wish. Have team members pick the five ideas they favor. Then ideas with the most picks can be prioritized. ❖

When the vision is one year, cultivate flowers.
When the vision is ten years, cultivate trees.
When the vision is eternity, cultivate people. ***Oriental Saying***

Study as if you were to live forever,
Live as if you were to die tomorrow. ***Mahatma Gandhi***

The price of greatness is responsibility. ***Wiston Churchill***

Scanned by CamScanner

Article

Role of ICT in Education Sector

PUSHPENDRA SINGH
Lect. Teacher-Education Department

NOW a days, the role of Information and Communication Technology (ICT), especially internet in the education sector plays an important role especially in the process of improving the technology into the educational activities. Education Sector can be the most effective sector to anticipate and eliminate the negative impact of ICT. Technology (Internet) in other side can be more effective way to increase the student's knowledge. ICT is not just the bloom the educational activities but also it will be the secondary option to improve the effective and meaningful educational process.

The main purpose of the Strategy for information and communication technology implementation in education is to provide the prospect and trends of integration and communication technology (ICT) into the general communication activity.

There are some unavoidable facts in the modern education-

- First, the ICT has been developing very rapidly, now-a-day. Therefore, in order to balance it, the whole educational system should be reformed and ICT should be integrated into educational activities.
- Second, the influence of ICT, especially internet (Open Source Tool) cannot be ignored in our student's life. So, the learning activity should be reoriented and reformulated, from the manual source centered to the open source ones. In this case the widely use of internet access has been an unavoidable policy that should be anticipated by college authorities.
- Third, the colleges can let their students be familiar with educational games adjusted by their teacher. Besides they can also support and facilitate their students to have their own blogs in the internet. The students can create and write something like articles, poems, news, short stories, features, or they can also express their opinion by the online form provided in the internet. They are able to share experience throughout their blog to other from all over the world. By doing so, I think our young generation will get more information and knowledge by browsing the internet. They can also create innovations in web design that it may be out of the formal curriculum content, but it will be useful for their future.
- Fourth, the implementation of ICT in education has not been a priority trend to education reform and the state paid little attention to it. Therefore, there should be an active participation. Initiative and good will be the college and the government institution to enhance ICT implementation at college.

Scanned by CamScanner

- Fifth, the teachers should be the motivator and initiator of the ICT implementation at colleges. The teachers should be aware of the social change in their teaching activities. They should be the agent of change from the classical method into the modern one, they must also be the part of the global change in learning and teaching modification.

The followings are the aim and objectives of ICT implementation in education :

1. To implement the principal lifelong learning education.
2. To increase a variety of educational services and medium / method.
3. To promote equal opportunities to obtain education and information.
4. To develop a system of collecting and disseminating educational information.
5. To promote technology literacy of all citizens, especially for students.
6. To develop distance education with national contents.
7. To promote the culture of learning at college development of learning skill expansion of optional education, open source of education etc.
8. To support colleges in sharing experience with other. ❖

TRUE FRIEND'S

SAYUNKTA GUPTA
B.COM. II

Can anyone tell me ?
Whom we should trust most ?
Who are most Faithful ?
Who help us whenever ?
We need help ?
Who are friends ?
With everyone ?
Who always try to improve
Our creative thought and ideas ?
and there is a simple answer to all these
and it none other than
OUR TRUE FRIEND - BOOKS.

CARRIER AND CONFIDENCE

Life need a Carrier.
Carrier needs a Confidence
Confidence needs an Experience,
Experience needs an Effort,
Efforts need on Education,
Education needs a Teacher. ❖

Scanned by CamScanner

Group Discussion

Dr. Rashmi Saxena

Group Discussion is a form of group communication. In Group discussion, a particular number of people meet face to face. About three to eight people meet and through free oral interaction originate, share and discuss ideas. These people discuss on a particular problems and finally arrive at a discussion or solution to a problem. Group discussion are not only mostly used in most of the organizations for decision making and problem solving. But used as a personality test for evaluating many candidates simultaneously also.

Tips for success in Group Discussion :

- Ever enter the room with a piece of paper.
- Listen to the voice and topic carefully.
- Be thorough with current issues.
- Organize your ideas before speaking.
- Speak, first only when your have anything meaningful to say because speaking first is a high risk and high return strategy.
- Don't speak every time only to show your presence.
- In Group discussion, identify your supporters and opponents.
- Time should be managed well.
- Avoid narrow mindedness and listen to other's views.
- Use tact, humour and wit.
- Encourage the silent members to speak.
- If disputing arguments increases, provide fresh direction to the discussion.
- Be amiable to avoid conflict and unpleasant feelings.

Following techniques may be used in group discussion-

- Brain Storming Technique
- Nominal Group Technique
- Delphi Technique

Brain Storming Technique : It is a method for producing a variety of ideas and perspective. The group leader states the problem in a clear manner so that all the participants understand it and the members suggest various sort of alternatives within the given time. There are two types of brain storming techniques :

- Story boarding
- Lotus blossom.

The people who are brain storming should belong to a wide range of disciplines and should have different social & cultural background so that unexpected insights, ideas & connections must be generated.

Nominal Group Technique : In it no discussion take place untill all ideas have been written by all members then the group discuss the ideas and evaluates them.

Delphi Technique : It is more complex and time consuming. It is like nominal group technique but it does not require the physical presence of group members so it can be used for decision making in geographically scattered groups.

Scanned by CamScanner

Quotation

Some Important Thoughts

Rekha Rani B.T.C.

When the mind is pure, words and actions will be pure automatically.

Buddha

Work essentially without egoism and without expectation of fruits, have balanced mind in success and failure. You will not be bound by Karmas.

From- Bhagwat Gita

To become a child of god is the sweetest relationship a devotee can have with god.

From- Bhagwat Gita

It is nice to have a company. But it is better to be alone than having a bad company.

By Prophet Mohammad

"God created man in his own image, in the image of God.

From- Genesis

Luck

Luck is not in our Hand.
But work is in our hand.
Luck never makes our work.
But work can make our luck.
So therefore, meaning is
always trust in your self.

All in Stars
Unlucky Number-7

Ajeet Singh B.Ed.

Number 7 has proved fatal in the Columbia Space Mission and in the Kalpana Chawala's life.

- Total Number of Astronauts = 7
- Date of launching (Jan.) 16 (1 + 6) = 7
- Total Number of days of mission = 16 (1 + 6) = 7
- Minutes before explosion occurred = 16 (1 + 6) = 7
- NASA's running years completed 142 (1 + 4 + 2)=7
- Kalpana has Total Number of letter in name = 7
- Shuttle was due for landing 7.27 = (7 + 2 + 7) = 16 (1 + 6) = 7
- Shuttle was apart before explosion = 160 km/h = (1 + 6 + 0) = 7
- Kalpana's running year = 4.3 (4 + 3) = 7

Kalpana's Date of Birth = 7.01.1961
7+1+1+9+6+1 = 25 = (2 + 5) = 7

अनमोल वचन

फल चाहिए तो कर्म करो।
धन चाहिए तो दान करो।
शान्ति चाहिए तो भजन करो।

Scanned by CamScanner

Article

Swami Vivekanand

Priyanka Sharma B.B.A-I

Swami Vivekanand was born on January 12th, 1863. He is one of the most inspiring personality of India, who did a lot to make India, a better place to Live in. Within a short of time, he achieved a lot and went a long way in serving humans. He was the principle of desciple of Rama Krishna Paramhansa. Well In this articles, I will wishes provide you with the Swami Vivekanand biography that will give you a valuable insight into life history of Vivekananda.

It is Swami Vivekananda who can be attributed the credit for laying the foundation for establishment of Ramakrishna Mission and Math that are actively involved in carrying out philanthropic works. The National Day that is celebrated on the twelve of January every year is dedicated to Swami Vivekananda, as it is on this day that this impressive personality was born. His influence led to the introduction of 'Vedanta Philosophy' in America and England.

His efforts were acknowledged even by the noted Indian leaders such as Mahatma Gandhi and Subhash Chandra Bose. Subhash Chandra Bose called him 'The maker of Modern India'. According to Gandhi ji, it was the influence of Swami Vivekananda that his love for his country increased thousand fold. He deserves a major credit for giving the nation a modern vision. His influence led to the introduction of Vedanta philosophy in America and England.

Before turning into a monastic. Vivekanand was called by the name of Narendra Nath Dutta. He was born as the son of Vishwanath Dutta and Bhuvneshwari Devi on the 12th of January, 1863, in Shimlapally, Kolkata, Meditating at a very early age. Even as a child, he was an all rounder. He was outstanding at the Studies, games and other extra curricular activities. In the year 1879, he joined Presidency College for pursuing higher study. After one year, he learnt philosophy from the Scottish Church College, Calcutta. It was in this college that he got to know about Sri Ramakrishna of Dakshineswar.

The Ram Krishna mission was founded by Swami Vivekanand, the chief desciple of Sri Ramakrishna Paramhansa. on 1st of May, in the year 1897. The Vivekanand Rama Krishna Mission is actively involved in the missionary as well as altruistic works such as disaster relief. It's head quarters are based near Kolkata, India.

Scanned by CamScanner

Swami Vivekanand was a great social reformer and a very inspiring personality. He was the pride of India. He made an immense contribution to purify the souls of people. He always said that god dwells inside every heart. It was of his opinion that, a person, who cannot see God in poor and unhealthy people, but claims to see God. In the Idol, is not true.

He compiled a number of books on the yoga namely 'Raj Yoga, Karma Yoga, Bhakti Yoga and Gyan Yoga. His best literary works include the letters written by him. Which have a lot of spiritual value. He maintained a very simple style of writing. So that the laymen, from whom the massage is meant, are able to understand his each and every words. He was not just actively involves in writing, but also was a great singer and composed several songs. On July 4th, 1902, at a young age of 39, this great man headed his way for heaven.

Do You Know ?

Rekha Jadon B.A. II

1.	First Indian Woman Pilot -	*Durga Banerjee*
2.	First Indian Woman to become Miss Universe -	*Sushmita Sen*
3.	First Indian Woman as an President & Ambassador -	*Vijaya Laxmi Pandit*
4.	First Indian Woman to serve as Cabinet Minister -	*Raj Kumari Amrit Kaur*
5.	First Indian Woman who founds Asia Awards -	*Kangna Ranawat*
6.	First Indian Woman Judge of High Court -	*Ann Candy*
7.	First Indian Woman Vice Chairman of Rajya Sabha -	*Najma Heptullah*
8.	First Indian Woman who reached Mount Everest -	*Ms. Bachindri Pal*
9.	First Indian Woman who reached Antartica -	*Ms. Mhaimus*
10.	First Indian Woman who goes into Space -	*Kalpna Chawla*
11.	First I. P. S. Officer in India -	Kiran Bedi
12.	First Governor of India -	*Mrs. Sarojini Naidu*
13.	Nobel prize winner -	*Rabindra Nath Tagore*
14.	Emperor of Mughal Dynasty in India -	*Babar*
15.	First Indian (I. C. S.) Officer -	*Satyendra Nath Tagore*
16.	The First man to climb Mount Everest without oxygen -	*Phu Dorjee*
17.	The First Indian World Chess Champion -	*Vishwanathan Anand*
18.	The First Indian to Cross Seven Important Seas by Swim -	*Bula Chaudhary*
19.	The Highest Individual test scorer of India -	*Virendra Sehwag*
20.	The First man to go into space in 1961 -	*Major Yuri Gagrin*
21.	The First Indian Woman who stayed at the longest time into space till 6 months -	Sunita Williams

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Mr. U. K. Malhotra

SLUK

Shyam Lal Umesh Kumar

Deals in All Types of Electrical Goods

Distributor for :

✦ **Khaitan** ✦ **DARBAR** ✦ **lagrand**

Subzi Mandi, Phool Chauraha, ALIGARH (U.P.) INDIA
Ph. : 0571-2510794, 3292233, 2511431 Fax : 2511431
Customer Care : 07417637163
email : sluk@rediffmail.com

Scanned by CamScanner

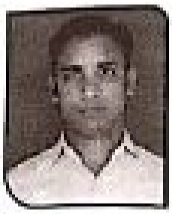

Health

How much Water is needed to be Drunk per Day

Vishal Gupta B. Ed.

For year's, people have said you should drink 8 glasses of water a day. However, is there any scientific of medical proof to back up this claim? If not, then exactly how much water should a person be Drinking?

First, there are many factors that you need to consider, before knowing how much water you should be drinking per day. Some of these factors include exercising, environment, illness of health condition, and pregnancy. With exercising, you need to consume extra water for the amount that was lost in the process of sweating. Having a couple of ounces every fifteen minutes should be sufficient for short rounds of exercise, but intense exercise, which lasts more than an hour (i.e., running a marathon) requires more fluid intake.

The environment you live in is important in deciding how much water you need, because certain weather conditions such as excessive heat and humidity can make you sweat even without exercising. Furthermore, being inside in climate controlled conditions in the winter can also deplete the body of water, and if you're at an altitude greater than 8,200 feet (2,500 Meters), this may cause on increased frequency of urination and more rapid breathing, which will use up more of your fluid reserves.

Also, you may need increased fluid consumption if you develop certain conditions, such as bladder infections of urinary tract stones. On the other hand, some conditions such as heart failure and some types of kidney, liver and adrenal diseases may impair excretion of water and even require that you limit your fluid intake.

Pregnant women or women that are lactating also need an increase in water intake to make up for the loss of water from nursing. It is recommended that women who are nursing consume at least 10-13 cups of water every day during their lactation period. The body requires the extra hydration during this time and needs to be replenished.

While there is no conclusive evidence to show that it's necessary for normal, healthy adults to drink 8 glasses of water per day, it is still a good guideline to follow. Also, it's important to mention that you can make up for your fluid needs, with other things besides water. Many foods, such as watermelons and tomatoes, are composed with a lot of water. Also, beverages such a milk, tea, soda, coffee, and juice can provide you with needed fluids. However, water is still probably your best bet, since it is caffeine free, calorie free and the most inexpensive.

Scanned by CamScanner

Article

ENGLISH IN INDIA : A HISTORICAL PERSPECTIVE

Vineeta Varma B.T.C.

In the early Nineteenth century the assertive presence and dominance over vast areas, trade and life of India was, howsoever insulting and painful, a reality. The contact between the intruders, English man, and the natives, was inevitable and the need to know each other, for their selfish reasons, grew more and more.

The early Nineteenth Century was a period of great political, social, cultural and economic turmoil for India. India was sinking lower and lower in every field of human activity. Individual and collective efforts were made but there was not concerted, organized and enlightened movement to alleviate the misery of the haples nation. The great urdu poet, Iqbal, observed:

"ऐ अहले नजर, जौके नजर खूब है, लेकिन
जो शै की हकीकत को न समझे वो नजर क्या है"

So these people, with perceptive intellect and insight into the nature of things shows the reality and without caring for the criticism immediately concerned the advantages that would come to their brethren if they studied English. Raja Ram Mohan Roy is not a new name to any educated Indian. He was not only convinced of the awakening that would ensure through the study of English but also founded institutions where Bengali students were taught through English.

"Thus we see that English in India or in educational system and institution was not an imposition and in erroneously believed even to this day."

Winners v/s Loosers

Smt. Deepa Varshney

- *The Winner is a part of answer.*
- *The Looser is always a part of the problem.*
- *The Winner is always has a plan.*
- *The Looser always has an excuse.*
- *The Winner says. 'Let me do it for you.'*
- *The Looser says, 'That's not my job.'*
- *The Winner sees an answer in every problem.*
- *The Looser sees a problem in every answer.*
- *The Winner sees a green near every trap.*
- *The Looser sees a stand trab near every green.*
- *The Winner says, 'It may be difficult, but it is possible.*
- *The Looser says, 'It my be possible, but so difficult.'*

Scanned by CamScanner

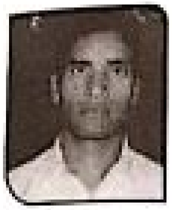

Article

WHAT IS LIFE ?

Atul Kumar Bhaskar B.Ed.

Many times a question quired to my mind 'What is life ?' Generally life is a very small word but it has a deep meaning. It is not a bed of roses but a mixture of failures and struggles. Sometimes we are in a joyful and happy mood but another times we feel gloomy and sadness as pain follows pleasure and pleasure follows pain.

Life is a laughter. It being with smile and ends in tears. It is to live, love and laugh. It is a constant struggle between rising and falling. We must learn to fight this battle bravely. Struggle gives us courage and makes us strong. Life is a short interval between birth & death. A coward dies many times in life but a brave tastes death only one in life.

Life is like a sentence. Our birth is the beginning. Youth is dash old age is the comma and death is the full Stop. So each moment is precious in life. It must not to be wasted in sorrow and sadness. Smiling face is welcomed everywhere. It wins heart and inspires love.

Life is a comedy for those who think and tragedy for those who feel. It is a common saying that life is a comedy for the rich, a game for the fool, a dream of the wise and tragedy for the poor but it is neither a comedy nor a tragedy. I dreamed that life was beauty when I woke up and found that life is duty.

What should be in life ?

We must know what is the life and how we can make it better and praise-worthy. It is not possible without aimful education and good understanding. There should be some pearl like qualities in life.

Self confidence- If we have no confidence on ourselves, nobody, in this world believes us. It is an important factor to get knowledge of all fields. So we must develop this quality in our life.

Self control- Without self control, we are like animal. We can gain nothing in life. All efforts become useless and fruitless. Everybody must develop it to enlarge the range of his mind. By chanting Gayatri Mantra it can be possible.

Self respect- If we have no self respect, no body can respect us. Respect begets respect in many fold. If a student wants to gain more and more education, he must learn how to respect the teachers.

Scanned by CamScanner

50 Best Success Thoughts

Tanubhav Pratap Singh B.Com. II year

1. "Identify your problems but give your power and energy to solution." *Tony Robbins*
2. " You live longer once you realize that any time spent being unhappy is wasted." *Ruth E. Renkl*
3. "The only true wisdom is knowing that you know nothing" *Socrates*
4. Things work out best for those who make the best of how things work out. *Johan Wooden*
5. "Let no feeling of discouragement prey upon you, and in the end you are sure to succeed." *Abraham Lincoln*
6. "If you are not willing to risk the usual you will have to settle for the ordinary." *Jim Rohn*
7. "Trust because you are willing to accept the risk, not because it' s safe of certain." *Anonymous*
8. "When your life flashes before your eyes, make sure you've got plenty to watch." *Anonymous*
9. "Screw it, Let's do it. **Richard Branson**
10. "Be content to act, and leave the talking to others." **Baltasa**
11. "Innovation distinguishes between a leader and a follower." **Steve Jobs**
12. "The more you loose yourself in something bigger than yourself, the more energy you will have." **Norman Vincent Peale**
13. "If your ship doesn't come in, swim out to meet it." **Jonathan Winters**
14. "People often say that motivation doesn't last. Well, neither does bathing - that's why we recommend it daily." **Zig Ziglar**
15. "Courage is being scared to death, but saddling up anyway." ***John Wayne***
16. "Too many of us are not living our dreams because we are living our fears." **Les Brown**
17. "The link between my experience as an entrepreneur and that of a politician is all in one word; freedom." **Silvio Berlusconi**
18. "The entrepreneur builds an enterprise; the technician builds a job." **Michael Gerber**
19. "A real entrepreneur is somebody who has no safety but underneath them." **Henry Kravis**
20. " Most new jobs won't come from our biggest employers. They will come from our smallest. We have got to do everything we can to make entrepreneurial dream a reality." **Ross Perot**
21. "My son is now an 'entrepreneur'. That's what you're called when you don't have a job." **Ted Turner**
22. "As we look ahead into the next century, leaders will be those who empower others." **Bill Gates**
23. "As long as you're going to be thinking anyway, think big." **Donald Trump**
24. "If you want to achieve excellence, you can get there today. As of this second, quit doing less than excellent work." **Thomas J. Watson**
25. "The only place where success comes before work is in the dictionary." **Vidal Sassoon**
26. "Capital isn't scarce; vision is." **Sam Walton**
27. Failure Defeats losers, failure inspires winners." **Robert T. Kiyosaki**

Scanned by CamScanner

28. Some people dream of great accomplishments, while others stay awake and do them." **Anonymous**

29. I will tell you how to become rich. Close the doors. Be fearful when others are greedy. Be greedy when others are fearful." **Warren Buffet**

30. "Going into business for yourself, becoming an entrepreneur, is the modern day equivalent of pioneering on the old frontier." **Paula Nelson**

31. "Poor people have big TV. Rich people have big library." **Jim Rohn**

32. "A goal is a dream with a deadline." **Napoleon Hill**

33. "Every day I get up and look through the Forbes list of the richest people in America. If I'm not there, I go to work." **Vinnie Rege**

34. "Expect the best. Prepare for the worst. Capitalize on what comes." **Zig Ziglar**

35. "People are not lazy. They simply have important goals- that is, goals that do not inspire them." **Tony Robbins**

36. "Nobody talks of entrepreneurship as survival, but that's exactly what it is." **Anita Roddick**

37. "The best reason to start an organization is to make meaning; to create a product of service to make the world a better place." **Guy Kawasaki**

38. "A friendship founded on business is a good deal better than a business founded on friendship." **John D. Rockefeller**

39. "I've been blessed to find people who are smarter than I am, they help me to execute the vision I have." **Russell Simmons**

40. "I find that when you have a real interest in life, and a curious life, that sleep is not the most important thing." **Martha Stewart**

41. "Logic will get you from A to B. Imagination will take you everywhere." **Albert Einstein**

42. "Success is liking yourself, liking what you do, and liking how you do it." **Maya Angelou**

43. "Success is walking from failure to failure with no loss of enthusiasm." **Winston Churchill**

44. "The function of leadership is to produce more leaders, not more followers." **Ralph Nader**

45. "Without continual growth and progress, such words as improvement, achievement, and success have on meaning." **Benjamin Franklin**

46. "Big pay and little responsibility are circumstances seldom found together." **Nepoleon Hill**

47. "Make your product easier to buy than your competition, or you will find your customers buying from them, not you." **Mark Cuban**

48. "The road to success and the road to failure are almost exactly the same." **Colin R Davis**

49. "If you don't have a competitive advantage, don't compete." **Jack Welch**

50. "Opportunity is missed by most people because it is dressed in overalls and looks like work." **Thomas Edison**

Responsibilities gravitate to the person who can shoulder them.	*Elbert Hubbard*
A open ear is the only believable sign of an open heart.	*David Augsburger*
Nothing great is ever achieved without enthusiasm.	*Ralph Waldo Emerson*

Scanned by CamScanner

Why a Student fails ?

Jitender Kumar B. Com. II

Some time we say our friend 'failed' parents say 'our child failed' teacher say 'our student failed'. But none has thought about how can a student pass in Exams when.

1. Total Days in a year - 365 days
2. Sleeping Hours - 8 hrs / day - 365 x 8/24 = 122 days / year
3. Meal Hrs. - 2 hrs. / day - 365 x 2/24 = 31 days / year
4. Game Hrs. - 2 hrs. / day - 365 x 2/24 = 31 days / year
5. School function & game - 11 days / year
6. Exam During the year - 11 days / year
7. Winter Holidays - 30 days / year
8. Summer Holidays - 45 days / year
9. Yearly Sunday - 45 days / year
10. Other holidays like Holi, Diwali = 11 days / year

Total Holidays = 122+31+31+11+31+30+45+52+11 = 364 days

Balance day = 365 - 364 = 1 day
and remaining 1 day teachers are on leave.
Then how we can get as a student to study.

GOD

God is a great examiner.
We are all students.
The world is an examination hall.
Where we all are sitting and giving exams.
Life is the question paper,
Which we have to answer,
If we fail we go back to the same hall.
If we pass we go to the Heaven
and never return any more.

Tartary - Walter de la More

Renu Verma B. Com. II year

If I were lord of tartary.
My self, and me alone,
My bed should be of ivory,
of beaten gold my throne,
And in my Court Should peacocks flaunt,
And in my forests tigers haunt,
And in my pools great fishes slant,
their fins a thwart the Sun.
If I were lord of tartary,
Trumpeters everyday
To all my meals could Summon me,
And in my courtyard bray,
And in the evening lamps should shine,
yellow as honey, red as wine,
While harp's flute & Mandoline
Made music sweet & gay
If I were Lord of Tartary,
I'd wear a robe of beads.
White & gold & green they,d be
And small and thick as seeds,
And are should wane the morning Star,
I'd done my robe and scimitar,
and Zebras seven should draw my car
Through tartary's dark glades.
Lord of the Fruits of tartary,
Her rivers Silver - pale!
Lord of the hills of Tartary,
Glen, thicket, wood & dale!
Her trembling lakes, like Foamless Seas,
Her bird - delighting citron - trees,
In every purple vale!

Scanned by CamScanner

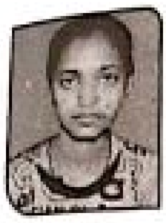

RAGGING - AN ACADEMIC EVIL

Sanyukta Gupta B. Com. II

Ragging has been a common practice among the students. It is a common word which means playing rough practical jokes on any person. It is often found in school and colleges where some students make fun and tease the new students. The new students are often stuck with horror and so do their parents. Many new students run away from the school or colleges to think lest they are made victim of ragging. No one exactly knows when this rough practice was started by the students of institutions. But I am sure that students who wished to enjoy themselves started this rough practical joke on their fellow students. However in the course of time it has taken a dreadful form. In some colleges it is found that new students who deny following them, the punishment given by the students were sometimes compelled to loss their life. Schools and colleges are like our temple. mosque and church, where we come to achieve education, not to become victim of ragging.

In recent times students have taken and are taking various means to tease or play rough practical jokes on their fellow students. Someone is forced to smoke continuously for one hour. Someone is touched with the lighted match stick over the body for one hour or more than that and this practice is called Japanese gnats. Someone is tortured to swim in the pool adjacent to the hostel in the darkness of night. There are so many ways of ragging heard. All these sorts of ragging very often react to the loss of life.

We should not involve our self in this in human activity. Government should take stern steps to put an end to this evil and to make the environment quite fearless and favourable for the learners. Teachers are often found that they are unaware of these in human activities which are taking place in their institution. Teachers should be strict and it is the moral duty of the teachers to make their pupil realize the abuses of ragging in the sphere of educational institution.

God Made Teacher

Anita Amrawat
B.Com. II

God understood our thirst for knowledge,
and our need to be led by some one wiser,
He needed as heart of comparison of
encouragement and patience.
Someone who would accept the challenge,
regardless of the opposition.
Some one who could see potential and
believe in the best in others....
So, his made a teacher.

Scanned by CamScanner

A Story of Soaps

Mohd. Tauseef Barkaaty
B.Sc. I year

MEDIMEX and DETTOL had two sons. One of them was HAMAM who maried NIMA and has two children RIN and JAI. He was working in a foctory and was given a bonus of GHARI worth Rs. 555.

The other one LUX loved REXONA. One day they went for a walk in CINTHOL garden. There was a lot of UJALA and BREEZE. They sat under the PEARS tree. The boy said to the girl "you are my BOROSOFT. NIVEA" The girl replied. "You are my Lifeboy" The love was SHUDH. They were very thirsty so they went to LIRIL canteen end drank NEEM ka Juice.

A fews days they went to Vananasi and saw the GANGA. They returned to ALIGARH in a ARIEL car and got married in a GODREJ hall. They lived in Pamolive house where they started their FRESHIA sansar with baby JOHNSON.

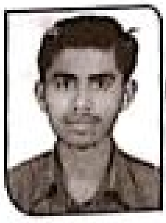

Value of Flowers

Khushboo Upadhyay
B.com II years

Flowers are very important in our life. Flowers are the most beautiful creation of the God. God makes flowers to spread fragrance. Flowers value can't be measured by any one because it is the symbol of goodness and beauty. Everyone should like a flower. Value of flower would be understood only when flowers blossom in some ones garden. When honey bees fly over to different flowers can you measure their happiness and joy ? When we give a flower to someone as a birthday present can you measure the appreciation at the moment ? When Somebody destroys one flower without any reason at the garden of natural loving person, can you measure its value for him ?

What Mahatma Gandhi means to an Indian

Anita Amrawat B.Com. II

M - Man of high Caliber.
A - Admired by all.
H - Humbly sweet.
A - Active up to last.
T - Truth was his life.
M - Made India Independent.
A - Avoided personal Comfort.
G - Genius in all respect.
A - Ahinsa he practiced.
N - Noble were his target.
D - Devoted life for the freedom of the nation.
H - Honest life he lived throughout.
I - Integrity was the hallmark of this free India.

Scanned by CamScanner

What is Life

Garima B.Sc. II

What is Life ?
Life is like a dark night.
Which will never finished.
In this life's dark night
Every person is a lay man.
So no one can enjoy this.
What is Life ?
The whole world is like a picture.
This picture gives us much.
Colours of life are grief happiness.
What is life ?
Life is like a sweet dream.
Which we are seeing on life's screen.
Our life is like a movie.
When this movies will finish.
That Day our life will also end.
What is life ?
Life is nothing.
Life is only a lie.
Only a lie, nothing about it.
The last Truth of life is the death,
only the death is the real truth of life.

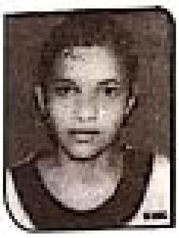

Value of time

Shivani Saxena B.Sc. II

To know the value of a year. Ask a Student who has Failed in his examination.
To know the value of a month. Ask a mother who is supposed to give birth to a baby.
To know the value of a week. Ask a businessman who had lost the contact.
To know the value of days. Ask a labour who has kids.
To know the value of hour. Ask a person who had met an accident.
To know the value of a minute. Ask a traveller who had missed the train.

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय का इतिहास एवं प्रगति

"कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः"

ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना 11 सितम्बर, 1998 में स्व. डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल जी द्वारा वाणिज्य संकाय के साथ की गई। डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल पेशे से डॉक्टर थे, लेकिन इसके अतिरिक्त वह एक लेखक, समाजसेवी के साथ-साथ अच्छे शिक्षाविद् भी थे। इसी कड़ी में उन्होंने ज्ञान महाविद्यालय की स्थापना की। Work is worship उनके जीवन की Philosophy थी। 2002 में उनके मरणोपरांत महाविद्यालय की बागडोर उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री दीपक गोयल जी द्वारा संभाली गयी। लोग मिलते गये कारवाँ बढ़ता गया और उन्होंने अपने महाविद्यालय की टीम के साथ ज्ञान महाविद्यालय को एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और यह अलीगढ़ में चौथे महाविद्यालय के रूप में प्रसिद्ध हुआ। वर्तमान में महाविद्यालय में पाँच संकायों में स्नातक कोर्स बी.एड., बी. एस-सी., बी.कॉम, बी.ए., बी.बी.ए. व बी.सी.ए. संचालित हैं तथा परास्नातक स्तर पर एम.कॉम का कोर्स सफलतापूर्वक चल रहा है अतिशीघ्र आई. टी. आई. कोर्स की भी मान्यता प्राप्त होने वाली है।

इसके अतिरिक्त सचिव महोदय के प्रयासों द्वारा अलीगढ़ जिले में सर्वप्रथम बी.टी.सी. कोर्स की मान्यता प्राप्त हुई तथा 50 सीटों के साथ 2010 का बैच अध्ययनरत् है। महाविद्यालय के शिक्षा विभाग में 200 सीटें हैं। यह तो बहुत ही हर्ष का विषय है कि यू.जी.सी. द्वारा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा ग्रेडिंग में शिक्षा संकाय को 'A' ग्रेड की प्राप्ति हुई। यह उ.प्र. का 17 वाँ व आगरा विश्वविद्यालय का पहला कॉलेज बना, जिसने सबसे अधिक अंकों के साथ 'A' ग्रेड प्राप्त किया। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में Aeronautical Material में Delft University, Holland से पी.एच-डी. करके आये डॉ. गौतम गोयल का विशेष योगदान सराहनीय रहा।

महाविद्यालय में चार भवन डॉ. रघुनन्दन प्रसाद प्रशासनिक भवन, सरस्वती भवन, ज्ञान भवन व स्वराज्यलता भवन हैं। सरस्वती भवन जहाँ जन्तु, वनस्पति, रसायन, भौतिकी, भूगोल व मनोविज्ञान की प्रयोगशालाओं से सुसज्जित है। वहीं पर ज्ञान भवन में मनोविज्ञान, भाषा, कला व शिल्प, शारीरिक व स्वास्थ्य, विज्ञान संगीत आदि के रिसोर्स सेंटर हैं तथा सुसज्जित आई.सी.टी. प्रयोगशाला है। जहाँ पर सभी कम्प्यूटर पर वाई.फाई. सिस्टम लगे हुये हैं। दोनों ही भवनों में पूरी तरह से कम्प्यूटीकृत पुस्तकालय है जहाँ पर लगभग 20,000 Text Books हैं इसके अतिरिक्त जर्नल, न्यूज लैटर, पत्रिका तथा समाचार पत्र की भी पुस्तकालय में सुविधा है। इसके अतिरिक्त सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये पूरा कैम्पस सी.सी.टी.वी. कैमरों से सुसज्जित है।

आगरा विश्वविद्यायल में पहला एकमात्र स्ववित्तपोषित कॉलेज है, जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम चल रहा है इस वर्ष सात दिवसीय कैम्पस नजदीक के बढ़ौली गाँव में आयोजित किया गया था। इसी वर्ष महाविद्यालय द्वारा बढ़ौली गाँव को गोद लिया गया है। शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु इस गाँव की लड़कियों को महाविद्यालय में निःशुल्क शिक्षण सुविधा दी जा रही है। इसके अतिरिक्त "**स्वराज्य स्वावलम्बी योजना**" के अंतर्गत गाँव में होने वाली प्रत्येक लड़की की शादी के शुभ अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधन की ओर से एक सिलाई मशीन देने का भी निर्णय लिया गया है। यह योजना 3 वर्ष तक लागू रहेगी। रक्तदान, भ्रष्टाचार रैली, पॉलोथिन हटाओ पर्यावरण बचाओ आदि सामाजिक कार्य भी समय-समय पर आयोजित हुए हैं।

महाविद्यालय में तीन समितियां हैं, जिनमें सांस्कृतिक, साहित्यिक व खेलकूद के अंतर्गत वर्ष भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। गत्वर्ष की तरह इस वर्ष भी "**ज्ञान महोत्सव**" के अंतर्गत शिक्षक दिवस, काव्य गोष्ठी, लोकनृत्य, विजिटिंग कार्ड प्रदर्शनी, हास्य व्यंग्य व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। संस्थापक दिवस के साथ ही इसका समापन हो गया। इसके अतिरिक्त एक अनुशासन समिति है जिसकी देख-रेख में ही महाविद्यालय के छात्र अनुशासित रहते हैं। आगरा विश्वविद्यालय में पहली बार छात्र/छात्राओं की उपस्थिति के लिए Biometric Machine भी लगी हुई है।

वर्तमान में महाविद्यालय में लगभग 1500 छात्र/छात्राएं अध्ययनरत् है तथा 55 टीचिंग स्टाफ व 50 नॉन टीचिंग स्टाफ है। अतः महाविद्यालय में शिक्षक-शिक्षार्थी का अनुपात लगभग 30 है जोकि सेल्फ फाइनेंस संस्था में एक बहुत ही अहम् बात है। इस वर्ष इण्टरमीडिएट में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 30 प्रतिशत व द्वितीय श्रेणी पास करने वाले

Scanned by CamScanner

विद्यार्थियों को 20 प्रतिशत का फीस में लाभ छात्रवृत्ति के रूप में दिया गया तथा अनुसूचित जाति के छात्र/छात्राओं के लिये नि:शुल्क शिक्षा महाविद्यालय द्वारा उ.प्र. समाज कल्याण विभाग के सहयोग से दी जा रही है।

महाविद्यालय में सेवायोजन प्रकोष्ठ व पुरातन छात्र समिति भी है। सेवायोजन प्रकोष्ठ के अंतर्गत छात्र/छात्राओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाते हैं। कई छात्र/छात्रायें सरकारी सेवाओं में चयनित हो चुके हैं। पुरातन छात्र समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव व कोषाध्यक्ष पदों के पदाधिकारियों के चयन हेतु प्रत्येक वर्ग पुरातन छात्र/छात्राओं से चुनाव कराया जाता है। इस वर्ष पुरातन छात्र समिति द्वारा एक पत्रिका **'ज्ञान दीप'** का भी प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त 16 दिसम्बर 2012 को पुरातन छात्र/छात्राओं के लिये **'ज्ञान दिवस'** का आयोजन भी किया गया। इसके अंतर्गत सांस्कृतिक कार्यक्रम व एक भ्रमण का आयोजन प्रस्तावित था।

महाविद्यालय का **''Vision to be a Center of Excellence''** है। इस श्रृंखला में शिक्षण गुणवत्ता बनाये रखने हेतु Internal Quality Assurance Cell (IQAC) भी कार्यरत है। इसके अंतर्गत शिक्षकों को सेमिनार, कार्यशालाओं व Orientation Programme में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस सत्र में 5 प्राध्यापकों को ए.एम.यू. में Orientation Programme के लिए भेजा गया और इसी तरह से हर तीन महीने बाद 5 प्राध्यापकों को Orientation Programme के लिए भेजा जायेगा। शिक्षण में नवीनता लाने हेतु शिक्षकों को Computer Note Book उपलब्ध कराये गये हैं। महाविद्यालय में समय-समय पर अध्ययन-अध्यापन की गुणवत्ता व उसमें नवीनता लाने के लिये अतिथि व्याख्यान, कार्यशालाओं व सेमिनारों का आयोजन किया जाता है।

महाविद्यालय **'ज्ञान पुष्प'** के नाम से वार्षिक पत्रिका व त्रैमासिक पत्रक **'ज्ञान दर्शन'** का भी सफल प्रकाशन कर रहा है। व आगामी दिनों में **'ज्ञान भव'** नामक जर्नल का द्वितीय संस्करण भी प्रकाशित करने जा रहा है।

महाविद्यालय की छात्राओं के लिए नि:शुल्क बस सुविधा का भी प्रावधान है। बस स्टैण्ड चौराहे से महाविद्यालय तक बस सेवा उपलब्ध करायी जा रही है। छात्रों के लिये सीमित स्थान पर नि:शुल्क हॉस्टल सुविधा भी है। छात्र/छात्राओं के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय के शिक्षकों व उनके परिवारों के लिये एक भ्रमण, हरिद्वार, देहरादून, मंसूरी व दूसरा चंडीगढ़, धर्मशाला व डलहौजी का भी नि: शुल्क आयोजन प्रबन्धन द्वारा किया गया।

ज्ञान परिवार नई पीढ़ी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिये प्रतिबद्ध है, जिसके अंतर्गत युवा वर्ग के रुझान के अनुरूप फेसबुक पर भी **'ज्ञान वाटिका'** नामक ग्रुप के साथ छात्र/छात्राओं एवं प्राध्यापकों से जुड़ा हुआ है।

महाविद्यालय भविष्य के लिए अनेक योजनायें बना रहा है, जिनमें मुख्य हैं :

1. एम. एड. की मान्यता प्राप्त करना।
2. महाविद्यालय को स्वायत्त (Autonomous) संस्था बनाना।
3. सभी विभागों में सेमिनार व कार्यशालाओं का आयोजन कराना।
4. प्रत्येक संकाय से जर्नल प्रकाशित कराना।
5. शिक्षण गुणवत्ता हेतु पाँच दिवसीय Orientation Programme का आयोजन कराना।

अंत में जिस तरह से ज्ञान महाविद्यालय ऊँचाइयों की तरफ अग्रसर है हम सभी ज्ञान परिवार के लोग मिलकर इसकी उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

धन्यवाद!

डॉ. गणतन्त्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

पढ़ो ऐसे कि जैसे तुम्हें सदा जीना है, जिओ ऐसे कि जैसे तुम्हें कल ही इस दुनिया से जाना है।
– महात्मा गांधी

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय में विभिन्न संकायों की प्रगति रिपोर्ट

वाणिज्य संकाय

वाणिज्य संकाय की प्रगति रिपोर्ट देते हुये मुझे काफी गर्व हो रहा है क्योंकि यह महाविद्यालय का परास्नातक विभाग होने के साथ-साथ, महाविद्यालय की स्थापना भी बी.कॉम. के साथ प्रारम्भ हुई थी। तभी से लगातार यह विभाग प्रगति के पथ पर अग्रसर है। सत्र 2009-10 से इस विभाग में भारी प्रवेश के दबाव को देखते हुये एक अतिरिक्त सेक्शन के साथ दो सेक्शन हो चुके हैं। इस वर्ष दोनों सेक्शन पूर्ण होने के साथ, शासन द्वारा अनुमन्य अतिरिक्त सीट में पूर्ण रूप से प्रवेश हो गये। महाविद्यालय प्रबन्धतन्त्र से एक नये अतिरिक्त सेक्शन की मांग की गयी है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह अतिरिक्त सेक्शन भी प्रबन्धतन्त्र द्वारा शीघ्र ही अनुमन्य कर दिया जाएगा।

❑ वाणिज्य संकाय में सत्र 2009-10 से परास्नातक की कक्षाएं प्रारम्भ की गईं। डा. भीमराव अम्बेडकर विश्व-विद्यालय से महाविद्यालय को एम. कॉम. हेतु दो ग्रुपों में मान्यता प्रदान की गई (अ) व्यवसाय प्रशासन तथा (ब) लेखा एवं विधि ग्रुप जो कि मान्यता आने के बाद से निरन्तर प्रगति के पथ पर है तथा परीक्षाफल भी लगभग शत-प्रतिशत है। महाविद्यालय के परास्नातक स्तर पर छात्र-छात्राओं को पाठ्यक्रम एवं व्यक्तित्व कौशल के लिए अतिरिक्त सहयोग भी विभिन्न प्रकार से प्रदान किया जाता है।

❑ महाविद्यालय प्रबन्धतन्त्र द्वारा सभी प्राध्यापकों के ज्ञानार्जन हेतु समय-समय पर होनी वाली विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाता है। उसी का परिणाम है कि सभी प्राध्यापकों द्वारा अनेकानेक सेमिनारों में सक्रिय रूप से भाग लेकर अपने शोध पत्रों को प्रस्तुत किया है।

❑ महाविद्यालय प्रबन्धतन्त्र द्वारा इस वर्ष डॉ. राजेश कुमार कुशवाहा एवं डॉ. योगेश कुमार गुप्ता जी को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में स्थित एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज, यू.जी.सी. द्वारा ओरियन्टेशन कोर्स कराया गया जिसमें दोनों को ही 'A' ग्रेड से नवाजा गया तथा प्रबन्धतन्त्र के प्रयासों से ही डॉ. जे. के. शर्मा जी को अगले तीन वर्षों के लिये सेबी (SEBI) के रिसोर्स पर्सन (Resource Person) के लिए नियुक्त किया गए है, जिनका कि नम्बर सेबी/आरपी./एन./यू.पी./ 47 पर अंकित है। गतवर्षों की भाँति इस वर्ष भी डॉ. वाई.के. गुप्ता जी को डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा 2012 के मूल्यांकन हेतु भेजा गया। यह सभी प्रबन्धतन्त्रों के ही प्रयासों का फल है जिससे कि प्राध्यापक नवीनतम जानकारी को प्राप्त करते रहते हैं।

❑ इस सत्र हेतु डॉ. हीरेश गोयल जी को अनुशासन सदस्य नामित किया गया, जिन्होंने इस कार्य को बहुत मेहनत से किया। इसी का परिणाम है कि महाविद्यालय में छात्र पूरी तरह से अनुशासन में रहते हैं। महाविद्यालय में इस वर्ष अतिथि व्याख्यान हेतु डॉ. समर रजा जी को प्रभार दिया गया जिसमें कि उनके द्वारा अतिथि व्याख्यान माला में डॉ. एस. के. वार्ष्णेय एसो. प्रो., अवन्तीबाई डिग्री कॉलेज, अतरौली तथा डॉ. मृत्युंजय सिंह एसो. प्रोफेसर राजकीय कॉलेज, खैर द्वारा कराया गया।

❑ इस वर्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा FDI विषय पर एक लेख लिखवाया गया है जो नन्दनी की आवाज में संयोजित हुआ, जिसमें महाविद्यालय के दो छात्रों राहुल एवं अन्नू कुमारी को भी राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार मिला। यह वास्तव में छात्रों की मेहनत का ही फल है, जिसके लिए वे छात्र बधाई के पात्र हैं।

❑ महाविद्यालय द्वारा वाणिज्य विभाग में समय-समय पर छात्र/छात्राओं को नवीनतम जानकारी प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रतिष्ठित महाविद्यालयों के सम्माननीय प्राध्यापकों द्वारा अतिथि व्याख्यान कराए जाते हैं। कालेज में छात्र/ छात्राओं की रुचि को देखते हुये कई प्रकार के इन्डोर व आउट डोर खेल में विद्यार्थियों का सक्रिय योगदान है तथा शैक्षिक भ्रमण, निबन्ध प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आदि सुविधाएं उनको प्रदान की जाती हैं। इसी के साथ छात्र/छात्राओं को नियमित रूप से वाणिज्य से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर समूह चर्चा एवं प्रस्तुतिकरण विभिन्न मॉडल एवं चार्टों द्वारा कराया जाता है। सभी छात्रों को महाविद्यालय द्वारा निःशुल्क कम्प्यूटर एप्लीकेशन की नियमित कक्षायें संचालित की जाती हैं ताकि वे इस बदलते कम्प्यूटर के युग में कम्प्यूटर की अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकें। महाविद्यालय की लाइब्रेरी में विभिन्न प्रकाशनों की पुस्तकें, जर्नल्स एवं न्यूज पेपरों के माध्यम से भी छात्र/छात्राओं को ज्ञानार्जन कराया जाता है ताकि उनका समग्र विकास हो सके व शिक्षा को श्रेष्ठतम रूप में प्राप्त कर सकें। वर्तमान में महाविद्यालय में वाणिज्य विभाग में 550 से अधिक छात्र/छात्रायें अध्ययनरत् हैं।

डा. योगेश कुमार गुप्ता प्रभारी

Scanned by CamScanner

विज्ञान संकाय

रसायन विज्ञान विभाग

❑ महाविद्यालय का रसायन विज्ञान विभाग डॉ. एस. एस. यादव, अध्यक्ष रसायन विज्ञान विभाग एवं प्रभारी, विज्ञान संकाय के कुशल निर्देशन में प्रगति के पथ पर निरंतर प्रयत्नशील हैं विभाग में साथी प्राध्यापकों डॉ. बी. डी. उपाध्याय, डॉ. सौरव शर्मा, डॉ. (कु.) कविता देवी के सहयोग से विभाग विकास की ओर अग्रसर है। रसायन विभाग में कुल छात्र संख्या लगभग 550 है, जो कि अब तक की सर्वाधिक संख्या है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि विभाग के प्राध्यापकों ने कड़ी मेहनत, कर्मठता, ईमानदारी व कार्य कुशलता से विभाग को आगे बढ़ाया है। डॉ. एस.एस. यादव व साथियों के लेख कई राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। सेमीनार, कार्यशाला व गोष्ठियों में भी विभाग के प्राध्यापकगण भाग लेते रहते हैं। रसायन विभाग की प्रयोगशालाएं भी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं। विभाग की प्राध्यापिका कु० कविता देवी ने इसी सत्र में पी. एच-डी. की उपाधि वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान से प्राप्त की है। विभाग का परीक्षा परिणाम गत सत्र में संतोषजनक रहा है। विभाग के प्राध्यापक डॉ. बी. डी. उपाध्याय महाविद्यालय की अनुशासन समिति के प्रभारी का कार्य बड़ी ईमानदारी एवं कुशलता से देख रहे हैं।

❑ सत्र 2012-13 में विज्ञान संकाय में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता कला, वाणिज्य व विज्ञान तीनों संकायों के लिए, दीपावली मेला, शैक्षिक भ्रमण, भारत की प्रगति में विज्ञान का महत्व विषय पर निबंध प्रतियोगिता, कमजोर छात्र/छात्राओं के लिये अतिरिक्त कक्षायें, प्रबुद्ध मनीषियों एवं शिक्षाविदों द्वारा अतिथि व्याख्यान, निःशुल्क कम्प्यूटर का ज्ञान आदि का आयोजन किया गया। डॉ. एस.एस. यादव व डॉ. बी.डी. उपाध्याय विश्वविद्यालय की केन्द्रीय मूल्यांकन प्रणाली में गत् दो सत्रों से महाविद्यालय की शोभा बढ़ा रहे है। इस सत्र में सरस्वती पुस्तकालय में नवीन कोर्स (पाठ्यक्रम) के आधार पर विभिन्न लेखकों की नयी किताबें छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयी है जिससे कि छात्र/छात्राओं को पठन-पाठन में असुविधा न हो। डॉ. एस.एस. यादव प्रभारी, विज्ञान संकाय के अलावा, प्रभारी पुरातन छात्र समिति, प्रभारी ज्ञान प्लेसमेण्ट सेल, परीक्षा प्रभारी का कार्य भी मेहनत, लगन, कार्यकुशलता व ईमानदारी से देख रहे हैं।

भौतिक विज्ञान विभाग

❑ महाविद्यालय का भौतिकी विभाग कु० मयूरी वार्ष्णेय व कु० धर्मेश यादव के कुशल निर्देशन में सुचारू रूप से कार्य कर रहा है। विभाग में इस वर्ष एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसके व्याख्याता डॉ. एस.के. वार्ष्णेय पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान विभाग, श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ रहे। विभाग में स्नातक स्तर तक की कक्षायें व प्रयोगशालायें विधिवत रूप से चल रही हैं। दोनों प्राध्यापिकाओं की योग्यता एवं मेहनत का परिणाम है कि वह शिक्षण के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे- ज्ञान महोत्सव, दीवाली मेला, डांडिया व ज्ञान दिवस पर हुये रंगारंग कार्यक्रमों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भौतिक विभाग में प्रयोगशाला में आधुनिक उपकरण नये पाठ्यक्रम के अनुसार उपलब्ध हैं। सरस्वती पुस्तकालय में इस वर्ष नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार किताबों को छात्र/छात्राओं के लिये उपलब्ध कराया गया है। भारत की प्रगति में विज्ञान का महत्व विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी विभाग द्वारा किया गया। ''नैनोटेक्नॉलोजी'' विषय पर एक निबंध भी छात्र/छात्राओं द्वारा तैयार कराकर एन. एस. डब्लू. सी. इलाहाबाद भेजा गया।

जन्तु विज्ञान विभाग

❑ महाविद्यालय का जन्तुविज्ञान विभाग डॉ. प्रमोद कुमार प्रभारी जन्तुविज्ञान के कुशल निर्देशन में लगातार छात्रों का विकास करने में प्रयत्नशील है। विभाग में अन्य साथी प्राध्यापिकायें श्रीमती शशिमाला के निर्देशन में इस वर्ष का शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम विद्युत परमाणु केन्द्र, नरौरा (बुलन्दशहर) भेजा गया एवं श्रीमती उषा सेंगर के नेतृत्व में कला, वाणिज्य व विज्ञान तीनों संकायों की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गतवर्ष का परीक्षा परिणाम विभाग का संतोषजनक रहा है। विषय से सम्बंधित किताबों का संग्रह भी नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार उपलब्ध कराया गया है। विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसके व्याख्याता मौ. आमिर एसो. प्रोफेसर, जन्तुविज्ञान विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ रहे। व्याख्यान का विषय **'मोडर्न जेनेटिक्स एज ए टूल फॉर ह्यूमन वेलफेयर'** था।

वनस्पति विज्ञान विभाग

❑ महाविद्यालय का वनस्पति विज्ञान विभाग डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ विभागाध्यक्षा व श्री राजेश कुमार के कुशल निर्देशन में कार्य कर रहा है। स्नातक स्तर पर छात्र/छात्राओं के लिये अध्ययन, अध्यापन की सुविधा है। शासन द्वारा बी. एस-सी. की तीनों कक्षाओं में 180 विद्यार्थी अनुमन्य हैं। सत्र 2011-12 में विभाग का परीक्षाफल सन्तोषजनक रहा है।

Scanned by CamScanner

इस वर्ष विभाग द्वारा पौधों में कोशिका विभाजन विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता डा. प्रबोध श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, डी.एस. कालिज, अलीगढ़ थे। विभाग में सुसज्जित प्रयोगशाला है, जिसमें नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार उपकरण भी है। शिक्षा एवं शिक्षण को उत्कृष्ट बनाए रखने हेतु विभाग द्वारा छात्र/छात्राओं से प्रोजेक्ट वर्क व छात्र प्रस्तुति आदि का कार्य कराया गया। डॉ. कुलश्रेष्ठ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी के साथ-साथ राष्ट्रीय सेवा योजना प्रभारी का कार्य भी देख रही हैं। गत् दो सत्रों से विश्वविद्यालय की मूल्यांकन प्रक्रिया में डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ महाविद्यालय की शोभा बढ़ा रही हैं। निर्वाचन आयोग भारत सरकार द्वारा मतदाता सूची तैयार करायी गयी, जिसमें डॉ. कुलश्रेष्ठ ने महाविद्यालय की ओर से संयोजक के रूप में कार्य किया।

गणित विभाग

❑ महाविद्यालय का गणित विभाग डॉ. वाई. डी. गौतम के निर्देशन में विधिवत रूप से निरन्तर कार्यरत है। साथी प्राध्यापक श्री अमित कुमार वार्ष्णेय अपनी महत्वपूर्ण सेवायें विभाग को दे रहे हैं। गतवर्ष का परिणाम भी संतोषजनक रहा है। विभाग में इस वर्ष अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता डॉ. शुभनेश कुमार गोयल, एसोसिएट प्रोफेसर, डी.एस. कालेज, अलीगढ़ थे। डॉ. वाई.डी. गौतम खेलकूद समिति में विज्ञान विभाग की तरफ से कुशलता से खेलकूद का कार्य देख रहे हैं। श्री अमित कुमार ने शासन द्वारा तैयार करायी गई मतदाता सूची में विज्ञान संकाय की तरफ से बड़ी मेहनत व लग्न से कार्य किया है। ❖

डॉ. एस. एस. यादव प्रभारी

कला संकाय

❑ उत्तर प्रदेश सरकार व डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा सत्र, 2010-11 में ज्ञान महाविद्यालय को सात विषय- हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, भूगोल व शिक्षाशास्त्र के साथ मान्यता प्रदान की गयी।

❑ कला संकाय निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। सभी प्राध्यापकों के बहुआयामी दूरदर्शी व्यक्तित्व एवं अद्वितीय क्षमता के कारण छात्र/छात्राओं को अपने विषयों में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। गत दो वर्षों का परीक्षा परिणाम अत्यन्त संतोषजनक रहा है।

❑ संकाय में मनोविज्ञान एवं भूगोल की सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं संकाय द्वारा विभिन्न विषयों में समय-समय पर छात्र-छात्राओं को नवीनतम जानकारी प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रतिष्ठित महाविद्यालयों के सम्माननीय प्राध्यापकों से अतिथि व्याख्यान कराये जाते हैं। इसी श्रृंखला में प्रथम व्याख्यान 6 नवम्बर, 2012 को हिन्दी विषय में आयोजित किया गया, जिसके मुख्यवक्ता डॉ. प्रभाकर शर्मा प्रभारी हिन्दी विभाग, डी. एस. कॉलेज, अलीगढ़ थे। द्वितीय व्याख्यान 22 दिस., 2012 को समाजशास्त्र विषय में हुआ। जिसके मुख्यवक्ता डॉ. मुकेशचन्द्र, एसो. प्रोफेसर, श्री वार्ष्णेय कॉलेज अलीगढ़ थे। तृतीय व्याख्यान 11 जनवरी, 2013 को अर्थशास्त्र विषय में आयोजित किया गया, जिसकी मुख्य वक्ता डॉ. श्रीमती इन्दु वार्ष्णेय, एसो. प्रोफेसर, डी. एस. कालिज, अलीगढ़ थीं। चतुर्थ व्याख्यान 17 जनवरी, 2013 को अंग्रेजी विषय में आयोजित किया गया, जिसकी मुख्य वक्ता डॉ. नीता कुलश्रेष्ठ, एसो. प्रोफेसर, श्री वार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ़ थीं। पंचम व्याख्यान 21 जनवरी, 2013 को मनोविज्ञान विषय में आयोजित किया गया जिसकी मुख्य वक्ता डॉ. चन्द्रकान्ता अग्रवाल प्रभारी मनोविज्ञान विभाग, टी. आर. कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़ थीं।

❑ संकाय में प्रत्येक प्राध्यापक एक आदर्श मेण्टर की भूमिका निभा रहे हैं। प्रत्येक प्राध्यापक के पास 30-30 छात्र-छात्राओं का समूह है, जिसमें प्राध्यापक छात्र-छात्राओं से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं आदि के बारे में जानने का प्रयास कर उनके निवारण करने का प्रयत्न करते हैं।

❑ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संकाय की सहभागिता के अन्तर्गत दीप कला महोत्सव आयोजित किया गया जिसमें दीप थाल सज्जा, मेहंदी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता आयोजित की गई तथा अन्य कार्यक्रमों में महात्मा गांधी चित्र प्रदर्शनी, निबन्ध प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए।

❑ बी.ए. की क्रिकेट टीम श्री एल.सी. गौड़ क्रिकेट टूर्नामेंट में उपविजेता रही। संकाय के जयकुमार ने शतरंज प्रतियोगिता में कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

❑ मैं अपने विभाग के सभी प्राध्यापकों, डॉ. नीतू सैनी, डॉ. ललित उपाध्याय, कवि एवं लेखक डॉ. आर.के. पाराशर, डॉ. सोमवीर सिंह, डॉ. ममता शर्मा, डॉ. रश्मि सक्सैना, डॉ. अल्का महेश्वरी, डॉ. आनन्द कुमार, डॉ. बीनू शर्मा का आभारी हूँ, जिनके सहयोग से कला संकाय निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है, साथ ही डॉ. रोहिताश कुमार पाराशर विश्वविद्यालय केन्द्रीय मूल्यांकन में सन् 2007 से लगातार अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। ❖

डॉ. विवेक मिश्रा प्रभारी-कला संकाय

Scanned by CamScanner

प्रबन्धन संकाय

❑ मुझे यह बताते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि प्रबन्धन संकाय में बी.बी.ए. की कक्षायें निरन्तर प्रगति के पथ पर चलते हुये तीसरे वर्ष में प्रवेश कर गयी हैं। गत वर्षों में विद्यार्थियों ने निरन्तर प्रगति की है। विद्यार्थियों ने समय-समय पर महाविद्यालय द्वारा आयोजित प्रबन्ध कौशल व सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुये विभिन्न प्रकार की सफलतायें प्राप्त की हैं। इसके लिये प्राध्यापक भी उनको प्रोत्साहित करते रहते हैं।

❑ विद्यार्थियों के लिए Group Discussion के माध्यम से विभिन्न विषयों पर चर्चायें करायी जाती हैं। प्रबन्धन के विभिन्न आयामों के बारे में उन्हें जानकारियाँ दी जाती है। जैसे- Time Management पर विशेष जोर दिया जाता है कि वे किस प्रकार समय का सदुपयोग करके अपनी Life को कैसे व्यवस्थित कर सकते हैं। छात्र-छात्राओं को समय-समय पर यह भी बताया जाता है कि वे अपने Career को कैसे आकार दे सकते हैं। इसके लिये उन्हें अपने Resume कैसे Attractive (आकर्षक) बनाना चाहिये, किस प्रकार से Interview का सामना किया जाता है, कैसे Personality को Develope कर सकते हैं? ऐसे ही विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देने के लिये अनेकों महाविद्यालयों से प्राध्यापकों को आमंत्रित किया जाता है, जिससे छात्र/छात्राओं को नवीनतम जानकारियाँ मिल सकें।

❑ इसके साथ-साथ विद्यार्थियों के स्वास्थ्य के लिये भी विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाता है जिसके अन्तर्गत इस वर्ष प्रथम डॉ. एल. सी. गौड़ स्मृति क्रिकेट टूर्नामेंट कराया गया, जिसमें प्रबन्ध संकाय की संयुक्त टीम ने अन्य संकायों की टीमों को परास्त करते हुये, इस टूर्नामेंट की प्रथम विजेता टीम के रूप में 'शील्ड' पर अपना अधिकार प्राप्त किया।

❑ इन सब विषयों पर अपना योगदान देने के लिये मैं अपने विभाग के श्री निशान्त अग्रवाल व श्री चन्द्रभान पाल सिंह को धन्यवाद देता हूँ तथा अपने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

आर. के. मिश्रा विभागाध्यक्ष

B.C.A. DEPT.

❑ In the dimension of computer education Gyan Mahavidyalaya started B.C.A. Department in 2010 which is affiliated to Dr. B.R. Amebedkar University, Agra & Approved by AICTE. Now B.C.A. Department is growing at rapid rate continuously day by day. B.C.A. Department also provides a training programme to spread computer literacy in other department students.

❑ B.C.A. Department is dedicated to provide a quality education by including a latest technology day by day as the requirement of corporate sector by which students can build up themselves as the demand of IT Industry in this cut throat competition.

❑ B.C.A. Department also organizes a special training program to improve the soft skill (Communication skill, Presentation skill, Personality Development & Time Management etc.) of the students to fulfill the requirement of the industry.

❑ A special guidance is provided to final year students about 'How to make Resume ? How to crack the interview by some mock activity.' Department invites to some industrial guru as a guest lecturer to share our experience and to aware the latest trend in industry which is beneficial to the students to get success in our career as time to time.

❑ Department involves to the students in sport activity to maintain physical balance. In this chapter we organized a cricket tournament in the memory of Dr. L. C. Gaur in which B.C.A./B.B.A. Joint team won the trophy.

Mr. Lalit Kumar Varshney H. O. D.

शिक्षक-शिक्षा संकाय

❑ शिक्षा सभ्य समाज की जननी है, शिक्षा ही विकास की प्रथम सीढ़ी है, शिक्षा के बिना सभ्य समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। विभिन्न शिक्षाविदों का कहना भी है और यह वास्तविकता भी है कि बच्चे का सर्वांगीण विकास शिक्षा से ही संभव है। शिक्षा ही हमें मानव बनाती है। इस सन्दर्भ में सभी धर्म॰ वेद एवं पुराणों का वास्तविक लक्ष्य है "मानव बनाना"।

Scanned by CamScanner

❑ इस सन्दर्भ में ज्ञान महाविद्यालय, ज्ञान की एक ऐसी शिक्षण संस्था है जिसमें अनुशासन एवं मूल्य परक शिक्षा की चमक छात्रों में देखने को मिलती है और इस प्रकार की शिक्षा को निरंतर आगे बढ़ाने में सफल है।

❑ महाविद्यालय के शिक्षक-संकाय को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (National Assessment & Accreditation Council) (NAAC) की तीन सदस्यीय टीम ने महाविद्यालय में आकर 9 मई व 10 मई 2012 को महाविद्यालय के शिक्षक-शिक्षा विभाग का परीक्षण किया। निरीक्षण दल में गोवा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी. एस. जकारिया, पश्चिमी बंगाल के प्रो. पी. देवनाथ और केरल के डॉ. के. विजय कृष्ण पिल्लई थे। टीम ने शिक्षक-शिक्षा विभाग का निरीक्षण बड़ी बारीकियों के साथ कर अपनी रिपोर्ट परिषद् के बंगलौर स्थित कार्यालय को भेजी। 05 जुलाई 2012 को परिषद ने ज्ञान महाविद्यालय के शिक्षक-शिक्षा विभाग को नैक 'A' ग्रेड देने की विधिवत घोषणा की, जिसमें विभाग को 3.16 सी.जी.पी. (क्यूमलेटिव ग्रेड पॉइन्ट एवरेज) दिया गया।

❑ नैक से 'A' ग्रेड का गौरव प्राप्त करने में ज्ञान महाविद्यालय का यह विभाग अलीगढ़ मंडल तथा डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में सर्वोच्च अंक 3.16 सी.जी.पी. से प्राप्त करने वाला पहला महाविद्यालय है।

❑ महाविद्यालय में बी. एड. की पढ़ाई का श्री गणेश सत्र (2004-05) में हुआ जिसकी सम्बद्धता डॉ. भीमराव अम्बेडकर वि.वि., आगरा से एवं मान्यता एन.सी.टी.ई. जयपुर से एक यूनिट (100 छात्र) के रूप में पूर्व प्राचार्य स्व. डॉ. एल.सी. गौड़ के कुशल नेतृत्व व सचिव श्री दीपक गोयल जी के अथक प्रयासों से प्राप्त हुई। विशिष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करने में योग्य एवं कुशल शिक्षकों तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का भी अमूल्य योगदान रहा है।

❑ बी.एड. सत्र 2008-09 से शिक्षक -शिक्षा विभाग में दो यूनिट (200 छात्र) के रूप में विश्वविद्यालय एवं एन.सी. टी.ई. ने मान्यता प्रदान की है और अब तक लगातार शिक्षण-प्रशिक्षण चार सदनों महात्मा गांधी हाउस, विवेकानन्द हाउस, रवीन्द्रनाथ टैगौर हाउस एवं राधाकृष्णन हाउस में छात्र-छात्राएं प्रशिक्षण ले रहे हैं। प्रशिक्षण के साथ-साथ अन्य पाठ्य सहगामी क्रियाओं का निम्नांकित प्रकार से आयोजन किया जाता है :

अ. सांस्कृतिक कार्यक्रम– इसके माध्यम से छात्रों की प्रतिभा का आँकलन किया जाता है जिसके अन्तर्गत- नृत्य कला, संगीत कला, गायन कला, रंगोली, मेहंदी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

ब. साहित्यिक कार्यक्रम – भाषण, निबंध प्रतियोगिता, काव्य गोष्ठी एवं अन्य सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिभाओं का विकास किया जाता है।

स. खेलकूद कार्यक्रम – इंडोर एवं आउटडोर खेलों के माध्यम से छात्रों की शारीरिक क्षमता एवं कुशलताओं को प्रोत्साहित किया जाता है, इसके अतिरिक्त छात्रों को विशेष विषय- सूक्ष्म शिक्षण, वृहद शिक्षण, क्रियात्मक अनुसंधान एवं पाठ्यक्रम में सम्मिलित मुख्य प्रश्नपत्रों पर अतिथि व्याख्यान कराये जाते हैं। समय-समय पर शिक्षाविदों, दार्शनिकों एवं अन्य महापुरुषों की जयन्तियों पर खेल-कूद, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

❑ शिक्षक-शिक्षा विभाग के जो छात्र व छात्राएं कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और अच्छा प्रदर्शन कर विशेष स्थान प्राप्त करते हैं, उन्हें संस्थापक दिवस एवं कॉलिज के वार्षिक दिवस पर पुरस्कृत किया जाता है।

❑ छात्रों का समय-समय पर विश्वविद्यालयी जैसी परीक्षाओं के आधार पर आन्तरिक मूल्यांकन किया जाता है। सभी विद्यार्थी समय सारणी के अनुसार विभिन्न संसाधन केन्द्रों, लैंग्वेज लैब, आर्ट एण्ड क्राफ्ट संसाधन केन्द्र, मनोवैज्ञानिक परीक्षण संसाधन केन्द्र आई.सी.टी. संसाधन केन्द्र एवं विज्ञान प्रयोगशाला में अपने मानसिक कौशलों का विकास करते हैं। शिक्षक-शिक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए सुसज्जित एवं कम्प्यूटराइज्ड पुस्तकालय की व्यवस्था है। सभी छात्र-छात्राओं को 20-20 के समूह में दस विश्वसनीय सलाहकारों (प्राध्यापकों) के निर्देशन में उनकी समस्याओं का समाधान किया जाता है। विशेषता यह है कि बी.एड. के विद्यार्थियों का विश्वविद्यालयी परीक्षाओं (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक) में शत्-प्रतिशत् परिणाम रहता है, जिसमें सत्र 2011-12 के परिणाम से स्पष्ट है कि 200 विद्यार्थियों में से 188 छात्र-छात्राएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं।

❑ उपरोक्त के सन्दर्भ में मैं कहना चाहूँगा कि यह निरंतर प्रगति, कुशल प्रबंधतंत्र, योग्य एवं अनुभवी प्राध्यापकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का ही अथक प्रयास है।

नयी आशा की किरण एवं वास्तविक सत्यता– ''नैक मूल्यांकन'' में 'A' ग्रेड, अम्बेडकर विश्वविद्यालय में सर्वोच्च अंक 3.16 सी.जी.पी. शिक्षक-शिक्षा विभाग प्राप्त कर चुका है। बी.एड. की 100 अतिरिक्त सीट मिलने का प्रयास एवं शिक्षक-शिक्षा में पी.जी. स्तर (एम. एड.) की मान्यता के लिए प्रयासरत विभाग है और गुणात्मक शिक्षा के लिए 'ज्ञान परिवार' वचनबद्ध है। ❖

डॉ. खजान सिंह विभागाध्यक्ष

Scanned by CamScanner

शिक्षा संकाय (बी.टी.सी.)

मेरे लिए बड़े ही सौभाग्य का विषय है कि पूरे अलीगढ़ मण्डल के निजी संस्थानों में केवल ज्ञान महाविद्यालय को ही 24 जनवरी, 2010 से बी.टी.सी. पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने की मान्यता प्राप्त हुई और बीटीसी की द्वितीय वार्षिक रिपोर्ट लिखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस सत्र की बी.टी.सी. विभाग में निम्नांकित गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं :

❑ 5 जून 2012 को बी.टी.सी. प्रशिक्षुओं द्वारा प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मडराक (अलीगढ़) के सानिध्य में पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित जागरूकता रैली में प्रतिभाग किया गया, 'रैली' का शुभारम्भ प्राचार्या डॉ. अंजना गोयल ने किया, रैली डायट से शुरू होकर मडराक गाँव की मुख्य गलियों में घूमी। रैली में प्रशिक्षुओं द्वारा पर्यावरण से सम्बन्धित नारे लगाये गये और रैली समापन के समय 10-10 पौधे लगाने की शपथ दिलाई गयी।

❑ 7 अगस्त 2012 को बी.टी.सी. प्रशिक्षुओं द्वारा गाँव बढ़ौली फतेह खाँ के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में ज्ञान महाविद्यालय द्वारा शुरू की गई **'स्वराज्य स्वावलम्बी योजना'** में पूर्ण सहयोग दिया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शहर विधायक मा. जफर आलम और महाविद्यालय के सचिव श्री दीपक गोयल ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर गरीब लड़कियों की शादी के लिए ग्राम प्रधान श्री कर्मेन्द्र लोधी को सिलाई मशीन उपलब्ध कराई व इस गांव की बारहवीं पास हर लड़की को ज्ञान महाविद्यालय में नि:शुल्क प्रवेश दिया गया। इस अवसर पर शहर विधायक एवं महाविद्यालय के सचिव महोदय द्वारा विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

❑ 8 व 9 अगस्त, 2012 को महाविद्यालय के ज्ञान भवन के सभागार में "क्रियात्मक अनुसंधान" विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अलीगढ़ के डॉ. जगवीर सिंह तथा डॉ. अजय कुमार गुप्ता ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया और क्रियात्मक अनुसंधान के लिए "समस्या आपकी समाधान हमारा" का मूल मन्त्र दिया दो दिवसीय कार्यशाला में विभाग के समस्त प्रवक्ताओं का पूर्ण सहयोग रहा।

❑ 5 सितम्बर, 2012 से संस्थापक महोदय की पावन स्मृति में ज्ञान महाविद्यालय में पांच दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें विभाग के सभी प्रशिक्षुओं ने उत्कृष्ट प्रस्तुतियां दीं।

❑ 9 नवम्बर, 2012 को ज्ञान महाविद्यालय में 'दीपावली मेला' का आयोजन किया था जिसमें बी.टी.सी. प्रशिक्षुओं द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया गया जिसमें लगभग 250 व्यक्तियों की नि: शुल्क स्वास्थ्य सम्बन्धी जाँच की गयी, जिसमें शुगर की जाँच की गयी तथा नि:शुल्क दवाइयाँ व सीरप वितरित किए गए, एवं लम्बाई के हिसाब से वजन बनाये रखने के उपाय बताये गये। इसमें महाविद्यालय के सचिव श्री दीपक गोयल, प्राचार्य डा. जी. के. गुप्ता, निदेशक डा. गोविन्द वार्ष्णेय, उप प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता, बी.टी.सी विभागाध्यक्ष श्रीमती बबिता यादव, श्रीमती शोभा सारस्वत, कु. रेशू अरोरा, श्री सचिन प्रताप सिंह, श्री पुष्पेन्द्र सिंह मुख्य रूप से उपस्थित थे।

शोभा सारस्वत प्रवक्ता, बी.टी.सी. विभाग

पुस्तकालय

महाविद्यालय में पुस्तकों की संख्या विश्वविद्यालय एवं शासन के नियमों एवं मानकों का पालन करती है। प्रत्येक विभाग में वरिष्ठ एवं अनुभवी प्रवक्ताओं द्वारा ख्याति प्राप्त लेखकों के अद्यतन संस्करणों को प्रत्येक वर्ष सूची तैयार कर उसके अनुरूप पुस्तकें क्रय करना प्रबन्ध तन्त्र की विशेषता है। सन् 1998 में लघु रूप में महाविद्यालय में पुस्तकालय की स्थापना हुई थी। लेकिन वर्तमान समय में महाविद्यालय के तीन भवनों में अलग-अलग पुस्तकालय सुशोभित हैं। इन पुस्तकालयों के नाम अलग-अलग हैं। तीनों पुस्तकालय आधुनिक फर्नीचर से सुसज्जित एवं Computerized हैं।

1. **माँ सरस्वती पुस्तकालय :** इस पुस्तकालय में बी.कॉम., एम.कॉम., बी.एस-सी., बी.बी.ए., बी.सी.ए. तथा बी.ए. विषयों के नवीन संस्करण नये पाठ्यक्रम एवं वरिष्ठ लेखकों की पुस्तकें शिक्षक एवं विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी जाती है। पुस्तकें Computer से ही Issue & Return की जाती हैं। इस पुस्तकालय में हिन्दी तथा अंग्रेजी में Text Books, Reference Books, Dictionary, Encyclopedia, Year Book, Journals, Periodicals & Daily News Papers

Scanned by CamScanner

आदि। छात्र-छात्राओं को ये पुस्तकें मासिक या वार्षिक सदस्यता के द्वारा क्रय करके पाठकों की रुचि के अनुसार उपलब्ध करायी जाती हैं।

2. **डॉ. ज्ञान पुस्तकालय :** इस पुस्तकालय में बी.एड. एवं बी.टी.सी. की पुस्तकें उपलब्ध करायी जाती हैं। Text Books के अलावा यहाँ Reference Books, Religious Books, Journals / Magazines आदि पढ़ने के लिये मिलती हैं, इस पुस्तकालय में महाविद्यालय के संस्थापक डॉ. ज्ञानेन्द्र गोयल द्वारा लिखी गई पुस्तकें भी हैं, जिनका डॉ. ज्ञानेन्द्र संग्रह के नाम से अलग संग्रह है। इसके अलावा यहाँ E-Resource Section है जिसके साथ इंटरनेट सुविधा भी विद्यार्थियों के लिये है, विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए विभिन्न विषयों की पुस्तकों के साथ उनकी CD/DVD भी उपलब्ध करायी जाती है। इस पुस्तक में विद्यार्थियों के बैठने के लिये तीन तरह की सीटें उपलब्ध हैं। महाविद्यालय के यू.जी.सी. की राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद की टीम ने सर्वे करके महाविद्यालय को 'ए' ग्रेड का प्रमाण पत्र प्रदान किया जिसमें पुस्तकालय को सर्वाधिक अंक दिये गये। ❖

डी. के. रावत पुस्तकालय प्रभारी

खेल विभाग

बड़े ही हर्ष का विषय है कि ज्ञान महाविद्यालय में छः दिवसीय खेल महोत्सव का आयोजन किया गया। खेल व्यक्ति की जन्मजात प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति बालकों, युवकों और वृद्धों तक में पाई जाती है। जो बच्चे अपनी बाल्यावस्था में खेलों में भाग नहीं लेते हैं, वे बहुत सी बातें सीखने से वंचित रह जाते हैं और उनके व्यक्तित्व का भली-भाँति विकास नहीं हो पाता है। शरीर को शक्तिशाली, स्फूर्तियुक्त और ओजस्वी तथा मन को प्रसन्न बनाने के लिए जो कार्य किये जाते हैं, उन्हें हम खेलकूद, क्रीड़ा या व्यायाम कहते हैं। खेल कूद और व्यायाम से शरीर में तीव्रगति से रक्त संचार होता है। अतः दौड़, क्रिकेट, फुटबॉल, टेनिस, बैडमिण्टन, हॉकी आदि इसी दृष्टि से खेले जाते हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय में खेल महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें सभी विभागों के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

खेल महोत्सव का उद्घाटन एम.एल.सी. श्री विवेक बंसल के कर कमलों द्वारा फीता काटकर किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के यशस्वी सचिव श्री दीपक गोयल, निदेशक डा. गोविन्द वार्ष्णेय, प्राचार्य डॉ. जी. के. गुप्ता, उप प्राचार्य डा. वाई. के. गुप्ता तथा महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक/प्राध्यापिकायें एवं सभी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी उपस्थित थे।

खेलकूद प्रभारी प्रो. सचिन प्रताप सिंह के नेतृत्व में 15 सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया जो इस प्रकार है-

1. प्रो. शिवानी सारस्वत	2. प्रो. पूनम माहेश्वरी
3. प्रो. नीरेश कुमार	4. प्रो. शोभा सारस्वत
5. प्रो. पुष्पेन्द्र सिंह	6. डॉ. सौरभ शर्मा
7. डॉ. वाई.डी. गौतम	8. डॉ. कविता
9. डॉ. हरीश गोयल	10. डॉ. रश्मि सक्सैना
11. डॉ. आर.के. मिश्रा	12. प्रो. धर्मपाल सिंह
13. डॉ. ललित उपाध्याय	14. डॉ. सोमबीर सिंह
15. प्रो. रेणु अरोरा	

हमारी 15 सदस्यीय कमेटी के सभी सदस्यों ने पूरी लगन, मेहनत एवं श्रृद्धापूर्वक खेल महोत्सव में सहयोग प्रदान किया। साथ ही ग्राउण्ड स्टॉफ में श्री शिवकुमार, श्री अनिल कुमार शर्मा ने महत्वपूर्ण सहयोग किया। साथ ही साथ सबसे महत्वपूर्ण योगदान महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. ललित उपाध्याय का रहा। आपने मीडिया प्रभारी के दायित्व का निर्वहन बड़ी कुशलता पूर्वक किया।

सभी प्रतियोगिताओं में लगभग 300 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इनमें से कमेटी सदस्यों के अथक प्रयास से प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार घोषित किए गए। जोकि इस प्रकार हैं -

1. **रस्साकसी प्रतियोगिता** के पुरुष वर्ग में बी.एड. की 15 सदस्यीय टीम विजयी रही। साथ ही महिला वर्ग में भी बी.एड. की 15 सदस्यीय टीम ने विजय प्राप्त की।
2. **कबड्डी प्रतियोगिता** में बी. कॉम. विभाग की 9 सदस्यीय टीम विजयी रही।
3. **गोला फेंक प्रतियोगिता** में बी. कॉम. के धीरज कौशिक ने प्रथम स्थान, बी. ए. के जितेन्द्र कुमार ने द्वितीय स्थान एवं बी.एड. के हरीश शर्मा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
4. **चक्का फेंक प्रतियोगिता** में बी.कॉम. के आतिफ

Scanned by CamScanner

सिराज ने प्रथम स्थान और बी.एड. के नरेन्द्र कुमार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

5. **भाला फेंक प्रतियोगिता** के पुरूष वर्ग के बी.कॉम. के रोहित कुमार गुप्ता ने प्रथम स्थान, बी.ए. के बन्टी सिंह ने द्वितीय स्थान तथा बी.एड. के धर्मेन्द्र कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। साथ ही महिला वर्ग में बी. एड. की नीलम शर्मा ने प्रथम स्थान, बी.एस-सी. की दीपिका ने द्वितीय स्थान व बी.एड. की रिंकी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

6. **बैडमिण्टन डबल्स** के महिला वर्ग में बी.एड. की मेधा व गीता ने प्रथम स्थान एवं बी.कॉम की रेणू व सुरभि ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

7. इण्डोर गेम के अंतर्गत **कैरम प्रतियोगिता** के पुरूष वर्ग में बी.एस–सी. के रजत सारस्वत विजेता रहे, साथ ही महिला वर्ग में बी.एड. की रंजना सिंह विजेता रहीं।

8. **चैस प्रतियोगिता** के पुरूष वर्ग में बी.ए. के जय कुमार ने प्रथम व बी.एस-सी. के रजत कुमार वार्ष्णेय ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में बी.एड. की करवन सिंह ने प्रथम व बी.एड. की अंजली ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

9. **टेबिल टेनिस प्रतियोगिता** के पुरुष वर्ग में बी.कॉम के नीरज कुमार प्रथम व बी.एड. के पुनीत कुमार द्वितीय स्थान पर रहे। साथ ही महिला वर्ग में बी.कॉम. की राधा रानी गुप्ता प्रथम व बी.कॉम. की ही रेणू गुप्ता द्वितीय स्थान पर रहीं।

10. **खो–खो प्रतियोगिता** के पुरूष वर्ग में बी.कॉम. की 12 सदस्यीय टीम विजेता रहीं और महिला वर्ग में बी.एड. की 12 सदस्यीय टीम विजेता रही।

इस प्रकार छः दिवसीय खेल महोत्सव में विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें सभी प्रतिभागियों ने बड़े ही प्रेम व सौहार्द के साथ प्रतिभाग किया, तथा महाविद्यालय के सभी प्राध्यापक/ प्राध्यापिकाओं एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों ने सहयोग प्रदान किया।

खेल महोत्सव की श्रृंखला के अंतर्गत महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास में स्व. डॉ. एल. सी. गौड़ के योगदान को देखते हुए उनकी स्मृति में महाविद्यालय में डॉ. एल.सी. गौड़ मैमोरियल क्रिकेट टूर्नामिन्ट का आयोजन किया गया, जिसमें बी.बी.ए. एवं बी.सी.ए. की संयुक्त टीम विजेता रही। साथ ही यह घोषणा की गई कि डॉ. एल.सी. गौड़ की स्मृति में यह क्रिकेट टूर्नामिन्ट प्रतिवर्ष आयोजित किया जायेगा।

श्री सचिन प्रताप सिंह क्रीड़ाधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

राष्ट्रीय सेवा योजना एक ऐसी योजना है, जिसका प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र की सेवा करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रारम्भ सन् 1969-70 में इस उद्देश्य से किया गया कि इससे छात्र-छात्राओं में सामाजिक चेतना व दायित्व-बोध के साथ- साथ अनुशासन की भावना का भी विकास होगा तथा उनमें देश एवं समाज सेवा की भावना भी विकसित हो। राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रमुख रूप से पर्यावरण की उन्नति एवं संरक्षण, स्वास्थ्य परिवार कल्याण एवं पोषण कार्यक्रम, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, प्राकृतिक आपदाओं एवं राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान स्थानीय प्राधिकरणों को राहत पहुँचाना इत्यादि शामिल हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना की प्रमुख विशेषता यह है कि इसका आयोजन स्वयं छात्र-छात्राओं द्वारा किया जाता है तथा छात्र और अध्यापक दोनों ही समाज सेवा में अपनी सहभागिता से राष्ट्रीय सेवा योजना सम्बन्धी अनुभव छात्र को किसी भी संस्था में नौकरी प्राप्त करने व उच्च शिक्षा प्रवेश में भी सहायक हो सकता है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय सेवा योजना का विस्तार देश के सभी राज्यों में एवं सभी विश्वविद्यालयों में हो चुका है तथा राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े हुये प्रत्येक छात्र एवं अध्यापक अग्रलिखित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु दृढ़ संकल्पित हैं :

- समाज की आवश्यकताओं का ज्ञान प्राप्त करना, समाज की कठिनाईयों को समझना एवं उनका समाधान करने का प्रयास करना।
- समूह में रहने के लिये एवं समाज सेवा करने के लिए आवश्यक गुणों एवं क्षमता को विकसित करना।
- स्वयं में सामाजिक एवं नागरिक दायित्व बोध की भावना का विकास करना।
- स्वयं की शिक्षा का उपयोग व्यक्ति तथा सामाजिक कठिनाईयों का व्यवहारिक हल ढूँढने के लिये करना।
- आपातकाल एवं प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने की शक्ति का विकास करना।
- राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बनाये रखना।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम व गतिविधियाँ

राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत दो प्रकार के कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है –

प्रथम राष्ट्रीय सेवा योजना के नियमित कार्यक्रम (एक दिवसीय शिविर) और द्वितीय विशेष शिविर

Scanned by CamScanner

कार्यक्रम (साप्ताहिक शिविर) : राष्ट्रीय सेवा योजना के नियमित कार्यक्रम एवं विशेष शिविर कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्र/छात्राएं ग्राम, कालेज प्रांगण एवं शहर की मलिन बस्तियों में जाकर स्वयंसेवक के रूप में कार्य करते हैं। स्वयं सेवकों द्वारा किये जाने वाले कार्यों में सफाई कार्य, परिसर में सुधार, खेल के मैदानों का निर्माण, तरण तालों का निर्माण, ग्रामीण सड़कों का निर्माण, निरक्षरता उन्मूलन, प्रौढ़ शिक्षा छोटे स्तर के सिंचाई कार्य, कृषि सम्बन्धी कार्य, स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य, बचत हेतु प्रेरणा, जनसंख्या उन्मूलन, प्राथमिक उपचार केन्द्रों की स्थापना तथा पर्यावरण सन्तुलन सम्बन्धी कार्य समाहित होते हैं। यह कार्यक्रम सामाजिक विकास एवं राष्ट्र निर्माण के लिए अपनी शक्ति लगाने का अवसर प्रदान करते हैं। विशेष शिविरों में छात्र-छात्राओं को एक साथ रहने और मिलकर कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे उनमें राष्ट्रीय चेतना तथा सामाजिक दायित्व की भावना का विकास होता है। इसके अतिरिक्त छात्रों में सच्चरित्रता, साहस, मैत्री व समूह भावना, निर्णयन क्षमता एवं नेतृत्व जैसे गुणों का भी विकास होता है।

भारत सरकार का मानव संसाधन विकास मंत्रालय राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न नीतियों का निर्धारण करता है तथा उनके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करता है। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के अन्तर्गत की जाने वाली गतिविधियों को निम्नांकित सात भागों में विभक्त किया जा सकता है :

1. **स्वास्थ्य, परिवार कल्याण एवं पोषण कार्यक्रम :**
   - ✦ स्वास्थ्य-शिक्षा और स्वास्थ्य की प्रारम्भिक देखभाल का कार्य व जानकारी होना।
   - ✦ जनता को शिक्षित करना व परिवार कल्याण सम्बन्धी कार्यक्रम बनाना।
   - ✦ पीने के सुरक्षित एवं साफ पानी की आपूर्ति की व्यवस्था करना।
   - ✦ जन प्रतिरक्षा कार्यक्रम के तहत स्वयंसेवकों द्वारा स्वेच्छा से रक्तदान और संभावित रक्तदान करने वालों के 'रक्त समूहों' की सूची तैयार करना।
   - ✦ संघटित बाल-विकास कार्यक्रम बनाना।
   - ✦ समाज के साथ मिलकर पोषण कार्यक्रमों हेतु कार्य करना एवं चेतना जागृत करना।

2. **समाज सेवा कार्यक्रम :**
   - ✦ अस्पतालों में जाकर रोगियों की सेवा करना।
   - ✦ शारीरिक रूप से विकलांग व मानसिक रूप से कमजोर व्यक्तियों के लिये चलाई जाने वाली संस्थाओं में कार्य करना।
   - ✦ शिशु कल्याण संगठनों के साथ मिलकर कार्य करना।
   - ✦ महिलाओं के कल्याण संगठनों में कार्य करना।
   - ✦ अनाथालयों में कार्य करना।

3. **पर्यावरण समृद्धि व संरक्षण कार्यक्रम :**
   - ✦ वृक्षारोपण, उनका बचाव व अनुरक्षण करना।
   - ✦ शौचालयों, मूत्रालयों इत्यादि का निर्माण।
   - ✦ वातावरण को साफ रखने हेतु सड़कों ,गांव की गलियों, मलिन बस्तियों में नालियों का निर्माण व रख-रखाव करना।
   - ✦ ग्राम के कुँओं, तालाबों आदि की सफाई का कार्य करना।
     गोबर गैस संयत्रों की जानकारी प्रदान करना।
   - ✦ पर्यावरण को स्वच्छ करना एवं कूड़ा व खाद का निस्तारण करना।
   - ✦ भूमि के कटाव को रोकना एवं भू-संरक्षण के लिये कार्य करना।
   - ✦ पुरातत्व अवशेषों की मरम्मत व उनके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाना।

4. **महिलाओं की स्थिति में सुधार व चेतना जागृति हेतु कार्यक्रम :**
   - ✦ महिलाओं को शिक्षित करने के व्यापक कार्यक्रम संचालित करना।
   - ✦ महिलाओं को अपने संवैधानिक व कानूनी अधिकारों के प्रति सचेत करना।
   - ✦ महिला चेतना द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति में उनका योगदान सुनिश्चित करना।
   - ✦ महिला स्वयं सहायता समूहों की स्थापना हेतु उन्हें जागृत करना।
   - ✦ महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई-बुनाई और अन्य दस्तकारियों के सम्बन्ध में प्रशिक्षण प्रदान करना।

5. **शिक्षा एवं मनोरंजन सम्बन्धी कार्यक्रम :**
   - ✦ प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम संचालित करने में योगदान प्रदान करना।
   - ✦ आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिये शिक्षा की व्यवस्था करना।
   - ✦ समाज हेतु सम्मिलित सांस्कृतिक एवं मनोरंजक कार्यक्रम बनाना।
   - ✦ सामाजिक बुराईयों जैसे जातिवाद, क्षेत्रवाद,

Scanned by CamScanner

भ्रष्टाचार, छूआछूत एवं मद्यपान आदि के उन्मूलन के लिये विभिन्न नाट्य मंचनों द्वारा प्रयास करना।

- ग्रामीण युवा स्त्री एवं पुरुषों के लिये शैक्षिक कार्यक्रम बनाना।

6. उत्पादन अभिविन्यास कार्यक्रम :

- कृषि के उन्नत तरीकों से अवगत कराना व शिक्षित करना।
- भूमि के उपजाऊपन एवं भूमि परीक्षण के लिये जानकारी प्रदान करना।
- कृषि कार्य हेतु प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न औजारों के उपयोग व रख-रखाव हेतु जानकारी प्रदान करना।
- विभिन्न फसलों में कीट जनित रोग व उनके उपचार के बारे में जानकारी उपलब्ध कराना।
- कुक्कुट पालन, पशु चिकित्सा, पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल आदि में सहायता करना व मार्ग दर्शन करना।
- अन्न संरक्षण अभियान और अल्प बचत योजना को प्रभारी बनाना।
- सरकार द्वारा प्रदत्त विभिन्न कृषि एवं पशुधन विकास योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना।

7. आपात-काल के दौरान किये जाने वाले कार्यक्रम :

- स्वास्थ्य अधिकारियों को, टीके लगाने, रोकथाम के उपाय करने इत्यादि में सहायता प्रदान करना।
- प्राधिकारियों को राशन, दवाई, कपड़े आदि बाँटने में सहायता करना।
- कुँओं की सफाई, सड़कों का निर्माण, आवास आदि बनाने में सहायता करना।
- आपदा प्रभावित क्षेत्र से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाना।
- भोजन, कपड़े व अन्य आवश्यक सामान को एकत्र करना व आपदा प्रभावित क्षेत्रों में उसकी पूर्ति सुनिश्चित करना।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय सेवा योजना एक बिराट सर्वांगीण योजना है जिसका बहु आयामी स्वरूप है। राष्ट्रीय सेवा योजना के अनेक कार्यक्रमों में से किन्हीं भी विशिष्ट कार्यक्रमों को अंगीकृत करके छात्रों को समाज सेवा की ओर प्रेरित किया जा सकता है। जिससे छात्र व समाज दोनों ही लाभान्वित हो सकते हैं।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का शुभारम्भ सत्र 2007-08 में हुआ। तब से विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित एकदिवसीय शिविर व सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन होता है। सत्र 2011-12 में राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई के अन्तर्गत 104 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। राष्ट्रीय सेवा योजना के नियत कार्यक्रमों के अन्तर्गत चार एक दिवसीय शिविर ग्राम सभा बढ़ौली फतेह खाँ ने अलग-अलग तिथियों में आयोजित किये गये। सात दिवसीय विशेष शिविर 21.02.2012 से 27.02.2012 तक ग्राम सभा बढ़ौली फतेह खाँ में आयोजित किया गया। इस शिविर के दौरान बढ़ौली फतेह खाँ को गोद लिया गया। गोद लेने के बाद ईकाई के सभी सहभागियों ने इस ग्राम की साफ-सफाई, सम्पर्क मार्गों पर खरन्जा, नालियों की सफाई आदि कार्य किये। छात्राओं द्वारा पूरे गाँव में घर-घर जाकर परिवार नियोजन एवं विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में जानकारी प्रदान की। रात्रिकालीन विशेष शिविर में छात्रों द्वारा शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा व विभिन्न प्रकार की बीमारियों से सम्बन्धित नुक्कड़ सभा की गई। इस शिविर में 56 छात्र/छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। छात्र/छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रमों जैसे पल्स पोलियो, वृक्षारोपण आदि में अपनी पूर्ण सहभागिता प्रदान की गई। 25.02.2012 को जिलाधिकारी महोदय के आदेशानुसार ईकाई के छात्र/छात्राओं द्वारा मतदान करने के पक्ष में रैली का आयोजन किया। रैली में उपस्थित छात्र/ छात्राओं ने विभिन्न स्लोगन जैसे **''हर बुराईयों पर करें चोट, जरूर डाले वोट'', ''हम मतदाता, लोकतन्त्र के भाग्य विधाता''** बोलकर पूरे जोश के साथ मतदान करने का आवाह्न किया। विशेष शिविर का समापन डी. एस. कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर एवं राष्ट्रीय सेवा योजना ईकाई में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. जे. पी. सिंह जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। गत् तीन वर्षों से यूनिट का संचालन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बी. डी. उपाध्याय के निर्देशन में चल रहा था। सत्र 2012-13 से राष्ट्रीय सेवा योजना यूनिट के संचालन हेतु विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. अन्तिमा कुलश्रेष्ठ का अनुमोदन कार्यक्रम अधिकारी पद पर महाविद्यालय की संस्तुति पर किया गया। इस वर्ष तीन एक दिवसीय कैंप का आयोजन ग्राम सभा मडराक में किया गया तथा फरवरी के अन्तिम सप्ताह में सात दिवसीय विशेष शिविर ग्राम सभा मडराक में लगाना सुनिश्चित किया गया है

डॉ. बी. डी. उपाध्याय
कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना

Scanned by CamScanner

आगन्तुकों की कलम से

Comments

आज मेरे द्वारा D.I.E.T. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] Charts, Models [illegible] Practical / Project Work / [illegible] Political Prop. [illegible] Participant [illegible] Lesson Plan [illegible] Project work [illegible] किया गया।

[illegible] Staff [illegible] [illegible] शुभकामनाएं।

[signature] [illegible date]

Dr. Anjana [illegible] Principal, D.I.E.T. Aligarh

आज दिनांक [illegible] 13 को [illegible] में अतिथि व्याख्यान का अवसर मिला। महाविद्यालय परिसर बहुत सुन्दर है। यहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था व [illegible] [illegible] है। [illegible] और [illegible] [illegible] हैं। मैं इस महाविद्यालय की [illegible] उन्नति के लिये शुभकामनायें देती हूँ।

[signature] [illegible]/[illegible]/13

Dr. Chandra Kanti Agrawal, Head & Asso. Cate professor of Psychology Tika Ram Kanya (P.G.) College Aligarh.

My experience, here at Gyan Mahavidhyalaya is very good. I came here to deliver a lecture on 'Speaking English'. Not a [illegible] Students were very enthusiastic to learn the way to speak English. Teachers and other staff too cooperated a lot to make the lecture fruitful to the students. I wish for the bright future of the Institution and also its students.

[signature] 19/01/13

Dr. Neeta, Deptt of English, S.V. College Aligarh.

आज दिनांक [illegible] [illegible] [illegible] महाविद्यालय में [illegible] [illegible] [illegible] दिया। महाविद्यालय [illegible] [illegible] [illegible] यहाँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महाविद्यालय के प्राध्यापक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं।

[signature]

Dr. [illegible] [illegible], Deptt of Sociology, S.V. College Aligarh.

आज ज्ञान महाविद्यालय में आकर [illegible] यहाँ के विद्यार्थियों के [illegible], [illegible] के [illegible] [illegible], पठन-पाठन के [illegible] तथा महाविद्यालय के परिवार के [illegible] को देखकर [illegible] प्रसन्नता हुई [illegible] मुझे उम्मीद है कि यह महाविद्यालय भविष्य में प्रदेश के श्रेष्ठ महाविद्यालयों में गिना जायेगा।

[signature] [illegible]

डा० [illegible] सिंह, [illegible] [illegible] [illegible] अलीगढ़

Scanned by CamScanner

आगन्तुकों की कलम से

The college has progressed enormously since the time I used to be associated with various activities of this college. College infrastructure is developing positively.

(signature) 31.01.13

DR. PRABODH SRIVASTAVA
Dept. of Botany, D.S. College,
Aligarh (UP)

I found the school/college well disciplined and neat-clean. Greenary is very attractive here. I wish happy travels to all college administration and management. All the best.

(signature) 31/1/12

Virendra Singh Sachan
HOM City, Aligarh

Today, I visited this institution on 10-01-13 and found the all arrangements including cleanliness, warm welcome magnificent. I wish all success for this college in future. (signature)

Dr. S.K. Varshney faculty of Commerce
T.R. Govt college Atrauli (Aligarh)

Excellent hospitality and good infrastructure of the college and I hope this college will grow and provides excellent education to the students.

(signature)

Er. Ashok Kumar Chauhan
Assistant Professor
Deptt of Computer Science & Engg.
EETR BS College, Bichpuri Agra

I, today, delivered a guest lecture on 'Micro Teaching'. I found B.Ed students to be studious, inquisitive and disciplined. All the staff members are cooperative. The institution is having good infrastructure facilities. I wish all success.

(signature) 31.1.13

Dr. Rajiv Kumar, Asst. Prof.
Deptt. of Teacher Education,
S.V. College, Aligarh

Scanned by CamScanner

आगन्तुकों की कलम से

आज दिनांक 23 जन. 2013 को भौतिकी विभाग में Electronics devices and applications पर अतिथि व्याख्यान के अवसर मुझे कॉलेज को प्रगति पथ पर बढ़ते देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

Sd/-
23.01.2013

Dr S. K. Varshney (Retd. Prof.).
Physics, 2/347 Vishnupuri, Aligarh.

आज दिनांक 22-01-13 को भौतिकी विभाग में आयोजित व्याख्यान के अवसर पर आप महाविद्यालय पहुँचकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। महाविद्यालय का वातावरण शिक्षकगण व विद्यार्थियों के शिक्षा [illegible] हेतु [illegible] [illegible] है।

Sd/-
22.1.13

Dr Mritunjai Singh
(H.O.D. Commerce Deptt.)
Govt. P.G. College Khair Aligarh.

A much required topic of discussion is covered by the college. May the college scale new heights!

Gautam Goel
TU Delft, Delft, Netherlands

College Grand System & Staff is Too very very good.

Sd/-

Sudhir Singh (Ex. Panchayat Chairman)

This the best college among the self finance colleges I've seen. Physics lab is wellequipped and lecturers are very good.

DR. Meet Srivastava S.D. College Hathras

Scanned by CamScanner

अलीगढ़ • 9 नवम्बर 2012 दैनिक जागरण 7

ज्ञान महाविद्यालय में सजे थाल-रंगोली

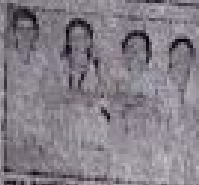

हिन्दुस्तान 02
अलीगढ़ • गुरुवार • 13 दिसम्बर 2012

कैंपस

छात्रों को संस्कार देने का संकल्प

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में ... कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ... के निदेशक डॉ. ... ने अभिभावकों का स्वागत करते हुए कहा कि शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों के परस्पर सहयोग से ही देश का सर्वांगीण विकास संभव है। उन्होंने छात्रों एवं शिक्षा के साथ-साथ संस्कार भी देने का संकल्प व्यक्त किया।

राजेन्द्र बने पुरातन छात्र समिति के अध्यक्ष

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में बुधवार को पुरातन छात्र समिति का चुनाव हुआ। अध्यक्ष पद के लिए राजेन्द्र सिंह को निर्विरोध चुना गया। ... इस मौके पर चुनाव अधिकारी डॉ. ... प्राचार्य ... कुमार, डॉ. ... रंजना सिंह, राजू ... मौजूद थे।

05 अलीगढ़ • सोमवार • 10 दिसम्बर 2012 हि

कैंपस

ज्ञान महाविद्यालय को ए ग्रेड का प्रमाण पत्र

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के शिक्षक शिक्षा विभाग को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद ने ए ग्रेड प्रमाण पत्र दिया है। प्रमाण पत्र यूजीसी के अध्यक्ष और नैक के निदेशक द्वारा प्रदान किया गया। कॉलेज के उप प्राचार्य डॉ. ... गुप्ता ने दीक्षांत समारोह में प्रमाण पत्र प्राप्त किया। प्राचार्य डॉ. ... कुमार गुप्ता ने बताया कि कॉलेज ने डा. भीमराव आम्बेडकर विवि से ... ग्रेड प्राप्त किया है।

हिन्दुस्तान 06
अलीगढ़ • शनिवार • 22 सितम्बर 2012

हिन्दुस्तान 06
अलीगढ़ • गुरुवार • 23 ... 2012

सोशल मीडिया का शिक्षण में उपयोग जरूरी है

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय द्वारा गुरुवार को ज्ञान भवन के सभागार में यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा की असिस्टेंट प्रोफेसर डा. ... ने सोशल मीडिया ... विषय के कई पहलुओं पर अपनी राय रखी। निदेशक डा. ... वार्ष्णेय ने अतिथि डा. ... का स्वागत किया व स्मृति चिह्न देकर आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर ... प्राचार्य डा. ... कुमार गुप्ता, उप-प्राचार्य डा. ... गुप्ता सहित सभी संकाय प्राध्यापक उपस्थित रहे।

अमर उजाला अलीगढ़ • बुधवार • 19 दिसंबर 2012

ज्ञान महाविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यक्रम

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय के तत्वावधान में ज्ञान भवन के सभागार में कला और विज्ञान संकाय के नवागत प्राध्यापकों का पांच दिवसीय शिक्षक अनुस्थापन कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य डॉ. ... कुमार गुप्ता ने किया। शिक्षा संकाय के विभागाध्यक्ष डॉ. ... सिंह ने शिक्षण कौशलों के बारे में विस्तार से प्राध्यापकों को जानकारी दी। कार्यशाला की संयोजिका ... ने विद्यार्थियों के ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए ... पद्धति को सर्वोत्तम बताया। इस अवसर पर डॉ. ... वार्ष्णेय, डॉ. ... कला एवं विज्ञान संकाय के प्राध्यापक उपस्थित रहे।

अमर उजाला अलीगढ़ • रविवार • 16 ... 2012

दीपक टिक्की कॉर्नर को 21 सौ रुपया दिए

अलीगढ़। ज्ञान महाविद्यालय में प्रगति मेले का उद्घाटन जिला ... अध्यक्ष ... चौधरी व ... सिटी ... ने किया। यहां छात्र-छात्राओं ने 26 स्टालें लगाईं। चिकित्सा शिविर में 152 व्यक्तियों का परीक्षण ... निःशुल्क दवाएं वितरित की। मेले में प्रथम-दीपक टिक्की कॉर्नर को 21 सौ रुपया, द्वितीय ... को 15 सौ रुपया और तृतीय ... को 11 सौ रुपया दिया गया। इस मौके पर डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. विवेक मिश्रा, डॉ. ... आदि थे।

हिन्दुस्तान अलीगढ़ • ... 2012 06

... शिक्षा के बारे में दी जानकारी

Scanned by CamScanner

कल्पतरु एक्सप्रेस

मथुरा, रविवार, 21 अक्टूबर 2012

मतदाता पहचान पत्र बनवाना सबका हक

अमर उजाला

मतदाता पंजीकरण केंद्र का उद्घाटन

दैनिक जागरण । 13

मैया का गुणगान किया

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में ...

अलीगढ़

शिक्षण सामग्री शिक्षा को बनाती प्रभावी

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय के ...

दैनिक जागरण । 7

ज्ञान महाविद्यालय में दीपावली मेला कल

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय की ओर से ...

---

07 हिन्दुस्तान

छात्रों को दी नैतिक मूल्यों की जानकारी

हिन्दुस्तान 06

लड़कियों को सिलाई मशीन भेंट की

---

8 । दैनिक जागरण

बीबीए बीसीए की टीम बनी विजेता

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय ...

---

2 । दैनिक जागरण

ज्ञान महाविद्यालय में खेल सप्ताह शुरू

अलीगढ़ : ज्ञान महाविद्यालय में ... 'खेल सप्ताह 2012' की शुरुआत हुई। ...

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की सूची

श्रीमती आशा देवी	अध्यक्षा
श्री अवि प्रकाश मित्तल	उपाध्यक्ष
श्री दीपक गोयल	सचिव
श्री असलूब अहमद	कोषाध्यक्ष
डॉ. मधु गर्ग	सदस्य
श्री अनिल खण्डेलवाल	सदस्य
श्री ब्रजेन्द्र मलिक	सदस्य
इ. इन्द्रेश कुमार कौशिक	सदस्य

Scanned by CamScanner

Ph.: 0571-2410811, Mob.: 9359838927
E-mail : gyanmv@gmail.com
Website : www.gyanmahavidhyalaya

मुद्रक : नवमान आफसैट प्रिन्टर्स – 09358251032

Scanned by CamScanner